॥ प्रस्तावना ॥

गाथा—नाणस्स सव्वस पगासणाय।
अन्नाण मोहस्स विवज्जणाय॥
रागस्स दोसस्स य संखणाय।
एगंत सोख्खं समुवेइ मोख्खं॥

श्री उत्तराध्ययन सूत्रम्.

ज्ञान सर्व स्थानमें प्रकाशका करने वाला है, अज्ञान और मोहरूप अन्धकारका नाश करने वाला है, रागद्वेषरूप रोगका विध्वंश करने वाला है, और एकांत अमिश्र अनुपम मोक्ष सुखका दाता है.

इसलिये सुखेच्छु प्राणियोंको अभिनव ज्ञानका पठन मनन और निदृध्यासन करनेकी बहुत ही आवश्यकता है. प्राचीन कालमें केवलज्ञानी तथा महा प्रज्ञा (बुद्धि) वंत सत्पुरुषों अनेक

थे, जिन्होंने अनेक सूत्रों जो कि गहन ज्ञान के सागर तुल्य थे, उन ग्रन्थोंकी रचना कर जगदुद्धारार्थ रखगये हैं; तदपि अर्वाचीन कालकी स्थिति बडी शोचनिय हो रही है, श्रेष्ट ज्ञानकी दिनोदिन हानि हो रही है, तत्वज्ञानमय कठिन विषयोंके समझनेवाले बहुत ही थोडे रहगये हैं; और एक मतके अनेक मत और बाडे हो गये हैं.

जगत्की ऐसी स्थिति देख तत्वप्रेमी दयासिन्धू महान पुरुषोंने सद्ज्ञानका प्रचार करने के आशयसे प्राचीन सत्य शास्त्रोंका पुनरुद्धार किया, और उनके गहन अर्थोंको देशी भाषामें सरल बनाये; और संगितके रागियोंके लिये काव्य रूपमें सत्शास्त्रानुसार शान्त वैराग्यादि रससे भरपुर चरित्र, स्तवन, सज्झाय, छन्द, लावणी, सवैया, गजल इत्यादि बनाये. ऐसे उत्तम स्तवना-

दिको पढना, श्रवण करना और दूसरोंको पढाना, यह उत्तम जनोंका कर्त्तव्य है. इसलिये चंद स्तवन वेगेरा जोकि कविवर मुनि श्री हीरालालजी महाराजके बनाये हुवेथे, उनको संग्रह कर शुद्ध करके भव्य जीवोंके हितार्थ पठन करने योग्य जाण प्रथम ' श्री जैन सुबोध हीरावली ' नामक ग्रंथकी १००० प्रति छपवाकर श्री संघको अमूल्य अर्पण कीथी. जोकि सर्व प्रिय होनेसे थोडीही दिनोंमें सब वितिर्ण (खर्च) हो गई.

उसी अपेक्षासे यह ' श्री जैन सुबोध रत्नावली ' नामक ग्रंथ कविवर मुनि श्री हीरालालजी महाराज रचितको शुद्ध करके १००० प्रति श्री संघकी सेवामें भेट करके कृतार्थ होते हैं.

चार कमान
मु॰ हैद्राबाद (दक्षिण)
कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा.

श्री संघके सेवक.
पन्नालाल जमनालाल
रामलाल किमती.

॥ ग्रंथकर्ताका संक्षिप्त जीवन चरित्र ॥

मालवादेशके इन्दौर स्टेटके रामपुरे जिल्ला-में 'कंजरडा' नामक ग्राममें औसवाल ज्ञाति के सेठ 'रत्नचंद्रजी' रहते थे, जिनकी सुपत्नी 'राजांबाई' के संवत् १९०३ में जवाहरला-लजी, संवत् १९०९ में हीरालालजी, और संवत् १९१२ में नंदलालजी, यों तीन पुत्रोंकी प्राप्ती हुई. वहां रत्नचन्द्रजीके साले देवीलालजी भी रहतेथे. उसवक्त श्री साधूमार्गी जैन धर्म-के प्रकाशक परमपूज्य मुनिराज गच्छाधिपति श्री हुकमीचन्द्रजी महाराजके सम्प्रदायके मुनि-वर श्री राजमलजी महाराज कंजरडा ग्राममें
रे और सद्बोध अमृत रससे भव्य जीवोंको
करने लगे. मुनिराजश्रीका बोध सेठ रत्न-

चन्द्रजीको प्रबल असरकारक हुवा, और तूर्त पत्नी पुत्र परिवारकी आज्ञा संपादन कर संवत् १९१४ के ज्येष्ट शुक्ल पंचमीको अपने साले देवीलालजीके साथ दिक्षा अंगिकार की. गुरुभक्ति कर ज्ञानके प्रेमी बने, और शांत दांत क्षांत शुद्धाचारी होकर जिनशासनको प्रदिप्त करने लगे. ग्रामानुग्राम उग्र विहार करते हुवे संसारी कुटुम्ब उद्धारार्थ, संवत् १९२० में पुनः कंजरडा ग्राममें पधारे और सदुपदेशसे पत्नी और तीनही पुत्रों को वैरागी बनाये. प्रथम राजांबाईने आज्ञा देतीनों पुत्रोंको सहर्ष दिक्षा दिलाई, और फिर आपने भी महासतीजी श्री रंगूजीके पास दिक्षा धारन की. फिर ये सब गुरु और गुरुणजीकी भक्ति करते हुवे यथाशक्ति ज्ञान संपादन करते हुवे विशुद्ध तप संयमसे अपनी आत्मा

भावते हुवे विचरने लगे. श्री राजांजी महासती सं० १९४८ में रामपुरे ग्राममें ११ दिनका संथारा कर स्वर्ग पधारे. और श्री रत्नचंद्रजी महाराज सं. १९५० के अषाड मासमें जावरामें स्वर्ग पधारे. और तीनों मुनिराज विद्यमान हैं.

१. श्री जवाहरलालजी महाराज ज्ञानानन्दमें तल्लीन हो आत्मध्यानमें आत्माको भावते हुवे विचरते हैं. २ श्री हीरालालजी महाराज कवित्वशक्ति प्रगटनेसे अनेक चरित्र और स्तवन सज्झाय सवैया लावणी वगेरः रचते हैं. और ३ श्री नन्दलालजी महाराज स्याद्वाद शैलि युक्त चर्चा कर जैन शासन दिपाते हैं.

मुनिगुणानुरागी

पन्नालाल जमनालाल रामलाल कीमती.

श्री जैन सुबोध रत्नावलीकी अनुक्रमणिका.

॥ चरित्रावली ॥

॥ हरिवंश चरित्रावली ॥

॥ राम चरित्र ॥

ॐ सर्वज्ञाय नमः

कविवरेन्द्र मुनीराज श्रीहीरालालजी

महाराज रचित.

"श्री जैन सुबोध रत्नावली."

मङ्गला चरणम्.

आरती.

जय जय जिनवाणी प्रभू;
जय जय जिनवाणी;
संकट हरणं, सम्पति करणं;
भवोदद्धी तिरणं भगवानी ॥ जय ॥आं०॥
वलरुप अनंतं, सब जग महंतं;
करतुस्वं विश्वासं ॥ प्र० कर० ॥
मन इच्छा पूर्णा, विपाति हरणं;
तारण तिरणं असमाकं. ॥ जय ॥ १ ॥

जरणी उरधारं, जग यशकारं;
तिउलोक तारं गुरूज्ञानी ॥ प्र० ति० ॥
अमरपतिराया, सब मिल आया;
हर्ष उमाया अघानी. ॥ जय ॥ २ ॥
प्रभू मेरु शिखरं, भरभर नीरं;
धररर धररर जलधारं ॥ प्र० धर ॥
अति कळश सुचंगं, निर्मळ गंगं;
भभभभ भभभभ भभकारं ॥ जय ॥ ३ ॥
दुंधवीनादं, घोर अगाधं;
सादं सजते अति भारं ॥ प्र० सादं० ॥
गाजत अंम्बर, अति आडम्बर;
झणणण झणणण झणकारं ॥ जय ॥४॥
देवी देवा, हर्ष उमेवा;
हडडड हडडड हिंसारं ॥ प्र० हड० ॥
रुप वेक्रयतं, हयगय हरितं;

घणणण घणणण घणकारं. ॥ जय ॥ ५ ॥
गज रथ तुरंगा सजी सुरंगा;
अति उमंगा भोपालं ॥ प्र० अति० ॥
सन्मुख आवे, शीस नमावे;
गुण गावे अति उज्वालं ॥ जय ॥ ६ ॥
सदा सुरंगं, उडुपति खंगं,
जीते जंगं वरदानी ॥ प्रभू० जीते० ॥
वपु 'हीरालालं,' करो प्रतिपालं,
दयालं मम हित आनी ॥ जय ॥ ७ ॥

॥ श्री शांतीनाथजीकी लावणी ॥

श्री शांतिनाथ महाराज अर्ज सुणो मेरी ।
तुम शांती करण जिनराज सरण आयो तेरी ॥आं०॥
यह स्वार्थ सिद्ध विमाण से चवकर आया ।
हस्तीनापुर नगरमें जन्म लियो जिनराया ।

तिहां छप्पन कुंवारी मिलकर मङ्गल गाया ।
प्रभूका मेरुपर मौछब किया सुर धाया ।
बाजे ताल मृदंग अतिचंग, दुंधवी भेरी ॥तुम॥१॥
जब शांती हुइ सब देशका रोग मिटाया ।
तब नाम प्रभूजीका शांती कुंवर धराया ।
हुवा षट खन्ड नायक चक्रवर्त पद पाया ।
दिया वर्षीदान फिर संयम लेना चित चहाया ।
जब हुवा कैवल प्रकाश जीत लिये वैरी ॥तुम॥२॥
मैंने लिवी आपकी ओट चरणकी छाया ।
तुम जग तारण जिनराज तजी जग माया ।
यह अष्ट कर्मके बिकट कोटको ढाया ।
तुम लिया मोक्षका मेहेल हुवा मन चहाया ।
जहां सुख सागरकी लेहर अनन्ती हैरी ॥तुम॥३॥
श्री जवाहर लालजी महाराज हुकम फरमाया ।
कुक्कडेश्वर ठाणा तीन चौमासा ठाया ।

सुत्रकी वाणी सुणकर जोर लगाया ।
करी पचरंगी प्रमुख तपश्या भाया ।
कहे 'हीरालाल' दया धर्म मोक्षकी सेरी ॥तुम॥४॥

॥ श्री महावीर श्वामीका स्तवन ॥ महाड राग ॥

सुरांगना गावे मङ्गलाचार, दैवांगना गावे
मङ्गलाचार ॥ आं ॥

उर्ध अधोगति थकीरे । तिर्थंकर पद पाय ॥
जननी स्वप्न देखिया कांइ । दिग वेण दोनों
मिलाय ॥ सु ॥ १ ॥

छप्पन कुंवारी सब सिणगारी । गावे मिल२ गीत ॥
रति करे आप आपणी कांइ । पूर्ण प्रभुकी
प्रीति ॥ सु ॥ २ ॥

इन्द्र इन्द्राणी आवियारे । नर नार्यांका वृंद ॥
जन्म भवने जिनराजको । और जननी को-
नमत आनन्द ॥ सु ॥ ३ ॥

पंचरुप पुरन्दर कियारे । लिया माधवजी हाथ ॥
मेरु गिरीपर आविया कांइ । इन्द्राण्याके साथ ॥ सु ४॥
पंडंग वनमें पधारियाजी । सब देवां के संग ॥
स्नान विधी सघली करी कांइ । भर२ कलश
सुरंग ॥ सु ॥ ५ ॥
नाटक गात बाजिंत्र बजाया । पाया हर्ष अपार ॥
माता पासे मेलिया कांइ । भरिया धन भंडार॥सु६॥
सहश्र अष्ट लक्षण धणीरे । सुन्दर सघलो अंग ॥
ऐसा पुत्र दूजा नहीं जी कांइ । गगन गति
पतंग ॥ सु ॥ ७ ॥
रुप अनंत बल जानियेजी, निरामय निरलेप ॥
पद्म कमल परमल छबी कांइ, श्वासोश्वास सुखेप।सु.८
जगतारण जिन राजियाजी, तीर्थपति प्रमाण ॥
हीरालाल हर्ष भावस्यूंजी, गायो जन्म कल्याण । सु.९

॥ श्रीनेमी नाथजीका स्तवन ॥ नागजीकी देशीमें ॥

नेमजी, यादव वंशमें ऊपनाहो प्रभू।
सूर्य सरीखा दीपता हो नेमजी ॥ १ ॥
नेमजी, समुद्रविजय राजा भलाजी कांइ ।
शिवादेवी सुत मलपता हो नेमजी ॥ २ ॥
नेमजी, रमतडी रमता थकाजी प्रभू।
आयुद्ध शाळामें आविया हो नेमजी ॥ ३ ॥
नेमजी, धनुष्य चडाइ शंख पूरियो प्रभू ।
श्रीपत सुण घबराविया हो नेमजी ॥ ४ ॥
नेमजी, अतुल्य बली अवलोकने कांइ ।
हरीने हर्ष आयो घणो हो नेमजी ॥ ५ ॥
नेमजी, उग्रसेनकी डीकरीजी कांइ ।
राजुलरूप सुहामणो हो नेमजी ॥ ६ ॥
नेमजी, व्याव रच्यो रंग छांटियोजी कांइ ।

मङ्गल गीत जो गाइया हो नेमजी ॥ ७ ॥
नेमजी, हाथी होदे शिर सेवरोजी कांइ ।
गोखे गोरडी जोवे छाइया हो नेमजी ॥ ८ ॥
नेमजी, हरी हलधर आगे हुवाजी कांइ ।
यादव वंशका नृपती हो नेमजी ॥ ९ ॥
नेमजी, तोरणिये वर आवियाजी कांइ ।
इन्द्र आया जोया जगपति हो नेमजी ॥ १० ॥
नेमजी, पशूवांको बाडो भर्योजी कांइ ।
दया आई दीनानाथने हो नेमजी ॥ ११ ॥
नेमजी, रथ फेरी पाछा वल्याजी कांइ ।
वर्षीदान दियो सब साथने हो नेमजी ॥ १२ ॥
नेमजी, सहश्र जणांका साथस्यूंजी कांइ ।
संयम लेइ गिरीवर चढ्या हो नेमजी ॥ १३ ॥
नेमजी, विनतडी राजुल करेजी कांइ ।
नव भव नेह किम परहर्या हो नेमजी ॥ १४ ॥

नेमजी, सङ्ग नहीं छोडां तुमतणो प्रभू ।
नाथ हमारा हिवडे वसोहो नेमजी ॥ १५ ॥
नेमजी, संयम लेइ गिरीवर चडी राजुल ।
सातसो परिवारस्यूं हो नेमजी ॥ १६ ॥
नेमजी, वर्षा हुइ चीर भींजियाजी कांइ ।
गिरी गुफामें आविया हो नेमजी ॥ १७ ॥
नेमजी, वस्त्र सुखावा अलगा कियाजी कांइ ।
दामनी जिम चमकाविया हो नेमजी ॥ १८ ॥
नेमजी, रहनेमी चित डोलियोजी कांइ ।
देवरने समझाविया हो नेमजी ॥ १९ ॥
नेमजी, केवल लेइ मुक्ते गयाजी कांइ ।
'हीरालाल' गुण गाविया हो नेमजी ॥ २० ॥
नेमजी, उन्नीसो पेंसट विपेजी कांइ ।
गढ चितोडे सुख पाविया हो नेमजी ॥ २१ ॥

॥ श्री नेमीनाथजीका स्तवन ॥

॥ इण सरवरियारी पाल ॥ यह देशी ॥

समुद्रविजयजीका सुत ।
आणंदकारी घणाजी ॥ महाराज ॥
शिवादेवीजी गाया गीत ।
नेम कुंवर तणांजी ॥ महाराज ॥ १ ॥
सब जादव के संग ।
रंग वागे आवियाजी ॥ महाराज ॥
नेम कुंवरजीका लाड ।
हिंडोले हींचावियाजी ॥ महाराज ॥ २ ॥
रेशमी बांधी डोर ।
सोनाकी शांकल करीजी ॥ महाराज ॥
रत्न पालणिये पोढाय ।
हींचोला दे हिरी फिरीजी ॥ महाराज ॥३॥
इन्द्र परसंस्या सभा मांय ।

मिथ्यात्वी माने नहींजी ॥ महाराज ॥
बल जोवा जिनराज ।
स्वर्गसे आया वहीजी ॥ महाराज ॥ ४ ॥
लिया नेम कुंवार ।
आकाशमें चालियाजी ॥ महाराज ॥
प्रभू जोयो अवधि ज्ञान ।
वैरीने पाछा वालियाजी ॥ महाराज ॥५॥
दाब्या अंगुठाका हेठ ।
अमर अति आरडेजी ॥ महाराज ॥
सुरपति आया दौड ।
छोड पांवा पडेजी ॥ महाराज ॥ ६ ॥
जोयो वलि जिनराज ।
आज सुरासुर मिलीजी ॥ महाराज ॥
पाछा पालणिये पोढाय ।
आया अमरापुरीजी ॥ महाराज ॥ ७ ॥

प्रभू रमता रामत कोड ।
जोड जादव तणीजी ॥ महाराज ॥
सुरनर रह्या देख ।
रामत आश्चर्य घणीजी ॥ महाराज ॥ ८

इम झुले नेमकुंवार ।
अति घणा आगमेंजी ॥ महाराज ॥
इम गावे 'हीरालाल' ।
श्रावण सुदी मासमेंजी ॥ महाराज ॥ ९ ॥

॥ श्री महावीर स्तवन ॥ राग—बरवो ॥

श्री जिनराजको ध्यान लगावे ।
जिणघर आनन्द रंग बधावे ॥ आं. ॥
सिद्धार्थ रायके नंद निरोपम ।
राणी त्रसलादेवी कूंखे आवे ॥
चेत सुदी तेरसकी रजनी ।

जन्म लियो प्रभू सब सुख पावे ॥ श्री ॥ १ ॥
कंचन वरण शरीर विराजे ।
केहर लंछन चरण कहवावे ॥
दीसे देही सप्त हस्त प्रमाणे ।
दिनकर तेज जिम दीपावे ॥ श्री ॥ २ ॥
रत्न सिंहासण उपर विराजे ।
छाजे छत्र चमर ढुलावे ॥
मनमोहन भामंडल भासत ।
चतुरानन प्रभू दर्श दिखावे ॥ श्री ॥ ३ ॥
नर तिर्यंच सुरासुर केइ ।
कोडाकोडी गिणती न आवे ॥
प्रभूमुख जोवे तृप्त न होवे ।
हर्ष २ हियो उमंगावे ॥ श्री ॥ ४ ॥
चरम जिनेश्वर चर्ण युगलको ।
नमतां नवनिध पाप पलावे ॥

कहे ' हीरालाल ' दयाल प्रभूको ।
जन्म मरण दुःख वेग मिटावे ॥ श्री ॥ ५ ॥

॥ श्री ऋषभदेवजीके आगमकी वधाइका स्तवन॥
आज अजोध्या नगरीके मांही ।
हर्ष भये सब लोग लुगाइ ॥ आं. ॥
माता मरुदेवी अति सुख पाइ ।
भरत नरेश्वर देत वधाइ ॥
कर असवारी वंदण काज़े ।
आवत चरणोंमें शीस नमाइ ॥ आ ॥ १ ॥
वस्त्र विलेपन कुंकुम केशर ।
पहरिया भूषण जोर सजाइ ॥
कर २ मंडण वंदन काजे ।
निरखत नयनोंमें रहे रे लोभाइ ॥ आ ॥ २ ॥
सुरनर केइ विद्याधर आये ।
नाचत नाटक रुप बनाइ ॥

घन जिम गाजे अम्बर राजे ।
प्रभूमुख वाणी रही छवि छाइ ॥ आ ॥ ३ ॥
प्रथम जिनेश्वर आनन्दकारी ।
मङ्गल वरते सब दिन ताइ ॥
कहे 'हीरालाल' आप विराजा ।
माताने मुक्तीमे दिया पहोंचाइ ॥ आ ॥ ४ ॥

॥ श्री जिनवाणी स्तवन । राग–वसंत–होली॥
चली आती है, हां रे चली आती है ।
वाणी जिनवर गंङ्गा ॥ आं ॥
प्रभू मुखसागर वहे अति निर्मळ ।
गणधर गुणग्रह ऊमङ्गा ॥ च ॥ १ ॥
द्वादश अङ्गी चङ्गी सरिता ।
वितर्क अनेक भर्या तरङ्गा ॥ च ॥ २ ॥
या जिन वाणी दुःख दाह मिटाणी ।

करत कलोल भव्य विहङ्गा ॥ च ॥ ३ ॥
घौर गुंजारव शब्द कर गूंजे ।
मृदु वाक्य अति ऊतङ्गा ॥ च ॥ ४ ॥
कहे 'हीरालाल' सब शास्त्र प्रमाणिक ।
जामें जीवदयारस मतङ्गा ॥ च ॥ ५ ॥

॥ श्री महावीर स्वामीका मंगल स्तवन ॥
॥ लावणीकी चालमें ॥

श्री महावीर बलवंत अनंता । कर्म शत्रूको दूर हरे ॥
वृद्धमान वृद्धीके कारण । ऋद्धि वृद्धि भंडार भरे ॥
अमरपति नरपति खगपति । सेवा करे जिनवर चरणं ॥
जयजिनेन्द्रंजयजिनेन्द्रं । तुमशरणंहमसुखकरणं ॥ १ ॥
चौसट इन्द्र और इन्द्राण्यां । मिल२कर मङ्गल गावे ॥
फूलोंकी बर्षा होवेशुशरखा । देखअरिदल मुरजावे ॥
जिनवाणीकोसुणेसुणावे । सुखसागरलीलावरणेजय२

अर्ज करुं जिनराज आपसे। तुम रक्षाके करनेवाले॥
सेवे सुरिंदा तेज दिणंदा । दीपे जिणंदा प्रतिपाले॥
अक्षय पुण्य कमाया दमकती काया॥ कंचन वरणं-
देह धरणं ॥ जय ॥ ३ ॥

रवि चन्द्रमा सभी जोतषी । भरा रहे समुद्र पानी ॥
भूमण्डलअचलजिममेरु।तबलगरहोयह जिनवाणी॥
सदा रहोगुलजार गिरामी।भव२पातकके हरणं।जय४

सदा देव गुरु धर्म आपकी।बनी रहो यह गुल क्यारी॥
श्री रतनचन्दजी महाराज राजके ।जवाहरलालजी-
यशधारी ॥
संवत उन्नीसो पैंसट वर्षे । हीरालाल कहे तारण-
तिरणं ॥ जय ॥ ५ ॥

॥ स्तवन श्रीवीर प्रभूके दर्शनका उत्साह ॥

॥ हरी आजो मंदरिये रंग मानवाने ॥ यह देशी ॥

आलो आलोरे दर्शन वाहला वीरनोरे ॥ आं० ॥

तारूं तरण भवजल तारनोरे ॥ आलो ॥ १ ॥
दर्शन दीठा से हर्षे है हीवडोरे ।
प्रभू वासे सुगन्धी जिम केवडोरे ॥ आलो ॥ २ ॥
अशुभ कर्मोंको दल दूरो टलेरे ।
वीर प्रभूको दर्शन जो मिलेरे ॥ आलो ॥ ३ ॥
हमने होंस घणी छे मिलवा तणीरे ।
सेवा चरणकमलकी करवा भणीरे॥ आलो ॥ ४ ॥
मूर्ख मित्रोंथे भर्ममें क्यों पडोरे ।
गृहो वीर प्रभूनो आसरोरे ॥ आलो ॥ ५ ॥
भाग्य उदय थवाथी प्रभू पामियांरे ।
सफल दहाडो आज ऊगियोरे ॥ आलो ॥ ६ ॥
हीरालाल प्रभूको मुख जोइयोरे ।
जाणे चन्द्र चकोर मन मोहियोरे ॥ आलो ॥ ७ ॥

॥ नवकारमंत्र स्तवन॥रावणको समझावे राणीदे०

करो नवकार मंत्रका जाप ।
कटत है जन्म २ का पाप ॥ आं० ॥
सवही शास्त्रके दरम्यान ।
किया नवकारमंत्र वयान ॥
समझलो यही ज्ञान ओर ध्यान ।
भजन विन नर है पशू समान ॥

दोहा—पंचपद परमेश्वरो । वर्ण पेंतीस प्रमाण ॥
अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय । साधू-
वतावे ज्ञान ॥

मि०—रखो सव दिल अपना तुम साफ ॥ कटत ।१।
अग्नी होवे जल समान ।
भूत नहीं लागे जहां स्मशान ॥
रणमें वचावे अपने प्रान ।
जहर सो होवे अमृत पान ॥

दोहा—अमर कुंवर अग्निमें।डालत गिण्यो नवकार॥
हुवा सिंहासण छत्र शिरपर।देख रह्या नरनार॥
मि०—किया फेर गुन्हा सभीका माफ॥ कटत है॥२॥
सेठ सुदर्शन था सीलवान ।
राणीने करी कपटकी खान ॥
सेठपर डाली जाल दरो गान ।
राजको भरमाया भर्म म्यान ॥
दोहा—सूली चढावो सेठको। हुकम दियो राजान॥
हुवा सिंहासण उसीवक्तमें।धर्यो मंत्रको ध्यान॥
मिलत—दुशमनका हुवा काम विलाप॥कटत है॥३॥
बचाया शिवकुंवरका प्रान ।
चोरको सेठ बताया ज्ञान ॥
धरा नवकार मंत्रका ध्यान ।
जटाउ पक्षी पाया देवस्थान ॥
दोहा—या विधि केइ जीवके।संकट सब दिये मेट॥

अहो विरादर तुम क्यों भूले । क्यों करते हो वेट ॥
मिलत—समजलो इसेहीमां और बाप॥ कटत है॥४॥
चले नहींकोईकियातोफान।टलेसवग्रहगोचरमशान॥
सवहीविद्यामंत्रदत्तदान । करोनवकारमंत्रकी ध्यान ॥
दोहा—योही मंत्र त्रिकाल संध्या॥होत मनोरथ सिद्ध॥
हीरालाल नवकार मंत्रसे । पावोगा वहु रिद्ध ॥
मिलत—सुणायो ज्ञान गुरुजी आप ॥ कटत है॥५॥

॥ गुरू गुण स्तवन ॥ राग—महाड ॥

हो गुरुदेव तुम्हारी मूरत प्यारी ।
मोहनगारी लागे छेजी राज ॥ आं० ॥
पंच महाव्रत निर्मळ किरिया ।
धरिया उज्वल ध्यान ॥
सागर जैसा गम्भीर गुणाकर ।
जाणे सकल जहान ॥ हो गुरु ॥ १ ॥

ज्ञान गुणाकी संपती दाता ।
तीन लोक दरम्यान ॥
भवोदधि तारण पार उतारण ।
ज्ञान प्रकाशक भार ॥ हो गुरु ॥ २ ॥
चन्द्र तणी परे शीतल सोहे ।
अदित्य तेज प्रकाश ॥
विनयवंत विवेकी विचक्षण ।
पूरो मनकी आश ॥ हो गुरु ॥ ३ ॥
रत्नचन्दजी महाराजके गणमें ।
जेष्ट शिष्य अभिराम ॥
जवाहर लालजीकी यशः कीर्ती ।
फेल रही ठामो ठाम ॥ हो गुरु ॥ ४ ॥
गुण गावो गुणवंतको देखी ।
परिक्षा हियामें आण ॥
नुगुरा नरका गुण किम गावे ।

क्यों होवो जाण अजाण ॥ हो गुरु ॥ ५ ॥
जैनमार्ग दीपक ज्यों देखायो ।
यो मोटो उपकार ॥
हीरालाल नन्दलालको तार्या ।
यो मोटो उपकार ॥ हो गुरु ॥ ६ ॥

॥ श्री जिनराजसे विनंती स्तवन ॥

॥ गजल-कव्वाली ॥

विना जिनराजकी भक्ती । कभी नही मोक्ष पावेगा॥
दयालु दीनके बन्धव । वही जो प्राण बचावेगा।आं.।
जिनन्दकी सूरती प्यारी । खुली गुलशनकी क्यारी।
प्रीति यह लगी है हमारी । प्रभुसे लक्ष लगावेगा ॥
विना ॥ १ ॥
तुमारे कदमकी छांया । शरणमें आपके आया ॥

विनंती करूं मैं तुमसे । देना जो हमको चावेगा ॥
बिना ॥ २ ॥

हमारे दिलकी आसा । पूरो जिनराज हो खासा ॥
हुजूरी हुक्म फरमाया । शास्त्र जो यह बतावेगा ॥
॥ बिना ॥ ३ ॥

असर सोहवतकी आवे । तुख्म तासीर नहीं जावे ॥
जिन्होंकी जैसी है रीती । वही गुणकर बतावेगा ॥
॥ बिना ॥ ४ ॥

केइ भजे शिव गोपाला.। जिन्होंके गले रुंड माला ॥
विना एक भक्ति जो तेरी । और नहीं पार उतारेगा॥
॥ बिना ॥ ५ ॥

जगतका देव है दूजा । करे पाखन्डकी पूजा ॥
भूले केइ भर्ममें भोले । पारवो कैसे पावेगा ॥
॥ बिना ॥ ६ ॥

हीरालाल आपकी आसा । रखे हरदम खुलासा ॥

दुख्या दुःख मिटावो । जभी आनन्द आवेगा ॥
॥ बिना ॥ ७ ॥

॥ श्रीजिनवाणी स्तवन ॥ अणी भोलुने कुण-
भरमावियो ॥ यह देशी ॥

देवी जिनन्द वाणी सुख कारणीरे ।
मनोवांछित पूरे हाम ॥ देवी० ॥ आं० ॥
अणी देवीनो दर्शन दोहिलो रे ।
पूर्व सञ्चित होवे पुण्य ॥ देवी ॥ १ ॥
देवी सर्व भूषण कर सोहती रे ।
जिम थावे सूर्य प्रकाश ॥ देवी ॥ २ ॥
देवीने मस्तक मुगट विवेकनोरे ।
कंठ पहर्यो ब्रह्म नवसरहार ॥ देवी ॥ ३ ॥
देवी हाथे खड्ग लियो ज्ञानको रे ।
वसु वैरी हणत त्रिकाल ॥ देवी ॥ ४ ॥

देवी सर्व जीवांने सुख कारणीरे ।
अम्मा गोद रमावे जिम बाल ॥ देवी ॥ ५ ॥
केई जक्तमें बाजे अम्बा चण्डिकारे ।
तेहना मन्डपे थावे जीव घात ॥ देवी ॥ ६ ॥
पोते रुद्राणी तिरती नथी रे ।
केम परने ते तारणहार ॥ देवी ॥ ७ ॥
जिनवाणी अहोनिश ध्यावा अमो रे ।
नवी जातो दहाडो जोके जेम ॥ देवी ॥ ८ ॥
देवीनी बधा माणस सेवा सांचवे रे ।
तुम आलोनी सर्वत्र भोग ॥ देवी ॥ ९ ॥
देवी वरदायां से बर आपिये रे ।
आतो परिचय पूर्ण हम मांय ॥ देवी ॥ १० ॥
देवी हर्ष धरीने हीरालालने रे ।
आपो आत्मसुख शुभ जोग ॥ देवी ॥ ११ ॥

॥ साधू गुण स्तवन ॥ राग—वसंत—होरी ॥

साधु आयारे भविक जीव तारनको ।
गुरु आयारे भ० ॥ आं० ॥
ज्ञान सुनावे धर्म बतावे ।
क्रोध लोभ परिहारनको ॥ साधु ॥ १ ॥
जन्म मरणका जो फंद मिटावे ।
दुर्गति दूर निवारणको ॥ साधु ॥ २ ॥
षट कायाका जो प्राण बचावे ।
रागद्वेष दोइ हारनको ॥ साधु ॥ ३ ॥
पंच इन्द्रीको दमन करावे ।
मान अहंकार मद गारनको ॥ साधु ॥ ४ ॥
करी तन तपस्या जोर लगावे ।
अष्ट कर्मरिपु मारनको ॥ साधु ॥ ५ ॥
स्वर्ग गतिका जो सुख मिलावे ।
दयामार्ग दिल धारनको ॥ साधु ॥ ६ ॥

कहे हीरालाल ऐसा संतजो आवे ।
भवोदधी पार उतारनको ॥ साधु ॥ ७ ॥

॥ गुरू उपकार स्तवन । हरी आजोमंदरिये
रंग मानवाने ॥ यह देशी. ॥

ज्ञान आपीने कीधो गुरु निर्मलोरे ।
तेहथी थासे आगोतरमें भलोरे ॥ आं० ॥
अनुग्रह करीने तुम तारवारे ।
जेहनो जोग मिलवो अति दोहिलोरे ॥ज्ञा॥१॥
एहने सिंह सरीखो जाण्यो शूरमोरे ।
कायर थवाथी जाण्यो जेहवो मृगलोरे ॥ज्ञा॥२॥
जाण्यो गज सरीखो समर्थयोरे ।
भार वहवाथी जाण्यो गधो दूबलोरे ॥ज्ञा॥३॥
कोकिल सरीखी वाणी जाणी मीठडीरे ।
जाणे बोल्यो छे जेम कालो कागलोरे ॥ज्ञा॥४॥

एहने अंब जाणीने जल सींचियोरे ।
मोटो थावाथी जाण्यो कडवो नीमडोरे ॥ज्ञा॥५॥
एहने दूध सरीखो जाण्यो ऊजलोरे ।
पाछो जोवाथी जाण्यो जिम कागलोरे ॥ज्ञा॥६॥
जाण्यां हंस सरीखी गती चालसेरे ।
ध्यान धरवाथी जाण्यो जेहवो बगलोरे ॥ज्ञा॥७॥
सुगुरु जाणीने शिष्य मुंडावियो रे ।
हीरालाल कहे हे छिवडां देखलोरे ॥ज्ञा॥८॥

॥ विहार करते मुनीराजसे विनंती स्तवन ॥

॥ चेतन चेतोरे ॥ यह देशी ॥

वेगा आजोजी२ महाराज मुनीश्वर ।
दरशन दीजोजी ॥ वेगा० ॥ आं० ॥
विहार करंता वाहला लागो ।
कृपा वेगी कीजोजी ॥

हाथ जोड हुं करुं विनंती ।
ते मान लीजोजी ॥ बेगा ॥ १ ॥
गाम नगरपुर पाटण जामे ।
सुखसे विहार करीजोजी ॥
वारंवार हुं अर्ज गुजारूं ।
भूल मति जाजोजी ॥ बेगा ॥ २ ॥
चन्द्र चकोर तणीपर निशदिन ।
सुरतडी दरशीजोजी ॥
धन्य भाग धन्य घडी आपका ।
चरण स्पर्शीजोजी ॥ बेगा ॥ ३ ॥
दरशन करतां कोटि भवांका ।
पातक दूर करीजोजी ॥
पाछा फिरतां मन नहीं माने ।
किम पग भरीजोजी ॥ बेगा ॥ ४ ॥
श्रावक श्राविका करे वंदणा ।

लुल २ पांय पडीजोजी ॥
दरशन थांरा लागे प्यारा ।
भोग जोग मिलीजोजी ॥ वेगा ॥ ५ ॥
हीरालाल कहे गुरु दरशनको ।
हरदम ध्यान धरीजोजी ॥
मन वच काया भक्त रचाया ।
संसार तरीजोजी ॥ वेगा ॥ ६ ॥

॥ श्री जिनवाणी सुननेकी उत्सुकता ॥
॥ वेदक विरलाहो ॥ यह देशी ॥

जय जिनवाणी बोध जगानी ।
गुणरूप अनंत वखाणी रे ॥
जय २ हो जिनवाणी ॥ आं०॥ १ ॥
ऋषभादिक जिन वंदू चोंवीसी ।
महा विदेहमें वंदू वीसी रे ॥ जय ॥ २ ॥

हर्ष उमावो हिये अति गाढो ।
जाणे परणवा आयो लाडोरे ॥ जय ॥ ३ ॥
पियु जे नारीनो रहे परदेशे ।
ते तो वाट जोवे तिण देशेरे ॥ जय ॥ ४ ॥
मैंतो कांइ नही जाणू देवा ।
करुं एक मने थारी सेवारे ॥ जय ॥ ५ ॥
घन गाजत जिम नाचत केकी ।
हिरदे जाग्यो वैराग्य विवेकीरे ॥ जय ॥ ६ ॥
चन्द्र चकोर जिम दर्शन दीठा ।
लागे तन मन से अति मीठारे ॥ जय ॥ ७ ॥
रात दिवस इम रहे ध्यान लागो ।
जाणे पतंगके बांध्यो तागोरे ॥ जय ॥ ८ ॥
केतकी फूले फूले बन वाडी ।
तिहां मधुकर लहे साता गाडीरे ॥ जय ॥ ९ ॥
मान गुमान अरिदल चूरो ।

म्हारा मनका मनोरथ पूरोरे ॥ जय ॥ १० ॥
थे मुज साहिब अंतरजामी ।
आसा पूरो म्हारी यह हामी रे ॥ जय ॥ ११ ॥
हमारो उमावो जन्मको लावो ।
गायो जिनजीको रंग वधावो रे ॥ जय ॥ १२ ॥
जीवागंजमन्दर मांर पैंसट वर्षे ।
गुण गायो हीरालाल हर्षे रे ॥ जय ॥ १३ ॥

॥ श्री जिनराजको विनंती स्तवन ॥

॥ नींदडली नेह निवारीये ॥ यह देशी ॥

आज सुरंग वधावणा । वधायो वधे पुण्यकी वेलके ॥
सुमति सुहागण ज्ञे क्रिये ।
कुमति गई रो दूरी सुख केलके ॥ आ. ॥ १ ॥
नाथमेंवान्कवधायगोवेगोंकीजोंहोस्मारीप्रतिपाल्के ॥
करुणानिधि कृपा करी ।

हमने तारो हो तुम दीन दयालके ॥ आ. ॥ २ ॥
मात पिताकी गोदमें । रमावे हो रामतडी जेमके ॥
बाल विवेक समझे नहीं ।
इम जाणी हो मुज पर धरो प्रेमके ॥ आ. ॥ ३ ॥
उदयाचलउदयहुवे । सहश्रकीर्णेंहोजिमप्रगटेभानुके॥
आतम मंडल जाणिये ।
जिम प्रगटे हो गुरूजीको ज्ञानके ॥ आ. ॥ ४ ॥
चंद चकोर तणी परे । इमलागोहोहमएकण चित्तके॥
क्षिण भर अलगो नहीं रहे ।
बालूडोहो जिम चहावे माविक्त के ॥ आ. ॥ ५ ॥
विघ्न सभी दूराटलेसफलथाजोहोयामुखकी वाणके॥
श्रोता सुण सुख संपजे ।
बहू पावे हो आदर सन्मानके ॥ आ. ॥ ६ ॥
तात श्रीरत्नचंदजी। माताजी होराजांजीजाणके ॥
जेष्ट पुत्र जवाहिर लालजी ।

ज्यान जाया हो हुवो जन्म प्रमाणके॥ आ. ॥७॥
यशःकीर्ति जगमें घणी॥सवामिंघकोहोविघ्नगयादूरके॥
आनन्द वरते अति घणो ।
हिवे पामे हो ऋद्धि भरपूरके ॥ आ. ॥ ८ ॥
संवतउगणीसमेंपैंसटोमाघमासेहोशुभतिथीरविवारके॥
पद पैंसट पूरण हुवा ।
हीरालालजी हो पामे हर्ष अपारके ॥ आ. ॥ ९ ॥

॥ ईश्वरसे प्रार्थना ॥ राग—कव्वाली ॥

सजन तुम मोक्ष पावोगे। हमें भी यादतो करना ॥
रहमदिलरहमपर लावोगे।तुमारेकदमोंकाशरना॥ आं. ॥
एक मालिक है तूंही। और न देव है कोई ॥
आगर हमको भी आवेगा ।
तुमारे कदमोंका सरणा ॥ सजन. ॥ ॥ १ ॥
करमोंके बन्धको छोडो । रमोंके फन्दको तोडो ॥

अजलसे तुमही बचावो । तुम्हारे० ॥सज्जन॥२॥
अगरचे हो तुह्मी दाता ।बक्षोहो हमको सुखसाता॥
वक्तपर आशान आवोगे । तुम्हारे० ॥सज्जन॥३॥
चन्द रोजके मांही । मिलूंगा तुमसे मैं आई ॥
हमभी तुम जैसे होवेंगे । तुम्हारे० ॥सज्जन ॥ ४ ॥
वही दोस्त है मिंता । मिटावे दिलकी जो चिन्ता ॥
कैसे तुम छोड जावोगे । तुम्हारे. ॥ सज्जन॥५॥
हजूरी हुक्मसे गोया । सभीलो शिवपुरके जोया ॥
हीरालाल ऐसा गावेगा । तुम्हारे० ॥ सज्जन ॥६॥

॥उपदेशी लावणी—अधर वरणोंमे—चाल लंगडी. ॥
सुणो जिकर यह इसीजक्तका॥सद्गुरुराहदरसाते हैं॥
ज्ञानकीझाडियांलगाकर॥तुर्तहीआनन्दआतेहैं॥आं.॥
देखो चतुर नरदिलके अन्दर॥कौन तुझेहैतारनहार॥
यह है सज्जनसारेइन्होंका॥क्या तुझकोआताइतबार॥

धन दौलत औरभराखजाना।यहनहींचलनेतेरेलार॥
क्यों ललचाना लालचमें। दुःख देखतहैयहसंसार॥
कुसंगत कबहु नहीं करना।
कुलच्छन नाहक लगाता है ॥ ज्ञान. ॥ ॥ १ ॥
धन दौलत धरनी अन्दर।धर २ चैतन्य राह धरी॥
कौडीरजोडरकर। लाखों क्रोडों संचय करी ॥
जिसदिन चैतन्य कूंच करेगा।धरी रहेगासंचीसिरी॥
जिनने सुकृत्य कियाइसमें।वही संसारसे गयेतिरी ॥
निर्ग्रन्थ वही नहीं लालच जिनकें।
अज्ञानीको जगाते हैं ॥ ज्ञान. ॥ ॥ २ ॥
केइ अज्ञानी करते निंदा।उनके संगमेंनहीं ज्ञान॥
दुर्जन मेरी जाय अडे तो। हटकर पीछानहींआन॥
गर्भाटेकको दूर हटादो। क्यों करते हो तानोंतान॥
या नलुगाई फेरे है कोईगुण अवगुणकी छानोछान॥
ज्ञानी गुरु गुणके सागर।

अजलसे तुमही बचावो । तुम्हारे० ॥सज्जन॥२॥
अगरचे हो तुही दाता ।वक्षोहो हमको सुखसाता॥
वक्तपर आशान आवोगे । तुम्हारे० ॥सज्जन॥३॥
चन्द रोजके मांही । मिलूंगा तुमसे मैं आई॥
हमभी तुम जैसे होवेंगे । तुम्हारे० ॥सज्जन॥ ४ ॥
वही दोस्त है मिंता । मिटावे दिलकी जो चिन्ता ॥
कैसे तुम छोड जावोगे । तुम्हारे. ॥ सज्जन॥५॥
हजूरी हुक्मसे गाया । सभीलो शिवपुरके जाया ॥
हीरालाल ऐसा गावेगा । तुम्हारे० ॥ सज्जन ॥६॥

॥उपदेशी लावणी–अधर वरणोंमे–चाल लंगडी.॥
सुणो जिकर यह इसीजक्तका।सद्गुरुराहदरसाते हैं॥
ज्ञानकीझडियांलगाकरातुर्तहीआनन्दआतेहैं॥आं.॥
देखो चतुर नरदिलके अन्दराकौन तुझेहैतारनहार॥
यह है सज्जनसारेइन्होंका।क्या तुझकोआताइतबार॥

धन दौलत औरभराखजाना।यहनहींचलतेतेरेलार॥
क्यों ललचाना लालचसे। दुःख देखतहैयहसंसार॥
कुसंगत कबहु नहीं करना।
कुलच्छन नाहक लगाता है ॥ ज्ञान. ॥ ॥ १ ॥

धन दोलत धरती अन्दर।धर २ चैतन्य राह धरी॥
कौडी२जोड२कर । लाखों क्रोडों संचय करी ॥
जिसदिन चैतन्य कूंच करेगा।धरी रहेगासंचीसिरी॥
जिन्हने सुकृत्य कियाइसीसे।वही संसारसे गयेतिरी ॥
निग्रन्थ वही नहीं लालच जिन्हके ।
अज्ञानीको जगाते हैं ॥ ज्ञान. ॥ ॥ २ ॥

केइ अज्ञानी करते निंदा।उनके संगमेंनहीं जाना॥
दुर्जन सेती जाय अडे तो। हटकर पीछानहींआना॥
गधाटेकको दूर हटादो। क्यों करते हो तानोंताना ॥
या चतुराई करे है कोई।गुण अवगुणकी छानोछाना॥
ज्ञानी गुरू गुणके सागर ।

सीधी राह लगाते है ॥ ज्ञान. ॥ ॥ ३ ॥

क्याइसतनकोलाडलडाया ।अंतरअंगचालगायाहै॥
कंठी डोरा पहन गलेमें। चले निरखता छांया है ॥
साधूसंतको देखके दुर्जन । गंडक ज्यों घुर्राया है॥
एसे अज्ञानी हारी नरदेह।जिसे मुशकिलसेपायाहै॥
छे कायाकी रक्षा करना ।
सूत्रोंसे दिखलाते हैं ॥ ज्ञानी. ॥ ॥ ४ ॥

तजोत्रियाकासंगहैझूंठा।जिननेकेइकोकियेकंगाल॥
जो नर हैं अन्धे उनको।नरकके अंदर दिये हैं डाल॥
दानदयासत्यशीलआराधो।यहीरचाहैस्वर्गकाख्याल।
सायरका गाना सुनाते।चतुरनको यों हीरालाल ॥
रत्नचंदजी गुरू ज्ञान सिखाया ।
उनको शीस झुकाते हैं. ॥ ज्ञानी. ॥ ॥ ५ ॥

॥ लोक स्वरूप दर्शक—लावणी खांत खडी ॥

सुनोजिकरयह तीन लोकका।ज्ञानीकाज्ञानसुनातेहैं॥
चउदा राजू प्रमान देखलो।स्वर्गनर्कबतलातेहैं॥आ॥
सात राजू प्रमाण उंचे हैं।सात राजू नीचो जानी ॥
पांचसो त्रेसठ भेद जीवका।त्रस स्थावर वस्ता प्रानी॥
चार गति चौवीस दंडक हैं। सबही इसमें समानी ॥
सात राजूवोअधोभवनमें।भवनपतिव्यंत्तरनर्कठानी ॥
व्यंत्तरदेवके नगरअसंख्या ।लंबा चौडा पहचानी ॥
सातकोटऔरबहोत्तरलाखहै।भवनपतीयोंकेभवनानी।
व्यंत्तर देवका बत्तीस इन्द्र है ।
बीस भवनवासी कहलाते हैं ॥ च. ॥ ॥ १ ॥

सात नर्कका बचानसुनलो।सात राजूजो फरमाया ॥
गुन पच्चासपांथडे,चोरासीलाखनर्कावासाबतलाया ॥
वसे जीव बहुतकाल नर्कमें । मोटा पाप जो कमाया॥
परमाधामी पन्दरहजातका । पापीको दुःख देसताया॥

तिर्यंच मनुष्य और जोतषी । मध्य लोकमें कहवाय॥
वरणन इनकासुत्रमें देखो । यहां गानेमें नहीं आय॥
द्विप समुद्र असंख्य२ है । सूत्रोंमें फरमाते हैं ॥च॥२॥
जंबूद्विप है सबके अंदर । लाख जोजनके मांहीहै॥
कर्माभूमी वसे जुगलिया । क्षेत्र नव सुखदाइ है ॥
मेरु पर्वत सबसे ऊंचा । वन चार बीटयाइ है ॥
पडंग वनमें सिला चार है । मौछब करे सुर आइहै॥
चन्द्र सूर्य और सभी जोतषी । रह्या चक्र लगाइ है॥
सोला हजार सुर उठानेवाले । चन्द्र सूर्यके तांइहै॥
रात दिन जो करे परियटना । शुभा शुभ वर-
तातें हैं ॥ चउदे ॥ ३ ॥
स्वर्ग छव्बीस है उंचा लोकमें । बारह कल्प कहवानाहै
दश इन्द्र तक सभी रचना । आगे अहेमेन्द्र देवनाहै॥
चउरासीलाख सताणु सहश्र । उपर तेवीस जो जानाहै
स्वार्थ सिद्ध है सबसे ऊंचा । पुण्यवंतोका ठिकाना है॥

वहासे बारह जोजन ऊंची । सिद्ध सिलापर मुक्ती-
पाना है ॥
सुख अनंता सिद्ध भगवंतका । जन्म मरण दुःख-
मिटाना है ॥
जवाहर लालजी गुरु प्रसादे। हीरालाल सुख पाते-
हैं ॥ चउदे ॥ ४ ॥

॥ श्री गुरुउपकार लावणी ॥

वंदगी करो गुरुकी गुनवान । जिनोका है सिरपर-
अहसान ॥ आं. ॥
अगर जो दिया है संयम भार। उनोका है मोटा-
उपकार ॥
होवे जो ज्ञानतणा दातार । गुणोंका गुण भूले-
जो गंवार ॥

दोहा—रात दिवस चरणा विषे । रह्यो चित लपटाय॥
अली पंखज और शंख सरीखा । उज्वल-
ध्यान लगाय ॥
मिलत—हमारी यही विनंती मान ॥ बंदगी ॥ १ ॥
भणगुण किया गुरु होंशियार । फरवो मरते खारोखार
बचन वो बोले कठिन तलवार। चालसे चले दुष्ट आचार
दोहा—अपने मत फिरता फरे । बोले औगुनवाद ॥
स्वछन्दी अंध मदमाता । नाम धराते साद ॥
मिलत—लजाते घर अपना अज्ञान ॥ बंदगी ॥२॥
डोले केइ नुगरा होवे संसार । जिनोपर लाख-
पापका भार ॥
मतकरो उनका कोइ इत्बार।फेलाते जगमें झूटीजार
दोहा—निनवादि सब देखलो । परभव के दरम्यान॥
काला मुंहका होवे देवता । अलग वसे-
अवस्थान ॥

मिलत्—उन्होंको कोइ नहीं छीते जहान॥ बंदगी॥ ३॥
सिखाया सुत्र अर्थ और पाट। बताइ मोक्ष जा-
नेकी वाट॥
उन्होसे रखेजो दिलमें आंट। कपटकी भरी गांठमें गांठ
दोहा—मोका होवे कोइ कामका। टल्ला लहे तुरंत॥
पडेल बैल गलियार गधा जिम। चले न-
सीधा पंथ॥
मिलत—हसरत सहेत है अजान॥ वंदगी॥ ४॥
नुगरा करे मोक्षमें वास। कभी नहीं होय मोक्षके पास
उसके कर्मसे उसका नाश। फल जिम लगे जं-
गलमें वांस॥
दोहा—कण कुन्डको त्यागकर। सूवर भिष्टा खाय॥
सडे कानके श्वान ज्यों। शास्त्रमें बतलाय॥
मिलत—मिले क्या मान और सन्मान॥ वंदगी॥ ५॥
अपनी हेसीयतके प्रमान। वंदगी करो पकड दो कान

तकब्बूर तजो याने अभीमान । वही गुणीजन-
गुणकी खान ॥
दोहा–गुरु महिमा सब मतमें । वरणन करी अनंत॥
हीरालालको जवाहिरलालजी । मिले गुरु-
गुणवंत ॥
मिलत–जभी तुम करते हो वाख्यान ॥वंदगी॥६॥

॥वैरागी और स्त्रीका प्रश्नोत्तर॥ वेदक विरला हो–दे०॥
बोले बचन वनीता सुणीजे ।
संयम मार्ग इम किम लीजे रे॥सुणो२ प्रीतमजी ॥१॥
हम तुम घरकी पल्ले लागी ।
किम छांडो छो बड भागी रे ॥ सुणो २ प्री० ॥२॥
परणी घरणी जो तुम प्यारी ।
किम रहसी घडी एक न्यारी रे ॥ सुणो २ प्री० ॥ ३ ॥
। अवस्था तुम हम तरुणी ।

विरह खमे किम गजगमनी रे॥ सुणो २ प्री० ॥४॥
कामातुर जो कामनी भारी।
जाणे इन्द्रकी आइ सवारी रे ॥ सुणो २ प्री० ॥५॥
नारिको अबला नाम धरायो।
पुरुष पुण्य अनंता लायो रे ॥ सुणो २ प्री० ॥६॥
यो घर मंदिर सुन्दर नारी।
क्यों फिरो हो घर २ द्वारी रे ॥ सुणो २ प्री० ॥७॥
भोजन काजे परघर जाणो।
तिहां हर्ष विखवाद न लाणोरे ॥ सुणो २ प्री० ॥८॥
विनंती म्हारी मानो हो स्वामी।
अति हट कियां दुःख पामी रे॥ सुणो २ प्री० ॥९॥
कहे प्रीतम सुणो हो नारी।
संयम मार्ग हे सुखकारी रे॥ सुणो२प्रेमलावाय१०॥
जीव अनंता जे दुःख पावे।
ते तो धर्म विना पस्तावे रे ॥ सुणो २ प्रे. ॥११॥

इम समझाइ संयम लीधो ।
ते तो जन्म कृतार्थ कीधो रे ॥ सुणो २ प्रे० ॥१२॥
कहे हीरालाल जो होवे वैरागी ।
जाने मोक्षतणी लवलागीरे ॥ सुणो २ प्रे० ॥१३॥

॥ वैरागीसे स्त्रीकी विनती ॥ हो पिउ पंखीडा—दे०

अहो सुणो वाहालाजी, थे लेवो संयम भारजो ।
माताने किम मेलो झुरती लोयणारेलो ॥
अहोसु० यो नार्यांको संयोगजो ।
मुखडो तो जोवे बोले वयणस्युरंलो ॥ १ ॥
अहोसु० कांइ सन्ध्या थइ तिणवारजो ।
प्रीतमनी या बाटज जोवे प्रेमदारेलो ॥
अहोसु० किम तजो अदबीचजो ।
जावे ते किम आवे घडी एक हेमदारेलो. ॥ २॥
अहोसु० नित्य उठ परघर द्वारजो ।

लाधा ने अणलाधा समता राखियेरेलो ॥
अहोसु० कोइ बोले कडवा बोलजो ।
आगो ने वली पाछो नहीं झाकियेरेलो ॥ ३ ॥
अहोसु० कांइ करणो उग्र विहारजो ।
उष्ण परिसह शीतज सहवो दोहिलोरेलो ॥
अहोसु० रहवो गुरुकुल वासजो ।
विनयने वली भक्ती नहीं छे सोहलीरेलो ॥ ४ ॥
अहोसु० राते किम आवे नींदजो ।
सेजाने संथारो कर किम सोहवोरेलो ॥
अहोसु० घडी जावे ज्यों षट मासजो ।
आवेरे वीमारण हिवडे जोहवोरेलो ॥ ५ ॥
अहोसु० संयमनो किस्यो जोगजो ।
भोगोरे मन गमता भोग सुहामणारेलो ॥
अहोसु० जो जाणता एहवो संजोगजो ।
तारे तो किम कीधा व्याव वधामणोरेलो ॥ ६ ॥

अहोसु० जो देख्या जिनवर भावजो ।
तेहनो तो कुण मेटे पुरूष मानवीरेलो ॥
अहोसु० यों गावे हीरालाल जो ।
राणीने इम जाणी समता आणवीरेलो ॥ ७ ॥

॥ फूट और सम्प विषय ॥ राग कव्वाली. ॥

फूटको मेटिये भाई । किसीके काम कीनाहीं ॥
सम्पसें सम्पत्ती पावे । मिले रिजक रोशनाइ ॥आं॥
फूट पांडवोंने डाली । नवा खुद आप छिपवाली॥
हरिकोक्रोधजो आया।नतीजाक्याउसे पाइ ॥फूट१॥
रावणको फूट क्योंडाली।दियाभाविषणकोनिकाली॥
गया जो रामके पासे ।रावणपर तेग चलाइ॥फूट२॥
कोणिकने किया युद्ध भारी।लुटादी केशरकीक्यारीं॥
चेडानृपबाणचलाया।कोणिककीजानघबराइ ॥फूट३॥
भरत बाहूबल बहू गाजे । राजके लोभके काजे ॥

इन्द्र खुद आपसमझाया।बाहुबलसमतालाइ ॥फूट४॥
केइ राजाकी रजपूती । रही शमशेर ज्यों सूती ॥
फूटसे टूट गया किल्ला।वैरीको लेत दबाइ ॥फूट ॥५॥
फूट जिसे घडेसे जानी । जिसमें ठहरे नहीं पानी॥
फूटका मोल है कमती।पूछना घरोंके मांइ ॥ फूट॥६॥
किसीका चश्म जो फूटा।उसीका माल सब लूटा ॥
फूट गइ पालजो सरवर।उसीमें नीरकहांपाइ॥फूट॥७॥
गुरुजब।हिरलालजीपाया।जिन्होंकीकल्पवृक्षछांया॥
सम्पसे सभी सुखपाया।हीरालालदेतचेताइ ॥फूट८॥

॥ उपदेशी–गजल ॥

आये थे जन्म सुधारने अब हार क्यों चले॥
जीना जिन्दगी कर बन्दगी जो मोक्ष तोमिले॥आं०॥
अय दिल जो तूं पाय दारी जिस्मकी करे ॥
हमराह यह तेरा हुस्नकी साहिब से मिले॥आये॥१॥

हिर्सकी हवा के अन्दर डौलता हिले ॥
मखियां जो मस्तकधूनती औरदस्तको मले॥आये२॥
जर जेवरें जवाहर डाले अपने गले ॥
जमींके उपर पांव तेरे जोरसे चले ॥ आये ॥३॥
जो मुस्तफा मखलुमें उनसे दूर क्यों टले ॥
मकून सोबत जाहिलोंकी हसरतमें डले ॥आये॥४॥
दे दान सखावत है दौलतकी हांसिले ॥
जिना खोरीकी मिजवानी दोजखमे चले॥आये ॥५॥
बराय जिनराज आरजू और ना हिले ॥
हमावक्तसोदरमुस्तकीमें हीरालालकोमिले॥आये६॥

॥ सम्यक्त्व की—गजल ॥

सम्यक्त्व रत्न पाय मतीहाररे जिया ।
मिथ्यात्व मोह अन्धकार टाररे जिया ॥ टेर ॥
कुगुरू देव हिंशा धर्म छोडरे जिया ।

दया धर्म सती संत प्रीति मांडरे जिया ॥ स ॥१॥
जो सात व्यश्न संग रंग त्यागरे जिया।
ज्ञान ध्यान दया दान पंथ लागरे जिया ॥ स ॥२॥
चहाय जीवको सभी जीवा दया पालरे जिया।
जिनराजके हुक्ममें तूं चालरे जिया ॥ स ॥ ३ ॥
यह काम क्रोध लोभ चोर माररे जिया।
कर त्याग यो संसार है असार रे जिया ॥ स ॥ ४ ॥
यह आजकाल कालआज मति कररे जिया।
दम दार बेडापार अब धररे जिया ॥ स ॥ ५ ॥
जो अचल अमर अविकार है स्थान रे जिया ॥
हीरालालको हरवक्त वहां सुख मान रे जिया॥स॥६॥
उन्नीससे गुन्नसटका चौमास रे जिया।
जीवागंजमें जैनधर्मका प्रकाश रे जिया ॥ स ॥७॥

॥ स्मरण विधीदर्शक–राग महाड ॥

होसुणचैतन्यप्यारा,मोहनगारा,माळाफेरोरेराज।आं०
द्रढासन द्रढमन करी रे। द्रढही ध्यान लगाय ॥
जाप जपो जिनराज का रे।
जन्म मरण मिट जाय ॥ हो सुण ॥ १ ॥
यो अवसर चूको मती रे। ज्यों पारधीको बाण ॥
कर्म रिपु हणवा भणी रे।
कीजो यों परिमाण ॥ हो सुण ॥ २ ॥
मन वच काया स्थिर करी रे। लव लगावो एक ठौर॥
गगन गमन पतंगकी जिम।
हाथ में लीनी डोर ॥ हो सुण ॥ ३ ॥
मधुकर चित मालती विषे रे। कुंजर कजली बन॥
या विध आतमा आपणी रे।
कीजो राम रमन ॥ हो सुण ॥ ४ ॥
जैसे नटवो नाचतां रे। धारे एकण चित्त ॥

हीरालाल सिद्ध पदको ध्यातां ।
राखो यही ज रीत ॥ हो सुण ॥५॥

॥ सद्बोध–गरबी ॥

प्राणी थारो दया विन कांइ होसी सूल ।
तूं तो भ्रमनामें गयो भूल ॥ प्राणी ॥ आं० ॥
करत धंधो दिन रात के मांइ ।
माया देख २ रह्यो फूल ॥ प्राणी ॥ १ ॥
माता कहे मेरा पुत्र कमाऊ ।
पिता कहे मेरा दीपक कूल ॥ प्राणी ॥ २ ॥
सज शृंगार काया करी चंगी ।
जास्यो वृक्ष निगुण को मूल ॥ प्राणी ॥ ३ ॥
कर २ कष्ट जन्म एल गमायो ।
दया धर्म विन जगमें झूल ॥ प्राणी ॥ ४ ॥
काल अनादि से चौगति मांही ।

रह्यो जीवडो यो रुल ॥ प्राणी ॥ ५ ॥
आंबकी छांयसे सहु सुख पाय ।
तूं तो बायो पेड बंबूल ॥ प्राणी ॥ ६ ॥
सतगुरु सीख सुनावे सुत्रकी ।
तूंतो श्वान ज्यों सामो करे गूल ॥ प्राणी॥ ७ ॥
गुरू विन ज्ञान ज्ञान विन नर भव ।
जैसे गज सिर डाले धूल ॥ प्राणी ॥ ८ ॥
कहे हीरालाल गुरू जवाहरलालजी ।
रह्या चांदणी जों खूल ॥ प्राणी ॥ ९ ॥

उपदेशी पद ॥ ऐसे तो गुरु देते हमको ज्ञान ॥दे०॥
मिलीजी थाने काया नगरी सिरदार ।
यामे बणज कर हो होंशियार ॥ आं० ॥
कंचन कातो कोट बनाया । सोभे दसही द्वार ॥

देखत सुन्दर लागत सबको ।
आते जाते संसार ॥ मिली ॥ १ ॥
इस नगरीमें बसते केइ । चोर ठोर साहूकार ॥
केइ चतुर और मूर्ख केइ ।
केइ गाफिल होंशियार ॥ मिली ॥ २ ॥
जो चाहे सो माल भरा है । लेना कर विचार ॥
खाली रहेगा फिर पस्तावे ।
गुरु कहे वारम्वार ॥ मिली ॥ ३ ॥
माल कमाया जो सुख पाया । भर्या अखूट भंडार ॥
इस काया से करो तपस्या ।
जन्म मरण दो टार ॥ मिली ॥ ४ ॥
वडे २ वेपारी आये । लिया लाभ खुद लार ॥
कर्ज चुका कर गये मोक्षमें ।
जहां मौज करत नरनार ॥ मिली ॥ ५ ॥
केइ कलंदर ऐसे आये । नहीं समजे वेपार ॥

उलटा कर्ज किया सिर नंगे ।
अम्मा को मारी योंही भार ॥ मिली ॥ ६ ॥
उन्नीससो छांसट के मांही । ठाना दश परिवार ॥
पारसोलामें आये मुनीश्वर ।
जवाहरलालजी अणगार ॥ मिली ॥ ७ ॥
हीरालाल कहे सबको ऐसे । रहो गुणी होंशियार ॥
पाप अठारा त्यागन करके ।
आत्म अपनीको तार ॥ मिली ॥ ८ ॥

॥ उपदेशीं पद मोक्ष का बटाउ ॥ देशी उपर्युक्त ॥
चालोजी आपां मोक्ष नगर दरबार ॥
मानोजी म्हारी विनंती वारंम्वार ॥ आं० ॥
केइ जणातो पहोंच गया है । केइक होवे तैयार ॥
केइक मसलत करत है मनमें ।
हां पहोंचे सरकार ॥ चालो ॥ १ ॥

ज्ञान घोडा पर साज संयम को । वन वैठा अस्वार ॥
सीधी सडक लीवी शिवपुरकी ।
क्या लगती देर दार ॥ चालो ॥ २ ॥
विनय विछोना सील सिराना । संमर ओढना लार ॥
बांध गठडिया फेट पकडियां ।
होगया त्यारम् त्यार ॥ चालो ॥ ३ ॥
तप खरची बांधी या पल्ले । द्रव्य अखूट भन्डार ॥
हजूर साहेबका जहां है ठिकाना ।
शहर वसे गुलजार ॥ चालो ॥ ४ ॥
चार तीर्थ दरवार भरा है । सभापति जिन दीदार ॥
लाख पेंतालीस लम्बा चौडा ।
सभा मंड श्रेयकार ॥ चालो ॥ ५ ॥
बहुत दिनसे उम्मेदवार है । अरजी दीनी डार ॥
साहिब आपसे मिलने आता ।
कर्मों की की तकरार ॥ चालो ॥ ६ ॥

केइ जणा तो ज्ञान सुणीने। लीनी सम्यक्त्व धार ॥
वरषत पाणी रह गया कोरा ।
केईक ऐसा नरनार ॥ चालो ॥ ७ ॥
नगर उज्जैनी आया विचरता । ठाना दस परिवार॥
कहे हीरालाल साल चौसटके ।
वरते मङ्गला चार ॥ चालो ॥ ८ ॥
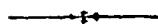
॥ ज्ञान बगीचा लावणी—छोटी कडीमें ॥

मालीने लगाया बाग । बडा गुलजारी ॥
फुल रहे फूल फलवाद केशरकी क्यारी ॥ आं० ॥
आत्म अपनीका अम्बका पेड लगाया ॥
यत्नाका जांबू डालोडाल फैलाया ॥
यह सतका सीताफल शीतल है छाया॥
लगत है अति मीठा अमृत फल खाया ॥
यह बड पींपल दोइ अभय सुपात्र मारी॥फुल॥१॥

मनका मोगरा चितकी चमेली फैली ।
गुरुभक्तीका गुलाब डगाल्यां पहली ॥
किरियाकी केतकी केवडा दोनों भेली।
चरचाको चंदन शीतल सुगन्धी मेली ॥
या सील रसनी सडक वनी चउतारी ॥ फुल ॥२॥
यह तीन तत्वका तीनों भेद कहलाना ।
नारंगी नीम्बू जामफलका खाना ॥
नारेल खजूरा खारक पेड मेवाना ।
उत्तम लेशा तीनों तीन पहचाना ॥
या दाखोंकी वेली विनयका मंडप जहारी ॥फुल॥ ३॥
यह नव तत्वका मेवा नाना प्रकारे ।
अंजीर अंगुर विदाम पिस्ता छुहारे ॥
चेतन्य माली करे रक्षा बागकी वाहारे ।
क्षमाका कोट अति किया बहुत होंशियारे ॥
प्रमाद रूप वस्तुकी करो रखवाली ॥ फुल ॥ ४ ॥

या जिनवाणीका नीर भर २ पीलावे ।
मन वच कायाकी जेर धोरी चलावे ॥
जब अमृत फलके खाया रोग नही आवे।
सब जन्म जरा के दुःख दूर टलावे ॥
हीरालालकहेऐसीवागकीवहारकरोनरनारी॥फुल॥५॥

आत्मज्ञान–लावणी.

अगर दुनिया में हो होंशियार।
करत दिल जान सो विचार ॥ आं० ॥
कहां से आया हो तुम चाल।
कहां के हो तुम रहने वाल ॥
किसीके हुकमसे करते ख्याल ।
इहां तुम मोज करो महाबाल ॥
दोहा–क्या तुम लेकरआविया॥किसकाकिया उधार॥
क्या कमाइ पले बान्धी । अब क्या करो विचार॥

मिलत—किसीके हुकमपर चलते यार ॥ अगर ॥१॥
भूले क्यों योवन के जोर घमन्ड । भूले क्यों देख-
दोलत प्रचन्ड ॥
भूले क्यों देख बिरादर अखन्ड । होवेगा तेरे-
सिरपर यम दन्ड ॥
दोहा—क्यो भूला गुल बदनपर । गज रथ तेज तुरंग ॥
राज पाट और जमी जेवर । क्या क्या आते संग ॥
मिलत—बन्दे क्यों होते हो अन्धे यार ॥ अगर ॥२॥
घमन्डी हुवे केइ सरदार । उन्होंका पता न पाया यार ॥
डुवाया तुमको वारम्बार । होगा कियामतके रोज-
इजहार ॥
दोहा—जज कोर्टके बीचमें । होगा वहां इन्साफ ॥
हाकिम हुकम वहां गर्मागर्म है । क्या तुम दोगे जवाब ॥
मिलत—लगे क्या वहांपर तुम्हारे बाप ॥ अगर ॥३॥
आखिर अंतः यम आयाही खलास । पहोंचना-

हजरतही के पास ॥
इताअत करोमिया फरमास । जिंदगी जीना इस्कार-
के वास ॥
दोहा—जन्म सुधारण चहात हो । तो करो गुरुकी सेव॥
हीरालाल दरम्यान सभाके । चेताते नित्यमेव ॥
मिलत—गाफिल क्यों होतेहो अन्धे यार ॥अगर॥४॥

॥ पण्डित लक्षण—लावणी ॥

पण्डित होवे जो परवीन । पापसे डरे रात और
दिन ॥ आं० ॥
दर्द सब जीवोंका पहिचान । हटावो क्रोध लोभ-
और मान ॥
हणे नही किसी जीवके प्रान । समजलो यही-
ज्ञान और ध्यान ॥
दोहा—केइ कन्द मूल भक्षण करे।मद मांसको अहार॥
रयणी भोजन रक्त काममें । दुर्बुद्धी आचार ॥

मिलत—डोलते मायामें ज्यों बग मीन ॥ पण्डित ॥१॥

चंद रोज चलने के दरम्यान । गुजरी वक्तपर धर ध्यान॥

करो गुण अवगुणकी पहिचान । घमन्ड क्यों रखते-
हो इन्सान ॥

दोहा—क्यों जातेहो वेरानको । सविल बडाहै दूर ॥
अन्धे हो क्यों गिरो कूपमें । जो दरियाका पूर ॥

मिलत—क्यों तुम करतेहो गमगीन ॥ पण्डित॥२॥

साधूका पन्थ कठिण आचार । खोजा क्या उठावे-
तलवार ॥

गधेसे उठे न गजका भार । रंक क्या करे गजका कार ॥

दोहा—माया जालके बीचमें । फसे दौलत परिवार ॥
जुवा बाज अशक इश्कमे । करते रम अणगार ॥

मिलत—डोलता लोभ माहे हो लीन ॥ पण्डित ॥३॥

धरो अब ध्यान महामतीधार तोड सब कर्मोंकी जंजीर।

हमको चुन्द दिन विजोग कभी नहीं होते हैं दिलगीर॥

दोहा–गुन्हेगारके गुन्हेको । वफा करो महाराज ॥
जवाहरलालजी महाराज चरणसे।सभी सुधरेकाज॥
मिलत–हीरालाल चरणोंमें चित चीन ॥पण्डित॥४॥

॥क्रोध–निषेध॥ममतमतकीजो राजधनमें यहदेशी॥
क्रोध मत कीजो रे प्राणी । थाने वरजे है गुरु ज्ञानी
॥ क्रोध ॥ आ० ॥

क्रोड बर्ष लग तपस्या तपिया। क्षिणमे होत विलानी॥
कठिण बचनसहे नरकोइ ।ऐसो तपनहीं जानी॥क्रो॥१
कठिण बचन बोले नर कोइ । समता घटमें आनी ॥
क्रोधानल बुझावोमनकी। मिले मोक्ष निर्वानी॥क्रो॥२
क्रोध समान नहीं विष कोइ । पाप मांहे अगवानी ॥
क्रोध झालजो ऊठी मनमें । सींचो क्षमा पानी॥क्रो॥३
घणा दिनाकी प्रीति जूनी । क्रोधी कहीं पेहचानी॥
जिमदूधमेंनिमकपडिया॥विगडजायसबघानी॥क्रो॥४
कषाय रुपणी अग्नि बुझावो। सूत्रधार सींचानी ॥

क्षमा खड्ग जो लिया हाथमें। दुर्जनके घर हानी॥क्रो॥५
क्रोधी नर मरकर दुर्गतिमें। जन्म लेत है जानी॥
श्वानसर्पबिल्ली मरकटको। भव संचितविकलानी॥क्रो६
जवाहरलालजी गुरू गुणवंता। शीतलचंद समानी॥
हीरालालपीवोउपशम रस।केवल प्रगटेआनी॥क्रो ७

॥ पद—सम्यक्त्वीको हितशिक्षा ॥ देशी वरोक्त ॥

समकित शुद्ध राखो शुद्ध राखो। आयो हाथे-
रत्नमती न्हाखो॥ समकित ॥ टेर ॥
कुगुरुदेव धर्मकी सेवा। स्वपनामें मत झांखो॥
उवट वाट घाट दुर्गतिका। संगन कीजे यांको॥
॥ समकित ॥ १ ॥
हिंसामाहें धर्म बतावे। ताके मुख धूल न्हांखो॥
मिथ्या पाप बतायो मोटो। आडो न आसी कांको
॥ समकित ॥ २ ॥

तत्व तीनको निर्णय करने । हृदयमें धर राखो ॥
पाखन्डीको परिचय छांडो । जन्म सुधरसी थांको
॥ समकित ॥ ३ ॥

सबही ग्रन्थ शास्त्र सुनाया । षट भाषा जो भाखो॥
क्रिया कष्ट इष्ट तुमारा । लूण अलूणा चाखो॥सम॥४॥
पांच दोषण टालो सम्यक्त्वका । मिथ्यात्व पच्चीस
भवांको ॥
लक्षण पांचकी औलख कीजे । यो सम्यक्त्वको
शाखो ॥ समकित ॥ ५ ॥

दुर्लभ मेलो मिलियो सज्जन । यत्न करीजोयांको ॥
देवादिकसे डोलो मत कोइ । यो कहनो संताको
॥ समकित ॥ ६ ॥

दया पथरनो सम्वर औढनो । आतम अपनी ढांको॥
हीरालाल शुद्ध मार्ग चालो । बांका दोडा मत
झांको ॥ समकित ॥ ७ ॥

॥ पद त्रष्णाकी फांस ॥ राग—धन्नाश्री ॥

अरे हो तृष्णा मोह लियो संसार ॥ बाल वृद्ध

योवन वाला ॥

न कोइ पाया पार ॥ अरे हो तृष्णा ॥ आंकडी ॥

राज करंता राजा मोह्या । पट खन्डके सरदार ॥

अवस्मात वात नही मेले । न तजे टेक लगार ॥

॥ अरे हो ॥ १ ॥

कामणगारी है तू नारी । वश कीधा भरतार ॥

कर २ प्रीती त्रप्त न हुइ । सदा तरुणी संसार ॥

॥ अरे हो ॥ २ ॥

तृष्णा तरंगनी है अति गहनीं । इन्द्रादिक दीना डार॥

पार लहेपुरुषोत्तमकोइ।कठिनअग्निकी झाल॥अरे ३

तृष्णावली सब जग फैली । फल लागे खग धार ॥

खानेवाला वोमत हीना । उनको डाले मार॥अरे॥४॥

त्याग तृष्णा संयम पाले । छोड धन भर्या भन्डार ॥

अपने मनको वस करलीनो । तुरंग चडयो ज्यों
स्वार ॥ अरे ॥ ५ ॥
हमको चाह है एकही उनकी । जो वक्से दातार ॥
कहेहीरालाल ध्यानलगायो।।ज्योंचरखाकोतार॥अरे६

॥ पद–वैरागी के वाक्य ॥ राग–धन्नाश्री ॥

अब हम आये समज के द्वार । सत्‌गुरु ज्ञान ध्यान
समजायो ॥
ताते भये अणगार ॥ अब हम आये ॥ टेर ॥
भर्मकी टाटी भश्मकी बाटी । आककी टटिया निसार॥
ऐसे संसारभयो भर्मनामे ।नाकोइ पायापार॥अब॥१॥
नट्टे खट्टे होवे जो हट्टे । उनने रचीहै जार ॥
डालनफन्दऔरनको डोले।भरियाकपटभन्डार॥अब २
मन मतवाला कर्मका जाला । दूर किया जंजार ॥
जोगुरुज्ञानीहैनिर्भिमानी।तारणतरणअणगार॥अब३

ज्ञान दीपक जोया घट अन्दर। दूर किया अन्धार ॥
बिकटघाटसेपारउतारण।कियाघणा उपकार ॥ अब ४
हीरालाल भजमाल नामकी। जो कोइ होवे होंशियार॥
रागधन्नाश्रीधुन्नलगाइ।सुणतां हर्ष अपार ॥ अब५॥

॥पद–सद्गुरू बोध ॥ गाफल मतरहै–यह देशी ॥

गुरूजी ऐसा ज्ञान सुनावे रे ।
अन्धेको मार्ग दिखलावे ॥ टेर ॥
भवसागर से पार उतारे ।
काम क्रोध की लेहर निवारे ॥
खोटी द्रष्टि किसी परनारे ।
अपनी जान ज्यूं जान बचावे ॥ गुरुजी ॥ १ ॥
जिसको संगत है मुनिवर की ।
उसकी नाव भव ज़लसे तिरेगी ॥
बिकट घाटसे पार उतरेगी ।

अपने मनको वस करलीनो । तुरंग चडयो ज्यों
स्वार ॥ अरे ॥ ५ ॥
हमको चाह है एकही उनकी । जो वक्से दातार ॥
कहेहीरालाल ध्यानलगायो।ज्योंचरखाकोतार॥अरे६

॥ पद-वैरागी के वाक्य ॥ राग-धन्नाश्री ॥

अब हम आये समज के द्वार । सत्गुरु ज्ञान ध्यान
समजायो ॥
ताते भये अणगार ॥ अब हम आये ॥ टेर ॥
भर्मकी टाटी भश्मकी बाटी । आककी टटिया निसार॥
ऐसे संसारभयो भर्मनामे ।नाकोइ पायापार॥अब॥१॥
नट्टे खट्टे होवे जो हट्टे । उनने रचीहै जार ॥
डालनफन्दऔरनको डोले।भरियाकपटभन्डार॥अब २
मन मतवाला कर्मका जाला । दूर किया जंजार ॥
जोगुरूज्ञानीहैनिर्भिमानी।तारणतरणअणगार॥अब३

ज्ञान दीपक जोया घटअन्दर। दूर किया अन्धार ॥
विकटघाटसेपारउतारण।कियाघणा उपकार ॥ अब ४
हीरालाल भजमाल नामकी। जो कोइ होवे होंशियार॥
रागधन्नाश्रीधुन्नलगाइ।सुणतां हर्ष अपार ॥ अब५॥

॥पद—सद्गुरू बोध ॥ गाफल मतरहै—यह देशी ॥

गुरूजी ऐसा ज्ञान सुनावे रे ।
अन्धेको मार्ग दिखलावे ॥ टेर ॥
भवसागर से पार उतारे ।
काम क्रोध की लेहर निवारे ॥
खोटी द्रष्टि किसी परनारे ।
अपनी जान ज्यूं जान बचावे ॥ गुरुजी ॥ १ ॥
जिसको संगत है मुनिवर की ।
उसकी नाव भव जलसे तिरेगी ॥
विकट घाटसे पार उतरेगी ।

वो कभी नहीं खता खावे ॥ गुरुजी ॥ २॥
खोल चश्म तुम अपने देखो ।
माया जालसे मतना बेहको ॥
आगे तुमको पूछे लेखो ।
बडे २ घमन्डी घबरावे ॥ गुरुजी ॥ ३ ॥
हकताला ने जो हुकम दियाथा ।
तुमने भी कुछ कौल कियाथा ।
अबक्या माफी मांग लियाथा ।
कियामतको फिर पस्तावे ॥ गुरुजी ॥ ४ ॥
सब जीवों की रक्षा करना ।
सच्ची राहपर पांव जो भरना ।
बदों की संगत कभी मत करना ।
ज़ुलमियोका जुल्म हटावे ॥ गुरुजी ॥ ५ ॥
यह दुनिया है हाटका मेला ।
कौन तुमारे संग चलेला ॥

कहोगे हमको नहीं किया पहिला ।
मुरिदों को अक्कल फिर आवे ॥ गुरुजी ॥६॥
अगर तुमारी है होंशियारी ।
भक्ती करो गुणवंत्तो की भारी ॥
हीरालाल कहे ये अक्कल हमारी ।
आलीजासे आलीजा पद पावे ॥ गुरुजी ॥७॥

॥ पंद—सच्चामित्र ॥ गजल—कवाली ॥

मित्रका भरोसा भारी । वोही जो काम आते हैं ॥
मुनासिबसमजके दिलको।जानसेजानलगाते हैं॥मि१
होवे कोइ बचनका सूरा । उनोका भागहै पूरा ॥
हजारों कोस भी जावे । वहां भी काम आते हैं॥मि२
मित्र वो दुःख मिटावे । सज्जन पन करके बतलावे ॥
कृष्णधातकी खन्ड गये । द्रोपती लेकर आते हैं॥मि३
भाइ लक्ष्मण के कारण । भरत उसी वक्त में धाया ॥

वो कभी नहीं खता खावे ॥ गुरुजी ॥ २॥
खोल चश्म तुम अपने देखो।
माया जालसे मतना बेहको ॥
आगे तुमको पूछे लेखो।
बडे २ घमन्डी घबरावे ॥ गुरुजी ॥ ३ ॥
हकताला ने जो हुकम दियाथा।
तुमने भी कुछ कौल कियाथा।
अबक्या माफी मांग लियाथा।
कियामतको फिर पस्तावे ॥ गुरुजी ॥ ४ ॥
सब जीवों की रक्षा करना।
सच्ची राहपर पांव जो भरना।
बदों की संगत कभी मत करना।
जुलमियोका जुल्म हटावे ॥ गुरुजी ॥ ५ ॥
यह दुनिया है हाटका मेला।
कौन तुमारे संग चलेला ॥

कहोगे हमको नहीं किया पहिला ।
मुरिदों को अक्कल फिर आवे ॥ गुरुजी ॥६॥
अगर तुमारी है होंशियारी ।
भक्ती करो गुणवंत्तो की भारी ॥
हीरालाल कहे ये अक्कल हमारी ।
आलीजासे आलीजा पद पावे ॥ गुरुजी॥७॥

॥ पंद–सच्चामित्र ॥ गजल–कवाली ॥

मित्रका भरोसा भारी । वोही जो काम आते हैं ॥
मुनासिबसमजके दिलको।जानसेजानलगाते हैं॥मि१
होवे कोइ बचनका सूरा । उनोका भागहै पूरा ॥
हजारों कोस भी जावे । वहां भी काम आते हैं॥मि२
मित्र वो दुःख मिटावे । सज्जन पन करके बतलावे ॥
कृष्णधातकी खन्ड गये । द्रोपती लेकर आते हैं॥मि३
भाइ लक्ष्मण के कारण । भरत उसी क ।

विसल्या दस्त लगाया । शक्ती गाउ मिटाते हैं॥मि४
अगर दिल साफ है जिनका । प्रेम से रहे मन उनका ॥
द्रोह से होवे मित्र खारा । कपट से गूंजजाते हैं॥मि५
हमारा काज सुधारो । बिरादर पार उतारो ॥
हीरालाल मित्रतायेही। मोक्ष के सुखचहाते है॥मि६

॥ पद-सद्बौध ॥ म्हारोमन राच्यो राज राच्यो
यह देशी ॥

अजब रंग लागो जी लागो । तजियो जगत् को
धन्धो आगो ॥ टेर ॥
कमी नहीं यहां कोइ बातकी । जो चाहिये सो
मांगो ॥ अजब ॥ १ ॥
अखूट खजाना भरा हमारे। लेना होवे तो पीछा सांगो
क्यो भूला तूं घमन्ड मन्डमें । बान्धी बांकी पागो
॥ अजब ॥ २ ॥

दयाधर्म रूचे नहीं तुजको । बोल नजाने बागो
वणज किया वैपारीतुमको । क्याफलहाथे लागो॥अ३
आवागमनका चरखाडोले । जैसेभाडाकोतांगो
क्योंसोतेहोअपनी नींदमे।अबतो सज्जन जागो॥अ४
गुजरगइ वापिसनहींआती । जैसो सुरंगनीरागो
जोखुदआपहीफिर उघाडा।गोया उसकोनागो॥अ५
क्या वक्सीसकरेगातुमको । कसुमल केसरीवागो
धर्म तख्त के उपर बैठे । पकडे चारों पागो ॥ अ६
तप जप खरची बान्धी पल्ले । पाप अष्टादश त्यागो॥
हीरालालको जन्म सुधार्यो । श्वामीजीबडभागो॥अ७

॥ पद–शिक्षा किसे लगे ॥ देशी वरोक्त ॥

अकल विन, नहीं लागे २ । सतगुरु सीख शुद्ध-
ज्ञान । पुण्य विन० ॥ अकल ॥
आतिश होवे तो तेजी जागे । भस्मीकोक्या थागे॥

पुरुषाकारविना वरदाया। कभीनहींहोवेआगे॥अ॥१
सूखा वृक्षको जल जो सींचे । फलफूल नहीं लागे ॥
मृत्युकको अवाज लगाया । कबू नींद नहीं
जागे ॥ अकल ॥ २ ॥

खोजाको समशेर बन्धाकर। रणजंगमें करे आगे॥
तेग उठावण वेला खोजा । पाछाफिरकरभागे॥अ३
कृपणकी घणी करी बडाइ । दान हाथसे मांगे ॥
नारि बांझके चडे नहीं पानो । खर नहीं बोले
सिंघ आगे ॥ अकल ॥ ४ ॥

अधर्मीको धर्मी बनायां । शुद्ध मार्ग नहीं लागे॥
बारा बर्ष पाणीमें रहेतो । विष विष भाव नहीं-
त्यागे ॥ अकल ॥ ५ ॥

कायर को वैराग्य चढावे । कर २ सिन्धू रागे ॥
हीरालाल सूरवीरहोवे तो। तुर्तविपतीको त्यागेअ॥६

॥ विनयका पद आऊखो टूटाने सांन्धो को नही रे ॥ यह देशी ॥

विनय करी जे गुरुदेवकोरे ।अहोनिशचरण के मायरे॥
ज्ञान दर्शन वली तपतणोरे।चारित्रनिर्मळथायरे॥वि१
संजोग छोडी दो प्रकार कारे। मातपिता ने घर नाररे॥
अभ्यंतर विषय कषायकोरे। त्यागी जो होवे अणगाररे
॥ विनय ॥ २ ॥
विनयआराधेआचार्य कोरे। होवेअंगचेष्टाकोजाणरे॥
वल्लभ लागे गुरुदेवकोरे। जाणे ज्यों जीवन प्राणरे
॥ विनय ॥ ३ ॥
मुख अरि बचन प्रकाशतोरे। दुष्ट आचार अयोगरे॥
सड्या कानका श्वान सारखोरे। निर्वछ तससबलोगरे
॥ विनय ॥ ४ ॥
भाजन भर्यो छोडेकणतणोरे। शुकर भिष्टा ज खायरे॥
उच्च आचार जो विनय तणोरे। मूकीने नीच नीचो जायरे ॥ विनय ॥ ५ ॥

इमजाणीनेविनयसाचवोरे। जाणीनिजहितउपकाररे॥
पुत्रने शिष्य जाणो सरीखारे । आपे ते ज्ञान भन्डाररे
॥ विनय ॥ ६ ॥

अहंकारी क्रोधीप्रमादीहोवेरे। रोगीने आलसीजाणरे॥
शिक्षा नहीं पाभे गुरुज्ञानकीरे। ये पांच बोलके प्रमाणरे
॥ विनय ॥ ७ ॥

आठबोलकरशिक्षापामियेरे । हंसेनहीइन्द्रीदमनहाररे॥
मर्म न बोले कोइ पारकारे। छोटा मोटा टालेअतिचाररे
॥ विनय ॥ ८ ॥

लोलपी नहीं रसना तणोरे। होवे जे घणा क्षम्यावंतरे ॥
झूठ न बोले साच सुहामणोरे। थासे जो एहवो कोइ
संतरे ॥ विनय ॥ ९ ॥

शंख ने दूध दोइ ऊजलारे । शोहे छे जगत् मझाररे॥
त्यों सुपात्रने ज्ञान सीखव्योरे । होवे घणा को आधाररे
॥ विनय ॥ १० ॥

इम अनेक ओपमा करीरे । बहु सुत्री बहु गुणवानरे ॥
तारे निजपर आतमारे । कहां लग कीजे वखानरे
॥ विनय ॥ ११ ॥

गर्गाचार्यकेशिष्यपांचसोरे। मिल्याकुपात्रक्केशीआयरे॥
गलियार गद्धा बैल सारीखारे । काम भोलायां नट
जायरे ॥ विनय ॥ १२ ॥

आचार्य मनमांही चिंतव्योरे । छोडयो अवनितां-
को संगरे ॥
तप जप करणी कीधी निर्मळीरे । दिन २ चडता रंगरे
॥ विनय ॥ १३ ॥

करेआशातना गुरुदेवकीरे । बोले जो अवगुण वादरे॥
अहितकारी होवे तेहनेरे । ज्यों सर्प छेड्या विषवादरे
॥ विनय ॥ १४ ॥

धर्मवृक्ष मूल विनय छेरे । सींच्या स्युं वधे परिवाररे ॥
पान फूल शाखा नीपजेरे। पामे मोक्ष सुखश्रेयकाररे
॥ विनय ॥ १५ ॥

प्रदेशी राजाजी, चौकीदार चेतावे हो ।
नगरीका लोक जगावे हो प्रदेशी राजाजी ॥ ६ ॥
प्रदेशी राजाजी, दिन ऊगो आँख उघाडो हो ।
पाछे कौन आसी तुम लारो हो प्रदेशी राजाजी ॥७॥
प्रदेशी राजाजी, घरभवकी या खरची हो ।
पल्ले बान्ध्या विन किम सरसी हो प्रदेशी राजाजी॥८॥
प्रदेशी राजाजी, गाफल गोता खावें हो ।
जाका नाव दरियामें जावे हो प्रदेशी राजाजी ॥९॥
प्रदेशी राजाजी, यो अवसर मति चूको हो ।
माया जालकी ममता मूको हो प्रदेशी राजाजी ॥१०॥
प्रदेशी राजाजी, हीरालाल कहे सोही स्याना हो ।
अपना हित हितको जाना हो प्रदेशी राजाजी ॥११॥

॥ पद—आत्मध्यान ॥ राग—धनाश्री ॥

आत्मध्यानधरोमनमेरा।नरभवलीजोसुधारी रे॥आ.॥
जगत्का सुख अनित्य सब जाणो। लालची हुवा
नरनारी रे ॥ आत्म ॥ १ ॥

सात धातूको पिंजर बनियो ।
क्या थें काया सिणगारी रे. ॥ आत्म ॥ २ ॥
सज्जन संपत मिलत बहू तेरी ।
क्या तूं लाया इखत्यारी रे ॥ आत्म ॥ ३ ॥
दुःख निवारतारे जो हमको ।
उन पुरुषोंकी बलिहारी रे ॥ आत्म ॥ ४ ॥
कहे हीरालाल निहाल करो निज ।
मक्सद लेना विचारी रे ॥ आत्म ॥ ५ ॥

॥ पद—समता गुण दर्शक ॥ अंतर मेल मिट्यो नहीं मनको ॥ यह देशी ॥

लोभ लालचकी लाय बुजावो ।
पीवो उपशम रस प्यालारे ॥ टेर ॥
पीवत प्याला मन मतवाला ।
मांहे भरिया मशालारे ॥ लोभ ॥ १ ॥

भूल गयो भर्मना में भगवंत ।
जो दुःख मेटनवालारे ॥ लोभ ॥ २ ॥
रात दिवस तूं करत है धंधो ।
कूड कपट करी जालारे ॥ लोभ ॥ ३ ॥
सज्जन वोही सब दुःख मिटावे ।
अंतःकरण से वाहलारे ॥ लोभ ॥ ४ ॥
पुद्गल सुखमें सबर न आवे ।
इन्द्रादिक भूपालारे ॥ लोभ ॥ ५ ॥
कहे हीरालाल दयालसे अर्जी ।
दुर्गतीका देवो टालारे ॥ लोभ ॥ ६ ॥

॥ पद–निंदा दुर्गुण राग–अलीयामारु–मल्हार ॥

अर्जी, निंदककी नीत खोटी ।
यो तो बात बनावे सांची झूंटी ॥ टेर ॥
सीताजी सिर दोष चडायो ।

शोकां मिल सला घोटी ॥ निंदककी ॥ १ ॥
सुभद्राजीको कलङ्क लगायो ।
सासू ग्रही जिम चौटी ॥ निंदककी ॥ २ ॥
दुर्जन का कोइ दाव लगे तो ।
ज्यों बाज पाइ मांस बोटी ॥ निंदककी ॥ ३ ॥
निंदक मैला सबही हैलो ।
जिम भरी अशुचिये कोटी ॥ निंदककी ॥ ४ ॥
निंदक निंदा करतही डोले ।
जब जीमे अहार रूचे रोटी ॥ निंदककी ॥ ५ ॥
रात्री दिन छल रहे ताकतो ।
जिम बुगलो ताके मच्छी मोटी ॥ निंदककी ॥ ६ ॥
कहे हीरालाल चाल चतुरनकी ।
गुण ग्रह जो समज मोटी ॥ निंदककी ॥ ७ ॥

॥ पद—कलियुग दर्शक ॥ राग—होली ॥

कलयुगमें पाप अति छाया । कलयुगमें ॥ टेर ॥

मात पिता गुरु देवकी भक्ति ।

घट गइ कलयुगके आया ॥ कलयुगमें ॥ १ ॥

बेटीके साटे बाप परणियो ।

नानीसी लाडी घरमें लाया ॥ कलयुगमें ॥ २ ॥

बेची पुत्रीको व्याव रचायो ।

बुढ्ढा बींद परणवा आया ॥ कलयुगमें ॥ ३ ॥

गौ घातिक नर दुष्टकी सेवा ।

राजा अतित कर दुःख पाया ॥ कलयुगमें ॥ ४ ॥

मेघवृष्टी दुर्भिक्ष दिखावे ।

अकाले वर्षे बिन चहाया ॥ कलयुगमें ॥ ५ ॥

लाज शर्म नहीं रही लोकांमें ।

बोले बके जैसो मद पाया ॥ कलयुगमें ॥ ६ ॥

कुगुरुको देख भूत जिम नाचे ।

सत्पुरुषोंको देखकर घुरीया ॥ कलयुगमें ॥ ७ ॥
इत्यादी लक्षण कलयुगका ।
सतगुरुजी मुखे फरमाया ॥ कलयुगमें ॥ ८ ॥
कहे हीरालाल ऐसे कलयुगमें ।
जैन धर्म कल्पवृक्ष छाया ॥ कलयुगमें ॥ ९ ॥

॥ पद–जरा गुण दर्शक–चेतन चेतो रे–देशी ॥

जरा आईरे२ तूं चेत चितानन्द तज गुमराइरे ॥ टेर ॥
गई अवस्था जोबनियाकी । आयो बुढापो वैरी रे ॥
कायापुरीको किल्लो लियो । चउदिश घेरी रे ॥ ज १
बेटा बेटी मुख नहीं बोले । बुढ्ढो हेला पाडे रे ॥
घरकी त्रीया मुख मचकोडे । जगा बिगाडे रे ॥ ज २
सारो दिन वैसी रहे घरमें । बाहिर क्यों नहीं डोले रे ॥
घरका माणस सामां बोले, । शंकादि खोले रे ॥ ज ३

मांगे खीचडी मेले राबडी । पीवे सेहती सेहती रे ॥
दंतपुरीका किल्ला पडिया । शिर छाइ सफेती रे ॥ ज ४
अठी वठीने जोवे डोकरो । जोर कांइ नहीं चाले रे ॥
नाक झरे आंखे कम सूझे । खाट पोलमें डाले रे ॥ ज ५
स्वार्थकी सगाइ भाई । बुद्धाने कुण पूछे रे ॥
देली चडता दीसे डूंगरी, । पगल्या धूजे रे ॥ ज ६
डोकरियाके बान्ध्यो टोकरियो । काम पडया हलावे रे ॥
अन्नपाणी ऊंचास्यूं मेले, । पडयो २ पस्तावे रे ॥ ज ७
जरा प्रभावे बुद्धि बिगडी । धर्म करणको ढेटो रे ॥
मायाजालमें फसियो मूर्ख, । पापमें सेंठो रे ॥ ज ८
जब लग काया रहे निरोगी । इन्द्रिय पांचो पूरी रे ॥
हीरालाल कहे लावो लीजे, । कर्म चक चूरी रे ॥ ज ९

॥ पद—मनको सद्बोध. देशी—वणजाराकी ॥

श्री जिनराज अर्ज हमारी ।

मन नहीं माने म्हारी केण हो ॥
गुरुजी हां हो जिनन्दजी ।
किण विध राखूं यो मन वारी हो ॥ टेर ॥१॥
चंचल चोर तणी परे चाले ।
मन पवन गति वेग हो ॥ गुरुजी ॥२॥
भक्ती में भंग करे मन मेलो ।
तो वार २ समझावूं हो ॥ गुरुजी ॥३॥
मन तुरंग तणी परे चाले ।
यो भटकत रहे दिनरात हो ॥ गुरुजी ॥४॥
पुद्गल रचना या संपत परकी ।
तो देख २ ललचावे हो ॥ गुरुजी ॥५॥
ध्यान चुकाय डिगाइ डाल्यां ।
मुनिवर केइ गुणवंत हो ॥ गुरुजी ॥६॥
मेघ मुनीको मन डिगायो ।
तो अषाढ भूती घर आया हो ॥ गुरुजी ॥७॥

अरणक मुनीको मन ललचायो ।
तो और घणा भरमाया हो ॥ गुरुजी ॥८॥
प्रसन्नचन्दजी परिणाममें चडिया ।
तो ततक्षिण केवल पाया हो ॥ गुरुजी ॥९॥
ज्ञानसे बान्धी धैर्य धर राखो ।
तो संयम के घर लावो हो ॥ गुरुजी ॥१०॥
कहे हीरालाल मन वश कीजे ।
तो मोक्ष तणा फल पावो हो ॥ गुरुजी ॥११॥

॥ पद—अभिमानीके लक्षण ॥ राग महाड ॥

फोकट बादलियां जिम गाजे ।
तेहनो हृदय निपट नीलाजे ॥ फोकट ॥ टेर. ॥
मुखडे बचन बोले अति मीठो । काज सुधारुं आजे॥
दमडी देतां जीवडो दुःखे । परमार्थके काजे ॥फो॥१॥

पाच जनामें बेठी आगे । बात बनावे ताजे ॥
धर्म क्रियामें कपट करंतो। सुखियो सबमें बाजे ॥फो॥२॥
धर्म उन्नती करवा सारु। कार्य करंतो लाजे ॥
मृत्युक कारणव्याव वगैरा। मान बडाइ छाजे ॥फो॥३॥
गर्व करी इम बोले गेहलो । बान्धू समदर पाजे ॥
कामतणोकोइअवसरआयां। पाछोतोकिमभाजे॥फो४
स्वधर्मीको साज देतां । दान सुपातरियां जे ॥
हीरालालकहेऐसामांणसको।किमसुधरसीकाजे॥फो५

॥ गजल–महमदी फरमान ॥ राग–कव्वाली. ॥
सभीका प्राण बचाना। बजन किसको न करवाना॥
खोज दिल बीच अहो भाइ । सभी शास्त्रके मांही१
महमदका जोफरमानां। कहां लिखासो भी वतलाना॥
हुक्म हजरतका वोही । तोरात अंजिल फरकाना२
कांटा तूं लगामत किस्के। सभी दिल दर्द है जिस्के॥

तीर तेरे हक पर होवेगा। किसीपर भूल नहीं जाना३
पेशाबी पैदास जो गोया। वही नापाक है गोया ॥
कुन्द गौस्त के खुरशद । वही दोजख पाया ना ४
विगाना गोस्त जो खाते। बचसल सनासे बनवाते ॥
तुरा अस्तगौस्तको चहाते।फिक्कर तुजकोनहींलाना५
अपनी जान है जैसी।सभी की समज लो वैसी ॥
अगर खातिर नहीं तुजको।तो तेरी गरदन पर धराना६
अजा बुलवाकर क्योंमारो। तो अपना पुत्रक्योंप्यारो॥
चिडियां चित २ करती है।सभीपर महर तो लाना ७
पैदाजिसने किया तुमको।नेकीपर रहना हरदमको ॥
किसीका गला मत काटो।मियां यही महर कहलाना८
चस्म तुम हिये के खोलो।जिक्र दिल बीच यह तोलो॥
हीरालाल ज्ञानसे गावे। बहिस्त के दर खुलाना ९

॥ पद-अनित्यता दर्शक ॥ राग-ठुमरी ॥

कंहा डोलत अभिमान गुमानी ।
तेरे सिरपर काल निशानी ॥ कहां ॥ टेर. ॥
चहूं गति भटकत शट नर अटकत ।
जैसे बैल वहे घानी ॥ कहां ॥ १ ॥
तन धन जोबन घनजिम छिनछिन ।
निश भर चपला चमकानी ॥ कहां ॥ २ ॥
पलकमें पलटत जोबन किम टिकत ।
जैसोपूर चढे पानी ॥ कहां ॥ ३ ॥
मात और तात भ्रात सब सज्जन ।
जैसी बाट बटाउवानी ॥ कहां ॥ ४ ॥
कहे हीरालाल दयालू मयालू ।
पावत अमृत जिनवानी ॥ कहां ॥ ५ ॥

॥ जक्त जंजाल दर्शक–गजल ॥

इस जक्तके जंजाल म्यान भूलना नहीं ।
नूर देख२ दरपनमें फूलना नहीं ॥ टेर ॥
यह संसार हाट घाट जैसा ठाट है सही ।
ठग लेत दुनियादारी मीठे बोलतो कही ॥इस॥१॥
यह जौबनका जोर शोर इसमे राचना नहीं ।
दया दान मान पान बिन यूंही तो गई ॥इस॥२॥
यह साफ दिल रख जाप कीजिये वही ।
न कीजिये कुसंग घर पारके जई ॥ इस ॥ ३ ॥
दया पाल पाप टाल ज्ञान रंगमें रही ।
इम कहे हीरालाल ख्याल मोक्षका यही ॥इस॥ ४ ॥

॥ पद–धारी नही होवे ॥ राग–आसावरी ॥

तेरी धारी कैसे धेररे । तूतो नाहक भ्रमना कररे
चहावत है संपत तूं सघली । अपनेही काज घेररे ॥

होन हार पदार्थ प्रगटे । तूं क्यों भूला फिररे ॥ते॥१॥
संभूम चक्री विषापाइ । रस रामसे डेररे ॥
राज लियो छे खंडको सारा । जो वैरीको दूर
करे रे ॥ तेरी ॥ २ ॥
कंस कृष्णका झगडा भारी । कैसा दाव धेररे ॥
फते हुइ मुरारीकी सारी । कंस गयो यम घेररे॥ते॥ ३
पुफदंत वच्छ राजको डाल्यो । समुद्र जल भेररे ॥
राजा दशरथ छलवा काजे । राक्षस होंस भेररे॥ते॥४॥
अंतर आतमध्यान लगायां । अपनो काज सेररे ॥
कहे हीरालाल जहाज जक्तकी । आपोआप तीररे
॥ तेरी ॥ ५ ॥

॥ उपदेशी लावणी छोटी कडीमें ॥

यह कंचन वरणी काय पाय सुन प्यारे ।
पाय नर भवको अवतार जन्म क्यों हारे ॥टेर.॥

यह सातो व्यसन संग तजोरे भाइ ।
जो कुसंगत से लगे दाग तुम तांइ ॥
अब क्यों भूला है भरम मायाके मांइ ॥
तेरा जोबन जोर चला छिन्न मांइ ॥
सकुन तकीये वर उम्मर नहीं पाय दारे ॥पाय॥१॥

अब साधूजी महाराज सुनावे जिनवाणी ।
तुम रखो पक्की परतीत झूठ मत जाणी ॥
अब करो सखावत सुपात्र हिये हुलसानी ।
और करो कर्मसे जंग खडे मैदानी ॥
यों करो भक्ति भगवंत की जन्म सुधारे॥पाय॥२॥

यह फिरे कालका चक्र खोफ जरा लाना ॥
निज नाम धनीका लगा देना निशाना ॥
मत पीवो मदिरा तजो मांसका खाना ॥
क्यों करते हो परद्वार पर आना जाना ।
मतकरोसोबत जाहिलोकी जन्म बिगारे॥पाय॥३॥

यह जीना जिन्दगी तो यही फरज है तुमको।
भक्ति प्रभूकी याद करो हर दमको ॥
यह क्रोध मान मद मोह जीतलो मनको ॥
करो ज्ञान ध्यानका युद्ध हटादो यमको।
कहे हीरालाल मतपडो भर्म मिटारे ॥पाय।४॥

॥ लावणी उपदेशी—वरोक्त चालमे ॥

तूं क्यों करता हे मान। जिन्दगी जीना।
तेरा चला जाय जोवन। पानीका फीना ॥टेर॥
बडे भूप कही गर्भके अन्दर छाया।
होगये दुनिया में जैसे बदलकी छाया ॥
चिलका बीजली रेन मे स्वपना आया।
क्या लगती है देर झबक झबकाया ॥
रावणके सुतादिक केइ हुवे नखमीना ॥तेरा॥१॥
महलों में होताथा राग चमर ढुलाता।

भरा रहता था दरबार पार नहीं आता ॥
दिन रेन विषय में रहते रंगभर राता ।
ले गया उनको भी काल पार नहीं पाता ॥
धरा रहा उन्होंका ठाठ राजका कीना ॥ तेरा ॥२॥
जब उडेहंस समुदरको सूखा देखी ।
कहा रहा नाम निशान जक्तमें एकी ॥
केइ हुवा तखत मालिक अलीजा लेखी ।
बने दुर्गतीके मिजमान जो करते सेखी ॥
ऐसे करो अक्कलमें गौर हुवे परवीना ॥तेरा ॥ ३ ॥
यह स्वार्थका संसार सज्जन परिवारे ॥
ममताकी पोट क्यों धरतें शिर तुम्हारे ॥
सद्गुरुकी सीख तूं मान मानरे प्यारे ।
यह दया धर्म दिल धार पार उतारे ।
हीरालाल कहे ऐसे होवो ज्ञानके भीना॥तेरा ॥४॥

॥प्रभुसे अर्जी॥खाजा लेलो खबरिया हमारीरे–देशी ॥

प्रभू सुनो अर्जिया हमारी रे ।
लेलो २ खबरिया हमारी रे ॥ प्रभू ॥ टेर ॥
जिनवरके नामसे होत ऋद्धि सिद्धि ।
पातक दूरकर मुक्तिको लीधी ॥
मिटेगी २ जन्म मरणकी वारी रे ॥ प्रभू ॥ १ ॥
क्रोड भवांका दुःख मिटे आपके दीदारसे ।
जन्म जरा रोग मिटे क्रियाके उद्धारसे ॥
खुलेगी २ मुक्तिकी वारी रे ॥ प्रभू ॥ २ ॥
क्रोध मान दोई डोले आपकी फिराकमें ।
लोभ माया दोई छूटे चेतन्यको सुराक में ॥
लुट गये २ जगत संसारी रे ॥ प्रभू ॥ ३ ॥
धर्म संग रहे रंग दिलसे विचारी ।
धन गाजे मोर नाचे ऐसी प्रीती प्यारी ॥
खुलेगी २ अंखियां हमारी रे ॥ प्रभू ॥ ४ ॥

आप नामको वश रखो ममताको मारी ।
हीरालाल सुख चहावे अर्ज तो गुजारी ॥
हटेगी२ कुमतिकी नारी रे ॥ प्रभू ॥ ५ ॥

॥ लावणी—त्रियाचरित्र ॥ चाल—खडी ॥

अमल अकल तुम सुनो चतुरनर ।
नारीके हुक्ममें नहीं रहना ॥
तुच्छ बुद्धि त्रियाके तनमें।भेदउसीकोक्यादेना ॥ टेर॥
पद्मावती राजा कोणिककी । थी पटरानी नारजी ॥
हार हाथी लेनेके वास्ते । कहा जो वारम्वारजी ॥
राजा कोणिकने नहीं विचारी । भाईसेकरीतकरारजी॥
वहेल कुंवर उठ गये विशाला।नाना के दरबारजी ॥
जब दोनों राजाके युद्ध हुवा था।शास्त्रमें अधिकारजी॥
हार हाथी हाथ नहीं आया । हुवो घणो संहारजी ॥
तजोभ्रानभजोभगवान।सुनीगुरुज्ञानाहियेगहना॥तु१॥

मुनि एवंता आया गोचरी। कंशके महेलां मांयजी॥
जीव जसा जब फिर गइ आडी। करीकु बुद्ध वतलायजी।
भाइ तुम्हारा राज करत है। थे डोहलो घरद्वारजी॥
एक मात ओर तात तुमारा। कौनलेखेकर्मवटायजी॥
जब मुनीने ज्ञान विचारा। होतव जैसा दरशायजी॥
पुत्र नणंदका होसी सातमां। थने देसी खूण वेटायजी॥
होनहारनहींमिटेकिसीका। नामप्रभूकाभजलेना॥तु.२॥
राजा रावणकी वहिन पापनी। बुरी सीख बतलाइ है॥
वैठ विमाने चले राजजी। सीता लेनेको आयजी॥
करी कपट सीताको लीधी। लंकाके बागमें लायजी॥
हनुमंत उसीकी खबर करी है। सीताको लख पायजी॥
रामचन्द्र लस्कर ले चढिया। जब रावण घबरायजी॥
बान्ध लिया परिवार उसीका। वोभी नर्के सिधायजी॥
ऐसाहालभालुमहुवाहै। चरित्रत्रियाकाक्याकहना॥तु३
ओर सूत्रोंमे ऐसीका वर्णन। समझो चतुर सुजानजी॥

शामाराणीके कहने सेती। हुवा घणाका घमशानजी॥
अबला नाम सबलेको जीते। तीन लोक दरम्यानजी॥
ब्रह्मा विष्णु शंकर इंदर। छत्रपति कौन ज्ञानजी ॥
पुरुष हुवा है पुण्यवंत केई। केई नार्यां गुणखानजी॥
धर्मध्यान जो करे तपस्या। देवे सूपात्र दानजी ॥
हीरालाल हरदम सुनावे। सुधारस शिक्षावेना ॥तु.४॥

॥ चरित्रावली ॥

॥ भरत बाहूबल चरित्र ॥ लावणी—चाल दूणकी ॥
यह दया दान परजाको पूर्ण कीनी।
महाराज ऋषभजी संयम लीनोजी॥
दिया भरतेश्वर को राज।
काज आतम को कीनोजी ॥ टेर ॥
यह बाहूबल बलवंतको देश उत्तरमें ॥ महाराज॥

तख्त सिला एक नगरीजी ।
और रहे अठाणुं पुत्रजिनोंको दे दी सगरीजी ॥
यह ब्राह्मी सुन्दरी पुत्री आपकी दोई ॥ महाराज॥
रही वो अकनकं वारीजी ।
इन के नहीं कर्मका भोग। जाउंजिनकी बलिहारीजी॥
अब पुण्योदय भरतेश्वर छःखन्ड मांही ॥ महाराज॥
वैरीको किया आधिनोजी ॥ दिया ॥ १ ॥
यह चक्र रत्न नहीं आवे आपठिकाने ॥ महाराज॥
भाईसे करी तकरारीजी ॥
देखी भरतेश्वरकी खेंच । आदम पे गये पुकारीजी ॥
यह ऋषभदेव उपदेश देइ समझाया ॥ महाराज ॥
अठाणुं कारज सार्याजी ॥
रह्या बाहूबल सरदार । बांका तरवार्याजी ॥
नहीं माने आण परवाना परापठाया ॥ महाराज॥
सैन्य पर हुकमज दीनोजी ॥ दिया ॥ २ ॥

यह तीन लक्ष घर पुत्र बाहूबल जाया ॥महाराज॥
केइं विद्याधर आयाजी ॥
भिडगया मोरछा रण खेत। हटे नहीं पीछा हटायाजी॥
जब भरतेश्वरजी चक्रको चाक चलायो ॥ महाराज॥
चक्र जायफिर २ आवेजी ॥
नहीं चले वंश पर जोर। देवता ऐसा चेतावेजी ॥
एक अनल विद्याधर अनलकी बर्षा कीधी॥महाराज॥
चक्र जाइ उत्तमांग लीधोजी ॥ दिया ॥ ३ ॥
जब इन्द्र आय दोनों को यों समझाया ॥महाराज॥
किसीको नहीं खपानाजी ॥
तुम करो आपसमें युद्ध। जीत होवे बलवानाजी ॥
जब केइ तरहका किया युद्ध नहीं हार्या ॥ महाराज ॥
बाहूबल मूंठ उठाईजी ॥
तब इन्द्र पकडलियो हाथ। सोचो दिलके मांहीजी॥
यह बात हुइ नहीं होवे जग के मांही ॥महाराज॥

रस समताको पीनोजी ॥ दियो ॥ ४ ॥
यों कियो लोच सब सोचको अलग हटाया॥महाराज॥
भरतेश्वर मन विचारीजी ॥
मत मानो हमारी कहन। भोगवो ऋद्धि तुमारीजी ॥
नहीं माने बाहूबल बातके संयम लीनो॥महाराज॥
दिलमें आयो अभिमानोजी ॥
नहीं पड़ूं पांव लघु भ्रात। वनमें रह्या धर ध्यानोजी॥
हीरालाल कहे अब करो मोक्षकी करणी॥महाराज॥
आप हो ज्ञानका भीनाजी ॥ दिया ॥ ५ ॥

॥ लावणी–बाहूबली मुनीको ब्राह्मी सुन्दरी
सतियों का सद्बोध ॥ चाल वरोक्त ॥

यों कहे ऋषभजिन ब्राह्मी सुन्दरी दोई ॥महाराज॥
मुनिको जाइ समझावोजी ॥
थां लीनो संयम भार। मान तो परो मिटावोजी ॥टेर॥

यह करी वचन प्रमाण आण जिनवरकी॥महाराज॥
वीर के पासे आवेजी ॥
मुनि धर्यों ध्यान अडोल।पलक तो नाहीं मिलावेजी॥
थां तजो सभी संसार भार उठायो ॥ महाराज ॥
गज पर कांई चड बेठाजी ॥
गया सेल शिखर उतंग । अबे तो आवो हेटाजी॥
या आत्म करणी करो पार उतरणी ॥ महाराज ॥
सुख मुक्तिका पावोजी ॥ थां ॥ १ ॥

यह कठिन परिसह सह्या वनके मांही ॥ महाराज॥
शीत और तापे सुखानाजी ॥
रही वृक्ष लता लपटाय । अंगपर आबका पानाजी॥
यों सर्व दिवस विदित ध्यानके मांही ॥ महाराज॥
अबे तो आवो ठिकानेजी ॥
जब होवेगा कल्याण । केवल ज्ञान उपजे थानेजी ॥
यों करे विनंती लुल २ चरणें लागे ॥ महाराज ॥

प्रभूके पास सिधावोजी ॥ थां ॥ २ ॥
यह क्रोध मान जो चारों मोक्ष अटकावे॥महाराज॥
ऐसी या सीख सुनाइजी ॥
झट उतर गयो अभिमान । दिल की थी गुमराईजी॥
अब जावूं जिनेन्द्र के पास मुनियोंको वंदूं॥महाराज॥
पांव जब एक उठायोजी ॥
तब ज्योति अधिक उद्योत। ज्ञान केवल प्रगटायोजी॥
यह बाहूबल केवली एम कहवाया ॥ महाराज ॥
सभीमिल मङ्गल गावोजी ॥ थां ॥ ३ ॥
यह किन्यादेव मोहत्सव दुंदभी वाजी ॥ महाराज॥
आया समवसरणके मांहीजी ॥
श्री आदीनाथ महाराज । सभामें दिया फरमाईजी॥
यों लक्ष चउरासी पूर्व आउखो मोटो ॥ महाराज॥
अटल अविचल पद पायाजी ॥
श्री रत्न चन्दजी महाराज। शिष्यको ज्ञान भणायाजी

श्रीजवाहरलालजी महाराजपरमउपकारी॥महाराज॥
हीरालाल सब सुख पावोजी ॥ थां ॥ ४ ॥

हरिवंश—चरित्रावली.

॥ कृष्णलीला—गाफिल मत रेहरे—यह देशी ॥

कन्हैयो रमवाने जावेरे ।
गोकुलमें धूम मचावेरे ॥ कन्हैयो ॥ टेर ॥
मात यशोदाकी आज्ञा लीनी
सब लडकोंसे सला कीनी ॥
और कन्हैयो भंग भी पीनी ।
जमनाके घाट पर आवेरे ॥ क ॥ १ ॥
लगी चोट गेंदके जबर ।
ऊंची गइ असमानके ऊपर ।
डूब गइ काली द्रोह अन्दर ।
गवालिये खडे २ दिखलावे ॥ क ॥ २ ॥

कूद पड़े कन्हैया दपटी ।
गेंद लिवी नागने झपटी ॥
कहे नागनी तूं है कपटी ।
जब नागनी नाग जगावेरे ॥ क ॥ ३ ॥
जागा नाग सहस्र फण वाला ।
किया युद्ध नहीं खाया टाला ॥
नाथा नाग श्रीनंदके लाला ।
ग्वाल्या थें थें करने आवेरे ॥ क ॥ ४ ॥
महिया वेंचन चली है गुजरी ।
वक्त हुईथी जब बडी फजरी ॥
रट कर कर मटकी पकरी ।
ग्वालन कमरसे लचकावेरे ॥ क ॥ ५ ॥
फार लोप मत करो कन्हैया ।
मुफ्त माल मत खावो माहिया ॥
कंश भूप की आण मनैया ।

कहां अपनाही जोर चलावेरे ॥ क ॥ ६ ॥
कौन पुकार सुनेगा इनकी ।
क्या परवाह है हमको किनकी॥
खबर लूंगा दुश्मन है उनकी ।
ऐसे मूंछो पर हाथ लगावे ॥ क ॥ ७ ॥
कहा कहिये सुन मेरी सजनी ।
नंदके ललवाने घेरी लीनी ॥
जोर जुल्मी हमसे कीनी ।
ऐसे राहं विच लूट मचावे ॥ क ॥ ८ ॥
खेल ख्याल आया गिरधारी ।
मात कहे कुरबान तुम्हारी ॥
हीरालाल कहे कंश की ढारी ।
वो ढारी कैसे टरावे ॥ क ॥ ९ ॥

॥ जीव जसाका एवंता ऋषिसे सवाल ॥
चंदा प्रभु जगजीवन अंतरयामी ॥ यह देशी ॥
सुनो देवरजी, संयम छोडी महेल पधारो-
महाराजीया ॥ टेर ॥
मुनिवर आया गोचरी । भोजाइ आडी फीरी ॥
देवरसूं करे मस्करी ।
ये स्वांग धरीने कांइ डोलो घरोघरी ॥ सुनो ॥१॥
पाय अणवाणे चालनो । उघाडे मस्तक हालनो ॥
दोष बयांलीस टालनो ।
ऐसो कष्ट आचार क्यों पालनो ॥ सुनो ॥ २ ॥
जाया एक मातारा । अंतर नहीं कोइ ब्रातांरा ॥
क्षत्री कुल जादू जातांरा ।
थांके लिख्या लेख हाथ पातरा ॥ सुनो ॥ ३ ॥
मार्गमें ऊभी रही । हाथ दोइ आडा दई ॥
आगे जावां देस्यूं नहीं ।

सूतो सिंह जगायो कटुक वचन कही ॥सुनो ॥४॥
चंदन शीतलता सोहवे । अंत मिथ्या अग्नि होवे ॥
होन हार बुद्धि ढोवे ।
हीरालाल ज्ञान हृदय जोवे ॥ सुनो ॥ ५ ॥

॥एवंता ऋषीका जीव जसासे जवाव–देशी वरोक्त॥
सुनो भोजाई,गर्व न कीजे। नहींलीजे छेहसाधूतणो॥
सुनो भोजाई, गर्व न कीजे ।
धन यौवन माया तणो ॥ टेर ॥
तूं बोलेगर्वे धरगुमराई। थारे मान दिशा मनमेंआई॥
थारी दीसे थोडी ठुकराई ।
फूल फूले जो जासी कुमलाई ॥ सुनो ॥ १ ॥
मन मान्या मङ्गलबधावना।कररह्या सहुआपआपना॥
जो जासे सोही आवना ।
चलकादार चूडो दीसे पावना ॥ सुनो ॥ २ ॥

गोबरमें कीटक जिम फूलेछोतूं मानशिखरपर डोलेछे॥
कूवा के मेंडकने तोले छे ।
अधिका से अधिका नर बोले छे ॥ सुनो ॥ ३ ॥
थामस्नक गुंथावे जानारी । पुत्ररत्नने जणसी या सारी॥
मानणो नाम होसी गिरधारी ।
चूर्ण चाल चले करसी हुस्यारी ॥ सुनो ॥४॥
सुनजीवजलाभिनवटकाली॥छो उमागी अलगी सरकानी
शीलमसे पुकार करी आनी ।
हीरालाल गावे मुनिवर बानी ॥ सुनो ॥ ५ ॥

॥जीव जरा और संगमजानका विचार—देशी बगेरा॥
सुनो प्रिनमजी! बाड तुम्हारा आया हमपर गौत्रगी ॥
ओरी प्रितमजी ! वचन कठिन कहीने ।
गया पाछा फिरी ॥ टेर ॥
गोतामोल्पमें हमडीकहीं। बालेशीस वणी आइमनमहीं॥

दे गया सराप जो दुःखदाई ।
हूं बेठी रही समता लाई ॥ सुनो ॥ १ ॥
कंथ कहे तूं सुन प्यारी । बात करी अविचारी ॥
भावी बल कोन देवे टारी ।
सुख पाया जो नरनारी ॥ सुनो ॥ २ ॥
कंश मनमें घणो पस्तानो । निस्तारो हमारे करवानो ॥
सभा करी पण्डित आनो ।
मिल गयो बातको सब टानो ॥ सुनो ॥ ३ ॥
पण्डितनेकहीसमझानी । मुनीवरनेजोकहीथीवानी ॥
वासब मिल गइ मिलवानी ।
पुन्यवंत गिरिधारी जन्मे आनी ॥ सुनो ॥ ४ ॥
हीरालाल कहे सुनलीजो । विन विचार्यो मतकीजो ॥
संतोष सभी जीवको दीजो ।
समता रस प्याला पीजो ॥ सुनो ॥ ५ ॥

॥ थे भाइ साधुका वर्णन—लावणी चाल लंगडी ॥

श्रीनेमीनाथभगवानपधारे।भव्यजीवोंपेउपकारकरण।
भद्दलपुरकेबागमें । रच्योदेवता समवसरण ॥ टेर ॥
नागसेठमातासुलसांके । छे नंदनहुवे अतिगुणवंत॥
नलकुंवरसी ओपमा । शास्त्रमें भाखी भगवंत ॥
वाणीसुनीश्रीनेमीनाथकी।संयमलीनेंचा मनखंत ॥
मातापासे आयकर । पूछत मुर्छा हुइ मतीमंत ॥
शेर—सेठ सेठानी इम कहे।सुण वल्लभ छोड इह कंतजी॥
कुल दीपक चन्द्र जैसा। प्राण जैसा अत्यंतजी ॥
चारित्रतोअतिदोहिलो । नहींसोहिलोलगारजी॥
कष्ट करणा सर्व वरणा । करनो उग्रह विहारजी ॥
छुट-बहु भांत किये उपाय कुंवर नहीं मानी ।
जब मात पिता इम कहे लगा एक ध्यानी ॥
मोत्छव कर संयम लियो प्रभू पास आनी ।
हुवे श्री नेमीनाथके शिष्य उत्तम पद मानी ॥

दे गया सराप जो दुःखदाई ।
हूं बेठी रही समता लाई ॥ सुनो ॥ १ ॥
कंथ कहे तूं सुन प्यारी । बात करी अविचारी ॥
भावी बल कोन देवे टारी ।
सुख पाया जो नरनारी ॥ सुनो ॥ २ ॥
कंश मनमें घणो पस्तानो । निस्तारो हमारे करवानो ॥
सभा करी पण्डित आनो ।
मिल गयो बातको सब टानो ॥ सुनो ॥ ३ ॥
पण्डितनेकहीसमझानी । मुनीवरनेजोकहीथीवानी ॥
वासब मिल गइ मिलवानी ।
पुन्यवंत गिरिधारी जन्मे आनी ॥ सुनो ॥ ४ ॥
हीरालाल कहे सुनलीजो । विन विचार्यो मतकीजो ॥
संतोष सभी जीवको दीजो ।
समता रस प्याला पीजो ॥ सुनो ॥ ५ ॥

॥ छे भाइ साधूका वर्णन—लावणी चाल लंगडी ॥

श्रीनेमीनाथभगवानपधारे।भव्यजीवोंपेउपकारकरण।
भद्दलपुरकेबागमें । रच्योदेवता समवसरण॥ टेर॥
नागसेठमातासुलसांके । छे नंदनहुवेअतिगुणवंत॥
नलकुंवरकी औपमा। शास्त्रमें भाखी भगवंत ॥
बाणीसुनीश्रीनेमीनाथकी।संयमलीनोधरीमनखंत ॥
मातापासे आयकर। पूछत मुर्छा हुइ मतीसंत ॥
शेर—सेठ सेठानी इम कहे।मुझ बल्लभ होइ इष्ट कंतजी॥
कुल दीपक चन्द्र जैसा।प्राण जैसा अत्यंतजी ॥
चारित्रतोअतिदोहिलो । नहींसोहिलोलगारजी॥
कष्ट करणी सर्व वरणी । करनो उग्रह विहारजी ॥
छूट-बहु भांत कियो उपाय कुंवर नहीं मानी ।
जब मात पिता इम कहे लगो एक ध्यानी ॥
मोछव कर संयम लियो प्रभू पास आनी ।
हुवे श्री नेमीनाथके शिष्य उत्तम पट प्रानी ॥

मिलत-बेलेरकरेपारना।जिनवरआज्ञाशीशधरण ॥भ॥१
द्वारामतिनगरीआयेनेमजी।वंदनगयेबहुतेनरनार॥
छेमाइयोंकापारनाआया।छटमक्तकियोचोविहार॥
आज्ञामांगीश्रीनेमनाथकी । दोदोमुनिवरहुवेतैयार
फिरता२ आविया।देवकी माता के दरबार ॥
शेर—मुनियोंको देखआतेहुवे।धन्य२गरीबनिवाजजी
विनय भक्ति सामे आइ । करत अपना काजजी॥
थालभर मौदककी । प्राति लाभिया अणगारजी ॥
शुद्ध भावे दान देता । पामे भवनो पारजी ॥
छूट—मुनिराज अहार वेहरीने पाछा फिरिया ।
सिंघाडो दूजो आयो थोडिसी विरिया ॥
म्हारा पुण्योदय दो विरिया पगलाकरिया ।
इम तीजो सिंघाडो देखकर हर्षे भरिया ॥
मिलित—हाथ जोड आडी फिरी रानी ।
अर्ज करे सुनो भवी वरनन ॥ महल ॥ २ ॥

बारह योजनकीलम्बीनगरी।नवयोजनचौडीजानी॥
बलभद्र कृष्णकी जक्तमें।जोडीहैअविछल आनी ॥
द्रव्यवंत दातार घणेरा।जिन—भक्त सुनता वाणी ॥
मुनिराजको क्यों नहिं।मिलियोफिरतो अन्नपाणी॥
शेर—देवकीसे मुनिवर कहे । नगरीमें बहु दातारजी॥
तीन सिंघाडाहमआविया।षटभाइएकउणियारजी॥
कोन मात कोन तात थांरा। कोननगरीकोवासजी॥
भद्दलपुरमें सुलसाजी । नाग शेठ सुत खासजी ॥
छूट—एक एक जणेको बतीस२परणाई ।
वो नार्या कंचन वरणी कमी नहीं कांई ॥
इण भांत ऋद्धि मुनिराज सर्व संभलाई ।
फिर आया नेमजी पास आज्ञा पाई ॥
मिलत—मुनिराजका वचन सुनकर।
राणी आश्चर्य अति करणं ॥ भद्दल ॥ ३ ॥
मुनि एवंता कह्याथा मुझको। अष्टपुत्र पयायांति ॥

ऐसा भरतखन्डमें और दूसरी माता जायंति ॥
सात पुत्र पामी न अङ्गुलग।एककृष्णहैदुःखहरणं॥
निर्णयसागर नेमजिन । पासे जाकर करूं निरणं॥
शेर–रथमें बैठ बंदन गया। लारे घणो परिवारजी ॥
भगवंत संशय टालियो। योतोघणोअधिकारजी॥
पुत्र नहीं कोइ औरका।यहछेही थाराअंगजातजी॥
पूर्वकी बीती हकीगत । भाखी श्री जगनाथजी ॥
छूट–माता सुणी बात हिवडामें हर्ष भरानी ।
निज नन्दन अपने देखनको हुलसानी ॥
करी सबको बंदना फिर आइ नेमजी पासे ।
जिनराज बचनको रही हियेमें विमासे ॥
मिलत–मेहलोंके अन्दर आइ देवकी ।
चिन्ता उपनी चितधरणं ॥ मह्ल ॥ ४ ॥
सात पुत्र मुजअंग ऊपना।एकणकोंनहींहुलराया॥
बालपनाकी बालककी। रमत करी नहीं रमाया ॥

छे पुत्र सुलसाघर वधिया।सोसबजिनवरफरमाया॥
सोलह वर्ष नंदघर रही । अहीर कृष्ण ये कहवाय॥
शेर—माताके पांव लागवा। आया कृष्ण महाराजजी।
माताकी चिन्ता देखकर। गिरधर हुवा नाराजजी॥
हाथ जोडी मान मोडी । पूछियो विरतंतजी ॥
माताने पुत्रके आगे । सब भाखियो अरहंतजी ॥
छूट—माताकी चिन्ता मेटी सब गिरधारी ।
हुवा भ्रात आठमां जगमें वल्लभकारी ॥
महाराज नेमजीकी वाणी सुनी वृत धारी ।
हीरालाल कहे गजमुनिको वंदन हमारी ॥
मिलत—श्री जवाहरलालजी गुरु देव हमारा ।
भवसागर तारण तिरणं ॥ मद्दल ॥ ५ ॥

पद—द्रौपदीका सत्य ॥ राजा हूं मैं कौमका ए देशी॥
वचन सुणी नारद तणो । पद्मनाभ भूपाल ॥

विषया सुखके कारणें । लाया द्रौपदी नार॥ टेर॥१॥
तेलोकर स्मरण कियो । आयो मित्र जो देव ॥
कहे नृप ला देवो द्रौपदी । यही हमारी सेव॥ ब २॥
कहे देव सुणो नृपती । तुम कही बात अजोग ॥
पांडव त्यागीपर पुरुषसंग। कदीय न वांछे भोग॥ब ३॥
राजा बात माने नहीं । नहीं नयणोंमें लाज ॥
पलंग उठायो द्रोपदीको।धर्यो बागे महाराज ॥ ब४ ॥
राजा लेइ परिवारको । आयो द्रोपदी पास ॥
करूं पटराणी माहरी । चालो आप आवास ॥ ब ५॥
सुन राजा म्हारी विनंती । मत्त कर खेंचाताण ॥
षट मास लग माहेरी । करले बात प्रमाण ॥ ब ६ ॥
शोरठ देश द्वारामाति । जहां है हमारे भ्रात ॥
वो आसी वहार माहेरी । ले जासी ग्रही हाथ ॥ ब ७॥
करी मुमानित नृपती । मेली महेल दरम्यान ॥
वेले२पारना । आयंबिल नव पद ध्यान ॥ ब ८ ॥

पांडव पांचो जागिया । खबर करी सब देश ॥
कुंथाजीको भेजिया । श्रीपाति जहां नरेश ॥ व ९ ॥
पाया पत्ता नारदसे । हरी पांडव सब सिंघ ॥
गंगा तटके ऊपरे । लश्कर जेम तरंग ॥ व १० ॥
सुर शक्ति समुद्र तीरी । धातकी खन्ड मझार ॥
अमरकंखा कोटा दीवी । पद्मनाभ गयो हार ॥ व ११ ॥
द्रोपदी ले हाथे दिवी । करी दुशमनको घाण ॥
हीरालाल कहे जीतका । घुरिया तुर्त निशाण ॥ व १२ ॥

॥ पद—कृष्ण विलाप. राग आलिया मारू मलहार ॥

ओजी नीर लावो वीर प्यारा ।
यातो प्यास लगी परिहारारे ॥ टेर ॥
कर पत्र पात्र जलके कारण ।
पहोता सरवर पारारे ॥ नीर १ ॥
हरी पोढय ओडन पितम्बर ।

लाबा अंग पसारारे ॥ नीर २ ॥
शिक्षा उपर बृक्षको छांयां ।
पांव पर पांव उचारारे ॥ नीर ३ ॥
जरद् कुंवर देखी धनुष्य चडायो ।
जाण्यो मृग ते वारारे ॥ नीर ४ ॥
बांय पग परिहार करी के ।
जरद् कुंवरको निहारारे ॥ नीर ५ ॥
मुद्रिका जाइ दीजे भुवाने ।
कीजे सब समाचारा रे ॥ नीर ६ ॥
ले मुद्रिका पाछा फिरिया ।
पलटी प्रणामकी द्वारारे ॥ नीर ७ ॥
रोश करीने धनुष्य चडायो ।
हुवा हरीका अंतकारा रे ॥ नीर ८ ॥
जल लेइने हलधर आया ।
भाईसे प्रेम अपारारे ॥ नीर ९ ॥

देवता आइ दिया समझाइ ।
हलधर लिया संयम भारारे ॥ नीर १० ॥
कहे हीरालाल नेमजीकी वाणी ।
मिलिया छे तंत सारा रे ॥ नीर ११ ॥

॥ राम–चरित्र ॥

।सीताहरण–जटाउ ओद्धार।।देसीख्यालकीषटपदी॥
अमरगतपाया।पंक्षीतिरियोरेसुणी नवकारने ॥आं ॥
सिंह नादजो सांभली सरे । राम गया झट चाल॥
पाछे रावण आवियो सरे । कीधी माया जाल ॥
सीताकोलेचालियोसरे। देखी रुप रसालरे ॥अ॥१॥
तिहां जटाउ पक्षीयो सरे । रहतो सीता पास ॥
भोलावण राम दे गया सरे । सीताकी सहवास ॥
रीसकरीलारां हुवा सरे।दे रावणको त्रासरे ॥अ॥२॥
वरज्यो तो माने नहीं सरे । पंख छेद दियो डार ॥

हलक२ तो करे आत्मा। पक्षी पीड निवार ॥
लक्ष्मण पासेपहोंचियासरे।रामचन्द्रतिणवाररे अ३॥
लक्ष्मण कहे क्यों आविया सरे। कवमें करी अवाज॥
बनमें मेली एकली सरे। कीधो काम अकाज ॥
फिरजावोउतावलासरे।सीतांकनेमहाराजरे ॥अ॥४॥
सीता जोइ पाइ नहीं सरे । जिहां गयाथा वेठाय ॥
फिरतां तिण बनरे विषे सरे। पक्षी पडियो पाय ॥
दयादेखरामचन्द्रजीसरे।श्रीहाथमेंलियोउठायरे॥अ ५
सरणो श्री नवकारको सरे । संभलायो तिण वार॥
प्राण मुक्त पक्षी जा उपनोसरे। चौथा कल्पमझार॥
कहेहीरालालनवकारमंत्रेस।हुवाघणाउद्धाररे॥अ॥६॥

॥सीताजीसे भभीषणकाभाषण ॥लावणी—छोटीकडीमें
अपहरी सीता बनवास । राजा रावणको ॥
मेली लंकागढ के बाग । मोज करी मनको ॥ टेर॥

जब लिया सीताजी आप । अविग्रह धारी ॥
आवे राम लक्ष्मणकी खबर । मुझे सुख कारी ॥
जब करुंगा भोजन । पिवूंगा निर्मल वारी ॥
इम निश्चय कीधो मन । द्रढता धारी ॥
करेनवकरमंत्रकाजापापाप हटायाउनको ॥मेली॥१॥
यह खबर शहरमें हुइ । सभीजन जाणी ॥
रावण लायो पर नार । कुबुद्ध उठाणी ॥
आयो सीताजी पास । बोले यों वाणी ॥
कोन मात तात घरनार । किसे यहां आणी ॥
सीताजाणीपुरुष पुण्यवंतबोलेनरइनको ॥मेली॥२॥
जब मांड हकीगत । सभी हाल सुनाया ॥
राजा रावण छलकरके। मुझे यहां लाया ॥
यह लंका नगरीका । ग्रह जो ऐसा आया ॥
या दश मस्तक रावणके । कातर कहवाया ॥
समझाकर राजा रावनको। भेजादो घरे हमनको मे३॥

यों सुना हाल सीताका । भभीषण राजा ॥
इनकी तो बिगडी बुद्ध । सुधारुं काजा ॥
आयो राजा रावणके पास । अर्ज करी ताजा ॥
नहीं दूं सीता इम बोले । छोडकर लाजा ॥
वो बनवासी दो जना । फिरत वनवनको ॥ मेली४॥
रावणको गफलत जान । करी होंशियारी ॥
कौन जाने होनहार । बात कियों गढ त्यारी ॥
यह दारु गोला नार । औरभी भारी ॥
सब कोट कोटपर । ओट लगादी सारी ॥
हीरालाल कहे यों।भाइका करण भलपनका॥मेली५॥

भभीषणकीरावणको हितशिक्षा॥लावणी-चाल दूणकी
यों अर्ज करे रावणसे भभिषण भाई ।
महाराज काम विचारके करनाजी ॥
नहीं लगे दुशमनका दाव ।

जगतमें सत्यका सरनाजी ॥ टेर ॥

या रामचन्द्रजीकी नार आप क्यो लाया ॥
महाराज जगतमें गुल मचायाजी ॥
परत्रियाके परभाव केइने राज गमायाजी ॥
या जलती गाडर घर बीच कबू नही लानी ॥
महाराज विपतिकी वेल कहवानीजी ॥
या लंका नगरीपर हाथ करो क्यों उत्पात्त उठानीजी॥
चड आया राम और लक्ष्मण दोनो भाइ ॥
महाराज विश्वास कभी नहीं करनाजी ॥ नहीं १ ॥
ये सुग्रिवादिक केइ भूप संग लाया ॥
महाराज हनुमंत हुवा अगवानीजी ॥
ये पुरिके कंदामें वीर सभी मिलमता टेहरानीजी ॥
राजा सुग्रिव चौकस करी मुलकामें ॥
महाराज रत्न जटी खबर दीधीजी ॥
चोरी कर रावण राज लंकामें ले गया सीधीजी ॥

जब खबर करन हनुमंतको दूत पठायो ॥
महाराज लंकाका किया वेवरनाजी ॥ नहीं २ ॥
अब हंस द्वीपमें डेरा आकर दीना ॥
महाराज समुद्रको तिरिया पानीजी ॥
आवे लंकाके दरम्यान खबर सब देशमें जानीजी॥
अब दे सीता मुझ हाथ फेर दूं पीछा ॥
महाराज रावणको क्रोधज आयोजी ॥
लिया खड्ग हाथपर हाथ भिड गया दोनो रायाजी॥
जब कुंभकरण इन्द्रजीतजी झगडो मिटायो ॥
महाराज भभीक्षण गया रामके चरनाजी ॥नहीं३॥
या लंकापतकी पद्वी रावण पाइ ॥
महाराज अक्षुनी तीस लस्कर लेरांजी ॥
हुवा रामभक्त अति सक्त लगा दिया तंबूडेराजी ॥
यो इन्द्र समान आभिमान रावण चड आयो ॥
महाराज युद्धपर रण रंग राताजी ॥

भभीक्षणको रावणके साथ भेज दिया श्रीरघुनाथाजी॥
यह राक्षस वानर मिल सबही चडकर धाया ॥
महाराज भाइ दोइ मदतके करनाजी॥ नहीं ४॥
या नागफासमें कुंभकरणको रामजी बान्ध्यो ॥
महाराज और सब राक्षस बन्धानाजी ॥
किया रामदलने जोर देख रावण घबरानाजी ॥
जब भभिक्षणपर रावण हाथ उठाया ॥
महाराज हूवा लक्ष्मण अगवानीजी ॥
किया दोनो भूपने युद्ध । घने घमन्ड गुमानीजी॥
जब राजा रावणने शक्तिबाण चलायो ॥
महाराज पड्या जाइ लक्षमण धरणीजी ॥ नहीं५॥
जब आइ विशल्या सती घाव मिटाया ॥
महाराज युद्धपर चड गया सूराजी ॥
बहू रुपनी विद्या साध आया रावणभी हजूराजी॥
जब देखबल लक्ष्मणको चक्र चलायो ॥

महाराज चक्र गयो फेरफेरीजी ॥
फेर उसी चक्रके साथ उनकी हो गइ ढेरीजी ॥
जब लिया राजलंकाका तीन खंड मांही ॥
महाराज हरिलाल कहे जीतके करनाजी॥नहीं६॥

मंदोदरी राणीकीरावणको हितशिक्षा॥आसावरी-राग॥
पियू अपनासे अर्ज करी रे।प्रेमदाअतिप्रेमभरी रे॥टेर॥
पुरुषोतम श्री रामचन्द्रकी । नारी कायको हरी रे ॥
आफंदवेल घेर मति घालो।सुनतांमें नाथ डरी रे॥पि१॥
तुम घर रमणी है आति सुन्दर।कौनसी चूक परी रे ॥
निजघर संपातिताकेविरानी।ताकीतो भूलखरी रे॥पि२॥
सुग्रिवादिक संग मिलाये। मानो उदधि तरी रे ॥
युद्ध करणको आवे लंका।जीतोगाकैसेकरी रे॥पि ३॥
कुंभकरण इन्द्रजीत अंगद। जो तुम मदत करी रे॥
सोतो रामके दलमें बान्धिया।छोडावोनाथखरी रे॥पि४।

हाथजोड या अर्ज हमारी । मानो तो याही घरी रे॥
पर त्रियाको पातक मोटो । डालो क्यों न परी रे॥पि५॥
होनहार जैसी बुद्धि आवे । उपजन अंग खरी रे ॥
हीरालाल कहे चंदके राहू।कुमतियोंआणफिरी रे॥पि६

॥रावणको भभीक्षणकी शिखामण॥ आसावरी-राग॥
तेरी टारी कैसे टरे रे।याती ज्ञानीयोंशाखभरे रे ॥ टेर ॥
पुस्कल वेलां देदेहेला । समझायाही सरेरे ॥
वंधव हमारा प्राणसे प्यारा । ताते पांव परे रे ॥ तेरी१॥
जो कछु हूवा सोतो हुवा । अवही चित्त धरे रे ॥
पाछली भूल चेते नरकोई । तो पण काज सरे रे॥तेरी२
दियां परनारी टले घात थारी। यूं जानत सबके घरे रे॥
यो ऋषिवाणी सुणी अगवाणी । तें क्यों भूल परी रे॥ते३
युद्धमें शूरा प्राक्रम पूरा । कोइसे ना डरेरे ॥
ठाडे रणखेत तेगवल तोकी । वैरीको प्राण हरे रे॥ते४

यो गढ लंका है अति वंका । तोडेगा त्रण परे रे ॥
कोटी मणकी सिला उठाई । लक्ष्मण वलसिरी रे॥ते५
हमतो तुमको देत चेताइ । वारोवार केरीरे ॥
मानो कछू नहीं मानोगे तो।हम है दोष परे रे।तेरी॥६॥
बुद्धि कुबुद्धि भइ रावणकी । कर्ता वोही भरे रे ॥
कहेहीरालालदयालकीवाणी। पुण्यकीजहाजतिरे रे७

॥सीताजीकीखबरहनुमानजीलाये॥राग—आसावरी॥
पवनसुत खबरकरनको जावे। सीताबैठी कौनस्वभावे॥
सबहीभूपतमिसलतबनाई । हनुमंतकोजोबुलावे ॥
रामकहेतूंजागढलङ्का । संदेसोजायचेतावे ॥ प॥१॥
मुद्रिका मम हाथ जो केरी । हाथो हाथ दिरावे ॥
पाछोवलतोलाजेसेलाणी। हमको अमानत आवे॥प२
चरण नमी मुद्रिका लीनी । नहीं जरा देर लगावे ॥
महेन्द्र नानासे जंग करीने। तुर्त हीलंका सिधावे॥प३

गुप्त रूप रही उपर सेती । मुद्रिका ताम गिरावे ॥
देखी मुद्रिका सीता पतीकी । हर्ष हिये न समावे ॥ प ४
चिन्ता जाणीने प्रगट हुवा । चरणे सीश नमावे ॥
रामलक्ष्मणदोनोंहेघणा सुखमें । तुम क्यों आर्तध्यावे ॥ प ५
कहां लक्ष्मण कहां राम विराजे । कहांपर स्थान लहावे ॥
सुग्रिव नृपके काज शुधारी । केकंदा संग मिलावे ॥ प ६
देवो सेलाणी सांची हमको । जल्दी वलतो जावे ॥
हीरालाल कहेहोवे नरशूरा । कार्य पार लगावे ॥ प ७ ॥

॥ रामजीकी जीत ॥ लावणी—चाल दूणकी ॥

यह अतुल वलीवंत जक्तके मांही ।
महाराज फते जंग हुवा परवानाजी ।
सब लिया राज त्रिखन्ड आजघर रंग वधानाजी ॥ टेर ॥
यह राजा रावण परलोक हुवा परजामें ।
महाराज राक्षस मिल भागण लागाजी ।

दी धीरज रामचन्द्र रहो आप अपनी जागाजी॥
इन्द्रजीत मेघनाथ को दम दिलासा।
महाराज अनुजय कुंभ के करणाजी।
बडे२घमन्डी जोधा लिया सब रामका सरणाजी॥
यह धैर्य ध्यान संतोष सबही को कीनो।
महाराज रावणका किया चलानाजी ॥ सब ॥ १ ॥
यह मंदोदरी प्रमुख हजारो राण्या।
महाराज जिनोको ज्ञान बतलाया जी।
हुवा शूरामें सरदार युद्ध परकाममें आयाजी ॥
अब करो आण प्रमाण सभी लक्ष्मण की।
महाराज आनंद और मङ्गल वरते जी।
श्रीधर्मघोष महाराज आयेगढलङ्का विचरतेजी॥
श्रीरामचन्द्र महाराज वांदवा आया।
महाराज अनुभव अमृत पाना जी ॥ सब ॥२॥
सब सुणी ज्ञान उपदेश मुनिकी वाणी।

यह केइ नृप हुवा वैरागी जी ।
महाराज केइ नृप हुवा वैरागी जी ।
श्री कुंभकरण इन्द्रजीतज मारा था वडभागीजी॥
केइ राण्या प्रमुख संयम मार्ग लीधो ।
महाराज सत्यका सत्य नहीं छोडा जी ।
क्रियानदीनरवदाबीचसंथारामुनिनेकर्मकोतोडाजी॥
यह दिया राज लंकाका भभिक्षणजीको ।
महाराज अयुध्या नगरीको आनाजी ॥ सब ॥३॥
यह दिगविजय कर देश सभीको साधा ।
महाराज सोलह सहश्र देशा भूप नमायाजी ।
करीतीनखन्डमें आण अजुदया नगरीको आयाजी॥
यह उन्नीसो चौसटके साल चोमासा ।
महाराज शहर मंदसोर के मांही जी ।
श्रीजवाहरलालजीमहाराजठाणादशरह्यासुखपाइजी।
या जुगल लावणी जयकारणी जगमांही ।
महाराज हीरालाल कोठी मङ्गलगवानाजी॥सब॥४॥

॥ सीताजीकी धीज ॥ लावणी—खडीराहमे ॥

अमरलोकसेआये विबुद्ध जब।सांचझूटकीवादपडी॥
धीजकरणकोंअग्निकुंडपर।सीतासतपर आनखडी॥ टेर
सीता के सिर दोष चडाया ।बात फैलगइ गली गली॥
पडाभरमजब रामचन्द्रको। जिकरआइजबचलीचली॥
दूधकेअंदरनिमकपडेज्यों।दुशमनाईकरीमिलीमिली॥
सत्त सहाइ हुवा देवता । फिरतो बनेगा भली भली॥
झेला—जब रामचन्द्रजी हुकम ऐसा देदीना ।
सीताको करो बनवास खास यह कहना ॥
जब हाथ जोड कहे लक्ष्मणजी यों बेना ।
होवे सीताका कोइ बाँक मुझे कह देना ॥
मिलत—रामचन्द्र चड गये हट्टपर ।
विस सीताके सिर पडी ॥ धीज ॥ १ ॥
शाम वैस और शाम रथमें । बेठा सीताको लेगया ॥
नरनारी नगरी के कहते । देखो कैसा जुलम किया॥

ऊंचा पहाडझाडीजंगलमे। जहांसीताकोउतारदिया॥
कहता सारथी सुणोरी माइ। हमने खोटा जन्म लिया॥
छूट—नवकार मंत्रका जाप लियाहे सरना ।
सब विघ्न विनाशे दूर सुख के करना ॥
मामाजी सीताके आय लेजाय घरम्याना ।
हुवे जुगल पुत्र गुणवान योवनमे सोभाना॥
मिलत—सजी सवारी अजुध्या उपर
रामचंद्रसे आन भिडी ॥ धीज ॥ २ ॥
किया युद्ध हटाया लस्कर। रामजी का नहींहाथचले॥
नेणभूजाफरकणसेजाणा।सज्जनजनकोइआय मिले॥
इत्नेमें कोइ आयसुनावे। सीतासुत अंगजात भले॥
छूट—लोकीक सुधारन काज के धीज ठेरावे ।
कर उंडा कुन्ड अग्निसे पूर्ण भरावे ॥
सीता स्नान कर आले वस्त्र पहर आवे ।
होवे सील सांच मुज आंच रति नहीं आवे॥

मिलत–सोच नहीं कोइ दिलके अन्दर

होवे जिसकी तगदीर बडी ॥ धीज ॥ ३ ॥

अग्निकुंडका हुवा जलसारा ।नरनारी सब देखरह्या॥

कुसुमकी वृष्टिकरी देवता।जय२कारसुर शब्दाकिया॥

निकलङ्कहुवा तननिर्मल।सकल जहानमें यश लिया॥

दुर्जनकादिल देखघबराय।।सिरमंदासिर झुकादिया॥

छूट–यो सील महा सुखकंद विघ्नको टाले ।

जो पाले निर्मल चित्त रीतिसे चाले ॥

श्री रत्नचंदजी महाराज कनजेडे वाले ।

गुरु जवाहर लालजी गुणवंत सुमितीको पाले ॥

मिलत–चौसट के साल भोपाल शेहरमें

हीरालाल गाइ ज्ञान जडी ॥ धीज ॥ ४ ॥

॥ रामचंद्रजीकी मोक्ष ॥ लावणी–चाल दूणकी ॥

उदय पुण्यके जोग चारित्र आवे ।

महाराज हरीको विरह क्यों पडताजी ।
श्रीरामचन्द्रमहाराज संयम भार लेइ विचरताजी ॥ टेर॥
यह सीताजी भी लिया हे संयम धारी ।
महाराज करी हे निर्मल करनीजी ॥
हुवा स्वर्ग बारमे पद अछ्य हुइ इन्द्रकी वरनीजी ॥
यह अवधि ज्ञान कर भव पाछलो देखे ।
महाराज रामऋषि हे वनवासेजी ।
करी सीतारूप वैक्रिय आया पति रामके पासेजी ॥
चौ—नाटकगीतवाजित्रवजावे।सुणियांमनउन्मादउपावे
राम ऋषिको बहु ललचावे।पांवनेवर घुघरी घमकावे॥
मिलत—यह अचल मुनिश्वर रह्या ध्यानके मांही
महाराज मेरुसम डिगे न डिगनाजी ॥श्रीराम॥१॥
जब किया रूप प्रगट गुन्हा बकसाया ।
महाराज मुनिजी कर्म खपायाजी ।
फिर उसवक्त दरम्यान ज्ञान केवल प्रगटायाजी ॥

यह किया देव मौछव सभीने जाण्या ।
महाराज केवली उपदेश सुणायाजी ।
सब पाये परमानन्द सितेन्द्र सीस नमायाजी ॥
चौ-मुनिराजकीअमृतवाणी।सुणतांसुखलहेसबप्राणी
भवअग्निकीझालबुजानी।पामेपदअविन्याशीस्थानी॥
मिलत-यह समझाया नरनार धार वृत लीना ।
महाराज आपकोसरण जो धरताजी ॥श्रीराम॥२॥
जब पूछे सितेंद्रजी आपमुझे बतलावो ।
महाराज भाइ लक्ष्मण अति प्याराजी ।
वो कौनगतिमै वशेकभीनहीं रहता न्याराजी ॥
तब कहे केवली सुनो जिकर तुम उनका ।
महाराज पंक प्रभा के माहीजी ।
निज कृतकर्मके जोग भोग अधोगति पाइजी ॥
चौ-देखनकाजसुरेन्द्रआये।निर्कावासकेदुःखमिटाये॥
दोनो हाथोंमेंधरके उठाये।गिरश्जावेबहुपछतावे॥

मिलत—जो बन्धा निकाचित आयुष्य नरकके माही।
महाराज कर्ता वोही पाय के भरताजी ॥ श्रीराम॥३॥
यह दिया दम दिलासा मोह वश केइ ।
महाराज कहो कछू कयो न जावे जी ।
वडे२मनुष्य और इन्द्र जिनोको भ्रमन करावेजी ॥
फिर रामचन्द्र महाराजको सीस नमाया ।
महाराज इन्द्र गये आप ठिकाने जी ।
हुवा रामऋुपिश्वर सिद्ध जिनोको जक्त मैं जाने जी॥
चोपाइ—श्रीरत्नचन्द्रजी ज्ञान शिखायो ।
जवाहरलालजी मुनी गुरुपायो ॥
जिन मार्ग के सरणमें आयो ।
हीरालाल सदा सुख चहायो ॥
मिलत—यह उन्नीसो चौसट साल भोपालके मांही ।
महाराज आनंदसदा रहेहै वरताजी॥ श्रीराम॥३॥

———

॥ श्रेणिक चरित्र ॥ लावणी—चाल दूणकी ॥

श्रीपद्मनाभ महाराज तिर्थंकर पहिला ।
महाराज जीवकी दयाजो पालीजी ।
कियो धर्मतणो उद्योत हुवा द्रढ समकित धारीजी ॥
या राजग्रही नगरीकी महिमा मोटी ।
महाराज श्रेणिक राजा भूपालाजी ।
पटराणी चेलणा जाण पुत्र दो हुवा सुकुमालाजी ॥
यह कोणिक कुँवर पुण्यवंत महा तप धारी ।
महाराज वेहल कुँवर है छोटा जी ।
याने बख्श दिया महाराज हार हाथी दोई मोटाजी॥
छूट—तब कोणिक कँवर के दिलमें आइ ।
मोकुराज मिले कब करुं मोज मन चाहाई
यह कालि कुँवर दशों भ्रात लिया बुलाई ।
मिसलत करे तुम सुणो सभी एक साई ॥

मिलत–होतबकी बात है न्यारीजी ॥ कियो ॥१॥
आपही राजा श्रेणिक को पकडपींजरेमैडालो ।
महाराज राजकी करली पांतीजी ।
सब कियोवचन प्रमाण हुवाराजाकाघातीजी ।
एक दिन भूपतिको देखी गफलतमांइ ।
महाराज दमादम मिलकर आयाजी ।
दियापकडपिंजरेसिंघजोरनहींचलेचलायाजी॥
छूट–कोणिक कुँवर गादीपर आकर बैठा ।
माता के पांव पडन को गया था बेटा ॥
माताने आदर नहीं दिया खादिल सैंठा ।
धरलियो ध्यान रानीको झुका सिर हेटा ॥
मिलत–कँवर कहे मात हमारीजी ॥ कियो ॥२॥
मैं राजलियो थाने हर्ष भाव नहीं आयो ।
महाराज राणी हकीगत सुणावेजी ।
तेने किया वाप सेवैर मुझे हित कैसे

मैने दिया एकात मेंडाल बाप तुजेलाया ।
महाराज जिनो किया गत कीधीजी ।
सुन उतर गइ सबरीस पिछले भवसे लीधीजी॥
छूट—अब तोडूं पींजरा फरसी को हाथ मै झेली ।
आता देख कौणिक को मुद्रिका मुखमै मेली॥
कर पूर्ण आयुष्य नृप गयो नरक मे पहली।
चौरासी सहश्र वर्षों की स्थिती भुक्तेली ।
मिलत--कर्मगत टलेन टालीजी ॥ कियो ॥ ३ ॥
यह आगमिक काल चौवीसी मांही ।
महाराज होसी जिनपद अवतारीजी ।
श्री पद्मनाभ महाराज विमल वाहन अस्वारीजी॥
सुरपति सेवानें रहकर राज चलावे
महाराज देवसेण नाम कहवासी जी ।
फिर लेकर संयम भार धर्म मार्ग वतलासीजी॥

छूट—यों केवल ज्ञान पद परमार्थ को पासी ॥
फिर जन्म मरण रोग सोगमे कभी न आसी ।
हीरालाल कहे गुणवंत तणा गुण गासी ।
तास घर सदा ऋद्धि सिद्धी मङ्गल वरतासी ।
मिलत—हवा केइ पर उपकारोजी ॥ कियो ॥ ४ ॥

॥कोणिक चेडाका युद्ध—लावणी चाल दूणकी ॥

यह अमरपति नरपति खगपति राया
महाराज सबी लालचको ध्याताजी
परम शांत उपशांत हुवा फिर मुक्तिपाताजी ।टेर।
या चंपानगरी वसे लोक धनवंता
महाराज कोणिक नृप राज करंदाजी
यह वेहल कुँवरको हकहार हाथी मोजयुरदाजी ॥
यह जलक्रिडा करणको गंगा जलमांही ।
महाराज वेहल कँवर जब जावेजी ।

सभ राण्याको परिवार संग लेइ जलमें झुलावेजी ॥
या रामत देखकर लोक करे परसंस्या ।
महाराज वैरीका दिल घबराताजी ॥ परम ॥ १ ॥
या पद्मावती पटनार राजा कोणिककी
महाराज भूपसे कुबुद्ध भिडाइजी ॥
लेबो हार हाथीको मांग जदी अपनी ठकुराइजी।.
जद वेहल कँवर पर कोणिक हुकम फरमाया ॥
महाराज कँवर तो कही नही मानेजी ॥
उठ गया नानाजी के पास कोणिक राजाके छानेजी॥
जब कोणिक राजाने दो तीन दूत पठाया ॥
महाराज सरण आया नहीं दिलाताजी ॥ परम॥२॥
जद रणभूमी पर हुवा भूप एकठा
महाराज चेडा नृप बाण चलायाजी ।
यह काली कुँवर दश भ्रात जिनोंका जोर हटाथाजी॥
जद कोणिक नृपने मदतको देव बोलाया ।

महाराज सक्रेंद्र और चमर इन्द्रांजी ।
फिर हुवा भारत भरपूर मनुष्यका वृन्द वृन्दांजी ॥
जब चेडा महाराज दिलमें बहू घबराया ।
महाराज जबरसे जोर न चलताजी ॥ परम ॥ ३ ॥
जब भवनपति सुरभवनके अंदर लाया ।
महाराज करी अणसण सुख पायाजी ।
ले गया देवता हार, हाथी अग्निमें समायाजी ॥
यह माया जालका झगडा जगके मांही ।
महाराज गिणे नहीं कोइ सगाइजी ।
बाप बेटा भाइ परिवार और सब लोग लुगाइजी ॥
श्रीजवाहरलालजी महाराजके चरणां मांही ।
महाराज हीरालाल ध्यान लगाताजी ॥ परम ॥ ४ ॥

॥ श्रावक वर्ण नाग नतवाकी सज्झाय ॥

आऊखो टूटाने सांधोको नहीं रे ॥ यह देशी ॥

चेडामहाराजमोटानरपतिरे।पाले जिनधर्मकीआणरे॥
कोणिकराजछोडीआवियारे।पडगइराजाकेखेंचाताणरे।
आठ आगार श्रावक राखियारे।
नहीं लोपे जिन धर्मकी आणरे॥
आज्ञा न लोपे मालिक जेहनी रे।
योही धर्म पायो प्रमाण रे॥ चेडा॥ २॥
श्रावकवर्ण नाग नतवो रे।राजतणो वो करे काम रे॥
बेलेतोबेलेकरे पारणारे।शूरवीर छे प्रमाणरे॥चेडा॥ ३॥
चेडामहाराज हुकमदियो रे।शूरसुभटो होवोरे तैयाररे॥
स्नेहबक्तरपहेरीपरवर्या रे।वाजिंत्रबाज्यातिणवाररे॥चे४
वर्ण नामा नाग नतवोरे। पारणाको दिन होयरे॥
छटभक्तका अष्टम कियोरे।पणहुकमनलोप्योकोयरे॥चे५
रथ बैठीने सामे आइयो रे। रणभूमीका अहि ठाणरे।
हाथीघोडानेरथपालखी रे।भिडगयाराणोरानेरे॥चेडा६॥
प्रतिपक्षीआयो एक आदमीरे।लियोछेधनुष्यनेबाणरे॥

विनअपराधपहिलानहींहणरे।कीधोछेयहपरिमाणरे॥७
जामतेवैरीवाणमूकियो रे।लागोआणीनागजीकेसाथरे।
रीसआणीनेधनुष्यखेंचियो रे।अबदेखतूंपुरुषोकाहाथरे
एकही बाणेवैरी मरीगयो रे।स्थलीनोछेपाछोपलटायरे॥
संथारो कियो एकांत जायने रे।
बाण खेंचता आयु पूरो थायरे ॥ चेडा ॥ ९ ॥
पहिलेस्वर्गमें जाइऊपनारे। आयूष्य पाया चारपलरे॥
महाविदेहमांहीजन्मसी रे।मोक्षमेंजासीमेटीसलरे॥चे१०
बालमंत्रीथोएकनागनो रे।देखादेखीराख्याशुद्धभावरे॥
महाविदेहक्षेत्रमांहीजन्मियो रे।मोक्षजासीकर्मक्षपायरे॥
संवत उन्नीसो बांसठे रे। वार तिथी शुभ जोगरे ॥
हीरालालगायोरामपुराविषे रे। सुणजोसहूश्रावकलोगरे

॥ महाशतकजी श्रावककी सज्झाय ॥

हूंतो वारीहो जिनवर नेमी ॥ यह देशी ॥

यांतोराजग्रहीनगरीभली॥तिहांश्रेणिकराय भूपाल ॥
महाशतकनामैंग्रहस्थपति।घरमेंतरहछेतसनार ॥१॥
श्रावकश्रीवृधमानका॥ टेर॥जाणेजीवादिकनाभेद ॥
क्रोडचौवीसकोपरिग्रहो।राखेमुक्तिजावणकीउम्मेद॥२
रेवंतीनामाभारजा। बारहसोकांकी मारणहार ॥
मांसतणीअतिलोलपणी।मदमस्तथइबिक्राल॥श्रा३॥
तिणकालेने तिणसमय । महाशतक कियोसंथार ॥
नारीयानिर्लजपापणी।अणिकेजाग्योकामबिकार॥४
मस्तककेशजोबिखरिया। दीनोछातीकोपल्लोखोल ॥
बचनविषयराबोलती। निर्लज्जहुइनिटोल॥श्रावक॥५॥
अहो प्रीतममाहेरा । स्वर्गमोक्षकावांछणहार ॥
छोडोक्रियाकर्मथांयरा। सुखभोगवोसंगहमार॥श्रा॥६॥
सुणियावचनघरनारका । नहींतजीधर्मकीटेक ॥
वारम्वारकह्याथकां। अवधीज्ञानमैलीनोदेख॥श्रा॥७॥
हेभो रेवंती पापणी। दिनसातरह्याथारे और ॥

लोलुकपहिलीनर्कमें। थारीगतिकर्मकेजोररे॥श्रा॥८॥
वचनसुणीनेपाछीगइ। तवपधार्याश्रीवृद्धमान ॥
गौतमजीनेमोकल्य॥सुधारवा॥श्रावकजीरोध्यान॥श्रा९
मांससंथारेस्वर्गसुधर्मे । चारपल्यआयुष्यरेजोग ॥
श्रावकजीसुखभोगवे॥मुक्तिजासीमहा॥विदेहकेनोग१०
गुरुश्रीजवाहरलालजी । ज्ञानध्यानगुणमेंदयाल ॥
हीरालालगायोहर्षस्यूं॥संवतउन्नीसोवांसटकेसाल॥११

॥सती चंदनबाला चरित्र॥ लावणी–चाल दूणकी ॥
या चंपानगरी दधीवाहन नृप पुत्री ।
महाराज रूपमें ज्यों इन्द्राणीजी ।
हुइमहावीरजीकीआपशिष्यणीप्रथमवखानीजी॥टेर॥
यो कौसंबी नगरीको राजा चडकर आयो ।
महाराज भूपके हुइ लडाइजी ।
तब दधीवाहन नृप हार गयो जब लूट मचाइजी ॥

एक दुष्ट नर चड गयो मेहलके मांहीं ।
महाराज पुत्रिमां छिपकर बेठी जी ।
देखी रुप अनोपम अतुल्य पकड करले गयो सेंठीजी॥
यह किया बचन कठोर विषय की वाणी ।
महाराज रानीजी दिल घबरानी जी ॥ हुइ ॥ १ ॥
यह सील भंग भय राणीजी जाणी ।
महाराज तबही संथारो कीधोजी ।
फिर काटी दाँतसे जिभ्या देवगति वासो लीधोजी॥
यों देखके दिल घबरानी चंदनबाला ।
महाराज पुत्रिया ढलगइ धरणी जी ।
फिर किया रुदन विलाप कहां गइ मेरी जननी जी॥
तसदी धैर्य घर पायक अपने लायो ।
महाराज नारिया कलह करानी जी ॥ हुइ ॥२॥
वो बेचन चला बजार राज रंभा को ।
महाराज लक्ष सोनैये देवारी जी ।

एक वैश्या ले चली मोल सासन देव विसी टारीजी॥
कोइ सेठजी ले गया मोल पुत्रीकर राखी ।
महाराज सेठानी जंग मचायो जी ।
म्हारे छाती उपर शोक सेठ या मोल ले आयाजी॥
एक दिन देख अवसर मूंडियो मांथो ।
महाराज लोह मयी बन्धन बान्धीजी ॥ हुइ ॥ ३ ॥
यादी भोंयरामे डाल तालो जड सेंठो ।
महाराज तीन दिन तेलो ठायो जी ।
फिर आया सेठ तत्काल सतीको कष्ट मिटायो जी॥
यह खूणे छाजले उडद बाकला लीधा ।
महाराज देहली उपर बेठी जी ।
फेर भावे भावना चित संत कोइ आवेतो लेसीजी॥
श्री महावीर महाराज अविग्रह कीधो ।
महाराज जोग मिल्या ले अन्न पानीजी ॥ हुइ ॥४॥
यह सिद्धार्थ नंद आनन्दे आवता देख्या ।

महाराज रोमांचित हिये हुलशानी जी ।
धन्य घडी धन्य भाग आज घर जहाज आनीजी ॥
एक बोल घटतो जान के पाछा फिरीया ।
महाराज नयण में नीर न पावे जी ।
फिर गया दीन दयाल सती के आंश्रू आवेजी ॥
जइ लियो पारनो हुइ रत्नकी वर्षा ।
महाराज दुंधवी देव बजाइ जी ॥ हुइ ॥ ५ ॥
या बात सुनी बाइ मूलां दोड कर आवे ।
महाराज रत्न कोइ ले नहीं जावे जी ।
थाने कीधो यो उपकार सती मुख यो फरमावेजी।
जब वीर जिनेश्वर केवल ज्ञानज पाया ।
महाराज सती पण संयम लीधोजी ।
हुइ छत्रीस सहश्रकी गुरुणी वासमुक्ति में कीधोजी
यह उन्नीसो त्रेसठ नीमच के मांही ।
महाराज आसोज सुदी पूनम चंदाजी ।

गायो सती तणो सम्बन्ध दिनोदिन आनन्दाजी॥
श्री जवाहर लालजी महाराज धर्म दीपायो।
महाराज हीरालाल विघन हटानीजी ॥ हुइ ॥ ६॥

॥ वंकचूल सम्बन्ध ॥ लावणी—चाल दूणकी ॥
यह लिया वृत पच्चखाण को निर्मल पाले।
महाराज कष्टमें कभी नही डिगताजी।
याविघ्नजायसब दूर मिले सुखसब मन गमताजी॥टेर॥
यह वंकचूल कुँवर हूंता राजाका।
महाराज पल्लीमें जाकर वसियाजी।
हुवा चोरो कासरदार सदा कु कर्म में फसियाजी ॥
एक दिन मार्ग भूल मुनिश्वर आया।
महाराज पल्लीमें चौमासो कीधोजी।
मत देना इहां उपदेश मुनिजी मानज लीधो जी ॥
शेर—चतुर्मास पूरा हुवा, मुनिश्वर किया विहारजी।

पल्लीपतिपहोंचावाचल्यो,अपनीसीमपाहिलेपारजी॥
जबमुनि उपदेशज दिया, चूस कराया चारजी।
नमस्कार कर पाछो फिरियो, आयो अपने द्वारजी॥
चो—विनजानाफळनहींखानो।नृपनारकोमाताजानो॥
विनचेतायावैरीनहींहणिये।वायसमांसअभक्षगणिये॥
मिलत—एक दिन चोर संग लेकर धाडे चडियो।
महाराज बखीलको रहे न समताजी ॥ या ॥१॥
यह प्रति शत्रूके जोर चोर सब भागा।
महाराज फिरे वो बनमें भमता जी।
नहीखायाअजान्या फलबंकचूलत्यागसेडरताजी॥
और सभी चोरों ने वो फल खाया।
महाराज जिनोने प्राण गमायाजी।
चल गया बंक चूल उठ घरे अधरातको आयाजी॥
शेर—नार सूती पर पुरुष संगे, देख चडी रीस जारजी॥
वैरीको मारण काजे, खैंच कहाढी तरवार जी॥

ठोकर लगा चेतावियो, तेग तोकी तिणवारजी ।
बहिन उठ आसीस देवे, मैखुणियो श्रृंगार जी ॥
चो-सबबातसुणीसुखपायो। बेनपातकाआपबचायो॥
नटनाटिक करवा आयो । मैतो श्वांग तेरोहीबनायो॥
मिलत-एक दिन बंकचूल राजके महलों मांही ।
महाराज चोरीसे चोर नही डरताजी ॥ या ॥२॥
या राणीकी उडगइ नींद चोरको देखा ।
महाराज रुपमन मोहन गारो जी ।
कहेललितवचनललनाकोसफलकरआजजमारोजी॥
मैं देवूंगा धन माल मान कयो मेरो ।
महाराज कुंवर को बहू ललचावेजी ।
नही माने कुँवर गुणवंत मात यों कही बतलावेजी॥
शेर-गुप्तपने यो सुण्यो राजा,सभी नारी चरित्रजी ।
जिनाचोरी नही करेचोर,वश कियो अपनो चितजी॥
जबरानी हल्ला किया, पकडा दिया वो चोरजी ।

पूछे राजा बात छानी,नहीं कियो रानीपर घोरजी॥
चौ—सत्यवादी कुँवरको जानी । लियो कुँवर
पणे निजठानी ॥
त्यागतीजातणोफललागो।सत्यराख्याउदयहोवेभागो
मिलत—एक दिन बैरीको जीतन काजे राजा ।
महाराज कुँवरपर हुकमज करतो जी ॥ या ॥३॥
जाय अडियो वैर्यासे जल्दीसे उन्हे हटाया ।
महाराज कुँवरके शस्त्र लागेजी ॥
करोवायस मांसकोअहार ऐसीकहेराजाकेआगेजी॥
जब राजा कुँवरसे कहे कँवर नही माने ।
महाराज श्रावक जिनदासको तेडीजी ।
करो श्रावक बचन प्रमाण राजा हट्टलेनो छेडीजी॥
शेर—मार्गमें देखा सेठने, रुदन करे मिलनारजी ।
सेठ पूछे क्या कारण है, रुदन करो इसवारजी ॥
नृप कुंवर तो जीवे नहीं। जो खासे वायस मांसजी॥

त्याग खन्डयां धर्महारे। यों करती है प्रकाशजी ॥
चो–श्रावक कुंवरको आइसेंठो कीधो।
कुंवर अणसण पचखी लीधो ॥
स्वर्ग बारमें पहोंतोसीधो।त्याग चारतणोफललीधोजी॥
मिलत–श्री जवाहरलालजी महाराज तणे प्रसादे।
महाराज हीरालाल कहे सुमतिके धरताजी॥या४॥
॥ मानतुंग मानवतीकी लावणी ॥ चाल–दूणकी ॥
यह एवंती देश उज्जैनी नामें नगरी।
महाराज मानतुंग महीपाल कहवानाजी।
त्रियाकीजालका फंद काम अन्धभोगठगानाजी॥टेर॥
एकदिन भूप रजनीका मौका देखी।
महाराज शहरमें फिर वो चलकेजी।
चार चतुर कन्या मिल वातां करे हिलमिलकेजी॥
आपासमां आजकी रात व्याव मन्डे कलकोजी।
महाराज सासरे वासज लेनोजी।

यह सासू सुसरा जेठ पतिका कहनमें रहनोजी ॥
दोहा—मानवति एक शेठकी, पुत्री चतुर सुजान।
कला चौसट जाने सही, अमर रुप इशान ॥
जो परणो प्रीतम भनी, वरतासूं मुझआन ।
चार बोल पूरा करुं, तो मानवती मुझमान ॥
छूट—चरणोदक पावूं बृषभरुप असवारी ।
करे ऐंठो भोजन सह सो सो गाली हमारी ॥
यह सुनी बात राजाने दिलमें धारी ।
इसकूं मै परनूं देखूं सभी होंशियारी ॥
मिलत—फिर आय राजा प्रधानको तुरत बुलाया।
महाराज व्यावकर रंग बधानाजी ॥ त्रिया ॥१॥
एक स्थंभ आवास वास कर मेली ।
महाराज भूप कहे तूं मुज नारीजी ।
थारा बोल्या बोल संभार याद कर बात तूं थारीजी ॥
मत छेडो नार नृपती छेह नहीं लीजे ।

महाराज कागज लिख दीनों डारीजी ।
मेरे संकटको कर दूर बाप मैं बेटी तुमारीजी ॥
दोहा–कारीगर बुलायने, सुरंग खोदायो एक ।
मानवतीका मेहलमें, दाखल हुवासो देख ॥
आवे जावे बाप घर, करी जोगनको भेख ।
राग अलापे शहरमें, नर मिल देखे अनेक ॥
छूट–या खबर शहरमे हुइ जाय राजाको ।
बुलावो जोगन सुनावो गाना हमको ॥
पांव पडे जोडिया हाथ शरम नहीं उनको ।
होगया रागवश फिरे मृग ज्यों वनको ॥
मिलत–राजा को वश करलिया सुनावें गाली ।
महाराज कपटसे भूप छलानाजी ॥ त्रिया ॥ २ ॥
एक दल स्थंभनकी पुत्री रत्नवती नामा ।
महाराज मानतुंग परणवा जावेजी ।
जब कहे जोगनसे चलो आपबिन नहीं सुहावेजी ॥

तब कहे जोगन क्याप्रिती तुमसे हमको ।
महाराज राजा कछु एक न मानी जी ।
लेचल्योजोगनकोसंग राजा कछूबातनजानीजी॥

दोहा–मार्ग जाता विपिनमें, जोगन गइ तिणवार।
रुप करी कुँवरीतणो, हींचे अम्बा डार ॥
बहुत देर हुवां थका, सोधन चल्यो महिपाल ।
सरवर पाल सहकारने, झूले राज कुँवार ॥

छूट–राजा रुप देख कन्याको विषय ललचायो ।
भूल गयो जोगन कोध्यान इसीको ध्यायो ।
सब हाल पूछ नृप व्याव को ढंग ठहरायो ।
पीवे चरणोदक बैल बनन कोल करायो ॥

मिलत–जब कियो व्याव राजाफिर आगे ध्यायो ।
महाराज फिरवो जोगनकी मायाजी ॥त्रिया॥३॥
अब आया शहर पाटन जोगन इमबोले ।

महाराज हमे कुछ शरम जो आतीजी ।
तुम परणो राजकुँवार हम वनवासको जातीजी ॥
यां करी छल रत्नवती वो पास पहुंची ।
महाराज कपटसे केइ नहीं लाजेजी ।
कहेमानतुंगश्री दासी आइ तुममिलनके काजेजी ॥

दोहा—परण्यो राजाहर्पसे, आयो आपके ठाम ।
रत्नवतीकी गुरुणी हुइ, दियो राजाको आराम ॥
षट मास लग राखियो, ऐंठो खवायो कसार ।
गर्भ धर्यो सुख भोगतां, निपट कपटकी जार ॥

कूट—जब लावी सेलाणी सब बोल हुवा है पूरा ।
पियु पहेलां पहुंची नगरी उजेनी सनूरा ॥
आइ पिता आपके घर महल सनूरा ।
करो महोत्सव सबही प्रगट बताया पूरा ॥

मिल्त—एक कागज लिखकर नृप नामें दू

महाराज हाल सब मांड सुनायाजी ॥ त्रिया॥४॥
यों बांची पत्र राजाको रोश भराया ।
महाराज दुष्ट दुर्बुद्धि नारीजी ।
या लोक हंसावन बात करी या जक्त मझारीजी॥
कहां गइ जोगनी कहां रत्नवतीकी गुरुणी ।
महाराज सती प्रपंच लखानाजी ।
जवली सीखनरनाथ आयानिजआपठिकानेजी ॥
दोहा–राजा मानवती तिल्या, कहे कुलक्षणी नार॥
गर्भ धर्यो को पुरुषको, थें हंसायो संसार॥
सेलाणी आगे धारी, या मुद्रिका यो हार ।
जोगन कंन्या गुरुणी हुइ, यह कृत मुज भूपाल ॥
छूट–राजमें हुवो आनंद मौछब जो कीधो ।
मानवतीके जन्म्यो पुत्र नाम ज दीधो ॥
राजा रानी संयम ले स्वर्गको रस्तो लीधो ।
श्री जवाहरलालजी महाराज सूत्र रस पीधो॥

मिलत—यह उन्नीसो पैंसठ रत्नपुरी मांही
महाराज—हीरालाल आनन्दे गायाजी ॥ त्रिय॥५॥

॥ एलची पुत्र चरित्र ॥ लावणी—चाल—दूणकी ॥

या पूर्व जन्मकी प्रीति रीति या देखो ।
महाराज मोह कर्म सांग बनायोजी ।
धनदत्त सेठको पूत नटवीको देख ललचायोजी॥टेर॥
इम कहे सेठजी पुत्रको यों समझावे ।
महाराज और परणादूं नारीजी ।
मत जावो नटके संग मानलो कही हमारीजी ॥
यह कुंवर कबूल नहीं करे सेठ की वानी ।
महाराज सेट नट पासे आवेजी ॥
तुम पुत्रीको परणाय पुत्र मेरे मन भावेजी ॥
जब कहे नट घर रहे जमाई आई ।
महाराज विद्या सबही सिखलाऊंजी॥धनदत्त॥१॥

जब कहे सेठ या बात पुत्र नहीं कीजे।
महाराज कुलको लांछन लागेजी ।
नहीं मानी सेठकी बात उठ कर होगया आगेजी॥
यों कियो नटको स्वांग ढोल बजावे ।
महाराज विद्यामें हुवा प्रवीनाजी ।
बारह बर्ष हुवा नट संग रहे शठ रंगमें भीनाजी ॥
एक शहर जबर जो देख ख्याल रचायो।
महाराज वंश चड बाजा बजायाजी।।धनदत्त॥२॥
यह देख रह्या सब लोक ख्याल खिलकतको ।
महाराज भूपकी निजरां आइजी ।
नटवी रुपका कूपमें भूप चित गियों जाइजी ॥
नहीं देवूं दान गिर पडे नट जो आइ ।
महाराज नारी में लेस्यूं परणीजी ।
ऐसी राजा विचारी बात कर्मगती कैसी करणीजी ।
नट मांगे दान नृप घात विचारे उनकी ।

महाराज त्रियासे जग भरमायाजी ॥धनदत्त॥३॥
एक मुनिराज महाराज गौचरी आया ।
महाराज नटके नजरां पडियाजी ।
धन्य२मुनि संसार त्याग फिर पार उतरियाजी ॥
यों भाइ भावनां कर्मोंका वृन्द उडाया ।
महाराज ज्ञान केवल पद पायाजी ।
यह राजादिक सव लोक ज्ञान सुन घणा सुलटायाजी॥
श्री रत्नचन्द्रजी महाराज विश्ववदिता ।
महाराज जवाहरलालजी यशवंताजी ।
थां को भाग वडो वलवंत वधे पुन्यवेल अनंताजी॥
यह उन्नीसो त्रेसठ नीमचके मांही ।
महाराज हीरालाल यह गुण गायाजी॥धनदत्त४

॥ जंबूकुंवरके स्त्रीयोंसे प्रश्नोत्तर ॥

स्त्रीयोंके सवाल॥घडोम्हाने भरवादो नंदलाल॥एदेशी

माणीधरसाहिबबोलोहो।थांरीअंतरगांठकोखोलो॥टेर॥
बेठैपलंगपरध्यानलगायोआठोंनार्यांमांडच्योरमझोलो१
पुन्यांपराइपरणक्योंलाया।याबातहियामेंतोलो॥मा२॥
सारवासोनेपीयरपाछी।तुमबिननहींकोइओलो॥मा३।
यहघरमन्दरसुन्दरनार्या।पतीविनपत्नीनिटोलो॥मा४।
नरबिननारीरहेसिणगारीकलंकलागेतरुणीकोचोलो५।
आपवैरागीकेहमसंगलागीसाथेइलेस्यासंयमअमोलो६
कहेहीरालालजंबुकूँवरो।अचलाजिमरहियाअडोलो॥ ७

॥ जंबूकुंवरका—जबाब ॥ देशी-वरोक्त ॥

कामणम्हारीसंयमलेनोहो।मानो२हमारोयाकहनो॥ टेर
कहेजंबूकुँवरसुनोसबहीनार्यां।झूटासुखमेंचितक्योंदेनो।
जोतुमहमसेराखोस्नेह।तोसंसारविषेनहींरहनो॥ का॥२॥
विषयविष्टाविटंबनाजानो।श्वानजैसानिर्लज्जक्योंबनो३।
कौन मात तात भ्रात संगाती जैसो रजनीको स्व-
प्नेकेहनोका ॥ ४ ॥

करी२ममतारेहेजगभमता।जैसोभाडेतीभारकोवहनो ५
सुणउपदेशसमजगइसारी।मातापिताकेसंगमेंलेनो॥६॥
कहेहीरालालसवमहाव्रत्तधारे। साचोसंघमिल्योसुख
जेहनो ॥ कामण ॥ ७ ॥

॥सुदर्शनसेठ॥महलांमेंवेठीराणीकमलावती–एदेशी॥
सांभलहो सेठा। संसार जाण्यो सवही स्वार्थी ॥टेर॥
वोले यों एक सहश्र आठ। जो मार्ग आप आदरो॥
में नहींजास्या वीजी वाट।सांभलहोसेठा॥संसार॥१॥
संसारयहस्वपनासारीखो।हमपणलेस्यासंयमभार ॥
डाभअणीजलविन्दवो॥आयुष्यधनपरिवार॥सां॥२॥
स्वार्थी सगा सहु आइ मील्या। धर्म सगो नर जोय॥
अविचलराखांआपांप्रीतडी॥जोंहममाणसहोय ॥सां३
संगत मिली आपसारखी। तो यो धर्मको ढंग ॥
गजअस्वारीअरुदजोहुवा।कौनकरेरूसभकोसंग॥सां

नेह निभावण जगमें दोहिलो। धारणो धर्म व्यवहार
साधूसतीनेवलीसूरमा।यहथोडाहीदीसेसंसार॥सां॥५
एहवा जो सज्जन मिले। नही तजिये तेहनो संग॥
भीडपड्यापणभागेनहीं।चोलमजीठकोरंग॥सां॥६॥
आप आपने घर आविया॥निज२ पुत्रको बुलाय॥
भारसोंप्योसबसंसारको।यांकेवैराग्यरह्योघटछाय सां७
सहू मिलि संयम आदर्यो। अर्हंत मुनिसुवृत्त पास॥
दुवादशवर्षव्रतपालिया॥मनमांहीमुक्तिकीआस॥सां८
मास संथारे स्वर्ग सुधर्में। सेठ सकेन्द्र पदे होय॥
पांचसे सामानिक ऊपना॥सहेश्र नेत्र रह्या जोय॥सा॥
महाविदेहक्षेत्रमेंमुक्तिपामसी।सहूनोएकअधिकार॥
सूत्रभगवतीमेंभाखियो।सुणियांवरतेमङ्गलाचार सां१०
संवत उन्नीसो बरस बांसटे। रामपुरामें अभिराम॥
गुरुजवाहरलालजीप्रशादथी।हीरालालकरेगुणग्राम ११

॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्वरणोका सवैया ३१ ॥

अरिहंत ध्यानधर ज्ञानका उद्योत कर।
संसार सागर तर ऐसीकरो करनी ॥
गुरुके चरण चित रखिये हरप नित।
साधन स्वर्ग गति यह रीत तरनी ॥
दानदया सत्य सील दुर्गतिको दूर ठेल।
सुकृतको सजगेलकष्ट दुःख हरनी ॥
अंतःकरण सेती इंद्रियोंको जीतेजती।
हीरालाल कहे सिद्ध गतीकी निसरनी ॥ १ ॥
सुणोहो चतुर नर सुत्तरकी शिक्षा धर।
आलसकों दूर कर एक चित्त लाइये ॥
किजीये सुकृत्य, नहिं किजीये दुकृत्य संग।
साधुसेती एक रंग नित्य गुण गाइये ॥
अलिक अदत्त त्याग हिंस्यासे न कीजे राग।
अष्टादशा दुष्ट यांकि संगत न जाइ ये ॥

कषायको त्याग करे सुद्धलेशा चितधरे ।
हीरालाल कहे एसे स्थानकको आइये ॥२॥
जगत तारण जिनराज हैखलक जाण ।
अंनतगुणकी खान त्रिलोकूके धणी है ॥
चौंसट इंदर आय चरणे रहे लिपटाय ।
इन्द्राण्या नृत्य गीत हर्ष चित आणिये ॥
सुर ने असुर नर आते जाते हर्ष धर ।
जगतारण जिनेश्वर अक्षय गुण ठाणी है ॥
सिद्धगति दायक नायक सहु साधुनके ।
हीरालाल कहे आदि अरिहंतको जाणिये.॥३॥
गुरु गुण कथन करत नहि आवे अंत ।
ज्ञानके सागर संत सदा सुखदाइ है ॥
करत उजास एसे सूर्य आकास तैसे ।
चंदहै सीतल जैसे तैसे रिख राइ है ॥
आछोहि चारित्र देत किधो हे अनंत हेत ।

अहोनिश सरण लेत चौरासी घटाई है ॥
ऐसा है दयाल दाता करि है अनंत साता।
हीरालाल कहे ज्ञाता गुरु गुण गाई है ॥४॥
देखो इस जगत्को झूठकी रचीहे लाल।
सांचसे न चाले चाल जगत संसारी है ॥
कूडा जो कलंक देत निंदकहे लाज रहित।
दुष्टसेती करे हेत नर्क अधिकारी है ॥
सांचके न आवे आँच झूठ काहा रहे राच।
रतन सरिखो काँच करत उजारी है ॥
सुगुण सुजाण नर तुरतहि छाण करे
हीरालाल कहे सतगुरु गुण धारी है ॥ ५ ॥

॥ इति संपूर्णम् ॥

॥ सील वृतकी ३२ ऊपमां ॥

दोहा.—सीलरत्न सबसे बडो, सब वरतां सरदार ।
बत्तीस ऊपमा वर्णवी, प्रश्न व्याकरण मझार. ॥१॥
मन वच काया शुद्ध करी, धारे सीलसुरंग ।
स्वयंभूरमण दधितिर गयो, रहीतिरणी अवगंग॥२॥

॥ सवैया ३१ ॥

जोतषीमें [1]निशाकर आगरमें रत्नांगर ।
बहु रत्न रत्ना [3]माही मुख्यता बखाणिये ॥
मुगट [4]आभूषणमांही वस्त्र माहेक्षेम [5]जुगल ।
अरि [6]बिंदकुसमामे सुवासित जाणिये ॥
चंदनामे [7]गोशीसक ओषध्यामे [8]हेमवंत ।
नदीयामें [9]सीतासम ओर नहीं मानिये ॥

दधिमे सयंभू[10] रमण रुच[11] कहे गोलाकार ।
गगपत्त कुंजरामे[12] अग्रेसर ठाणिये ॥ १ ॥
चोपदामे सिंघ सुरो[13] नागांमांहे धरणीधरो[14] ।
संवन कुंवार माही[15] वेणुदेव लाइये ॥
कल्प माहे[16] ब्रह्म लोग सभामे सुधर्मी[17] जोग ।
स्थितिमे लवरधीती[18] उग सवठसिधमाइं ये ॥
रंगामे किरमचिरंग[19] दानामे अभय[20] अंग ।
वज्रऋिषभ[21] संघेणमें अति अधिकाइये ॥
संठाणे चौरससरथान[22] ज्ञानमे केवल ज्ञान[23] ।
ध्यानामे सुकल[24] ध्यान निरमल धाइये ॥ २ ॥
लेशामे सुकल[25] लेशा मुनियांमे जिनंदजैसा[26] ।

क्षेत्रामें विदेह क्षेत्र[२७] महत्व बतायाहै ॥

मेरुगिर ऊंच माही[२८] नंदन वन बनमाही[२९] ।

जंबु वृक्ष वृक्षामाहीं[३०] प्रतिष्ट कहवायाहै ॥

शेन्यामे चक्रवृती[३१] दिपतहै पृथ्वीपती ।

रथामाहे[३२] हरिरथी अरिको नशाया है ॥

हीरालाल कहे सील वनयों ओपमालहे ।

तीनो लोक माहींसुर नर गुण गायाहै ॥ २ ॥

सोवन जडित चूडो रूडाहार मोत्यां तणो ।

नाक नक वेसर लिलाड टीको भारीहै ॥

कडा तोडा लंगर रमजोर घोर बाजरया ।

विछिया बींटया अंगोठिया दंत चूंपा न्यारी है ॥

कांकणने करमदी गेंद बाजुबंद बिंदी ।

नोगरि फूलरी काजर टिकी सणगारि है ॥

करनफूल सिसफूल दुलडि तिलडि मुख ।
हीरालाल कहे सील विन नागी नारी है ॥४॥
वस्तर जीरण अंग नही जामे रूप रंग ।
नाकमेन नथजाके गलामेन तार है ॥
गेणाको नही है जोग नादारथ कहे लोग ।
लाज काज लिया बैठ रहे घरद्वार है ॥
अपवती विना परपूरप नहीं जोवे नेण ।
वाप बंधु पूत्रवत समझे संसार है ॥
सीलने संतोपवंत दयापारे जीवजंत ।
हीरालाल कहे चंदसम निर्मल नार हैः ॥५॥

असल कनक लवणाइ चतुराई करी ।
तामे काहा गुण देखो दिलमें विचारी है ॥
तुरंग या गज केरी नकल बनाइ धरी ।
पुरुप आरूढ नहीं होत असवारी है ॥
नृपकी नकल नहीं राजको चलावे काम ।

सेठकी नकलस्वांग सेटानीन धार है ॥
हीरालाल कहे तोल असलको मोल कोन ।
नकलीवस्तुको ओर वेचत बजार है ॥ ६ ॥
कासीमें निवास कियो मुढको न खुलियो हियो ।
सुरज उध्योत भयो अँधके अंधार है ॥
गंगामें न्हिलायां खर तुरंगनीहोत पर ।
अमृत सुसीच्या नीम मधुना नीहार है ॥
जोगमिल गयो सुध तोही नहीं छाडे रूढ ।
ज्ञान नही पायो मुढ कर्मांकी मार है ॥
समुदर माहि पेस प्यासो जो को रहे नर ।
हीरालाल कहे तेने पडे धिक्कार है ॥ ७ ॥
चोरिको करन चोर चाल्या राते कोही ठौर ।
आया है नगर पोर खातखणे सुरे ॥
सेठानी कहत सुनो सेठ चोर आया पोर ।
सेठजी कहे तेजाणुं याहि बात पूरे ॥

धन माल लेइ कर चोर चाल्या निज घर ।
कहे हीरालाल सोतो गया घणी दूररे ॥
जाणुं २ कररयो चोर माल लेइ गयो ।
एसो जाण पनो पायो तामे पंडे धूररे ॥ ८ ॥
मैं तो घनो ऊपदेश दियो घनी करी रेश ।
थने तो न लागे थारा करमाकी गतहे ॥
धर्मकी जाण प्रीत जगकी बताइ रीत ।
मैंतो सब बात कही सांची २ सत है ॥
थारे तो न आस आई मनमेंभी नहीं माइ ।
हीरालाल दोष नाहीं थारी याही मत्त है ॥
जैसा पुण्य थारा होसी तैसा आगे आडा आसी ।
म्हारी गत मैंहीं जाणु थारी याही गत्त है ॥ ९ ॥
मानव जनम वृक्ष काल रुप जाण हाती ।
रातदिन रूप मुसा आयु जड काटत है ॥
संसार समान कूप रागद्वेष अजगर ।

कूटुम्ब समान माखा चटा चट काटत है ॥
विद्याधर साधू कहे आवरे नूं दुःखी नर ।
लालचमें पडयो २ हाहा जो करत है ॥
हीरालाल कहे मीठा लागा है टिपका सुख ।
अल्प दिनारो सुख दुःख तो अनंत है ॥ १० ॥

॥ नव रस वर्णन ॥

॥ दोहा ॥

आगम अनुयोग द्वारमें, नव रस रचीत संसार ।
वरने जिन आगम वीषे, विरला लहे विचार ॥१॥
वीर[१] श्रंगार[२] अद्भूत[३] रस, रूद्र[४] त्रिवडा[५] इम जाण ।
विभत[६] हांस[७] कुर्णा[८] कहि, ऊपशांत[९] नव बखाण॥२॥

॥ सवैया ३१ ॥

आदिहीमें वीररस दान दिया होवे जस ।
तपस्या करियांसुकस करे कोइ तनको ॥
निर्ग्रंथ धर्म धीर होवे महा सुरवीर ।
राज पद त्याग व्रत धारेजके जनको ॥
काम क्रोध मोह प्रीत शत्रु मोटा लिया जीत ।
वेरिको विनासे तहां धारे वीर मनको ॥
हीरालाल कहे महावीर सिद्ध नाम एह ।
घातिक करम क्षय कीधामहाघनको ॥ १ ॥
बीजो हे श्रंगार रस ललनाके होतवस ।
बिलोक विलास लीला रति गुण जाणिये ॥
कांकण मोत्याको हार नवा २ सिणगार ।
अंजन मंजन शुभ गंधादिक आणिये ॥
सिंगार वचन वक्त उपजत ऊनमत्त ।
तरुण पुरुष युवतिके संग ठाणियै ॥

नेवरको झणकार घुंघर सबद प्यार ।
हीरालाल कहे रस सिंगार वखाणिये ॥ २ ॥
अद्भूत रस अपूर्व वस्तु कोइ देख्या सेती ।
मुख अरू नेनको विकार विकसात है ॥
शुभाशुभ रूप जोवे हर्ष विखवाद होवे ।
ताके चित्त माही विकल्प उपजात है ॥
जिन दरसन जिन वाणी अद्भूत रस ।
सुणिया भविक हर्ष चडत अगात है ॥
हीरालाल कहे अद्भूत रस पियालहे ।
परम सुगती पंथ सिद्धगति पात है ॥ ३ ॥
रूधिरको रस जहां रौद्र प्रणाम जाण ।
भ्रकुटि लिलाड नेत्र मुखको विकार है ॥
पशु वध परिणाम वैरीको बिनासे ठाम ।
असुर दानव पर वहे तरवार है ॥
रूधिर प्रणाम सेती विनोको विभंग करे ।

गुरु जन त्रिया संग गुढ अतिचार है ॥
हीरालाल कहे एसे रूधिर प्रणाम सेती ।
आठोही करम घाती होवा जेंजेकार हैं ॥ ४ ॥
त्रिवडा ते लज्जा रस संकासे ऊपत भयो ।
रखे कोइ जाण लियो मम काज करियो ॥
प्रथम संजोग समे रूधिरको वस्त्र होत ।
त्रिया भाव केरे काज आगे लेइ धरियो ॥
तथा लज्जा आण वहे पोताकी सैयाको कहे ।
लोकिक की लाज लहै अकाजपर हरियो ॥
हीरालाल कहे रस पाचमाको अर्थ लहे ।
मुनी लाजे पापसेती भवदधि तरियो ॥ ५ ॥
विभत्सको रस दूर्गंधसे दुगंछा करे ।
तीहसे प्रगट भयो वेराग रस भाव है ॥
अशुची अशुध पुदगलको भरियो तन ।
श्रोतादिक द्वार सब अशुचीकी आव है ॥

धन जो वैरागीजन जानलियो एहवो तन ।
धरियो वेरागे मन जिम जल नावहै ॥
संजमको सारजो संसारको उतारे पार ।
हीरालाल कहे योही तीरणको दावहै ॥ ६ ॥
हाँसरस उपजत हाँसकी वस्तुको देख्यां ।
विप्रीत बचन सुण्या आवे हाँसरसहै ॥
पुरुष स्त्रीनो रूप बालब्रध तरुणीको ।
अन्यदेस भाखालिंगे हडहड हाँसहै ॥
सुता देवरके मुख मोभाइ मंडण कियो ।
जाग्रत भयासे नार हीहीकार हिंस है ॥
इमहे अनेक उदारण हाँसरस काज ।
हीरालाल कहे मुनी मोन भाव वस है ॥ ७ ॥
कलुणिरसकी उतपती हे वियोग संग ।
नार भरतार पुत्रादिक व्याधि वयाणा ॥
शत्रुभय मन जाणी सकल्प विकल्प आनी ।

आक्रंदादि शब्दनीर झरे जेके नयणा ॥
जिम कोई नारके भरतारको वियोग भयो ।
अन्यके आगल मांड कहे निज दहेणा ॥
हीरालाल कहे सुख भोग हे संतोष जोग ।
जैनधर्म पाया रोग मिटे करो जयणा ॥ ८ ॥
क्रोधादिक उपशांत होत है प्रशांतरस ।
विषय कषाय हिंसा दोषसे नीव्रतियां ॥
कोइक पुरुष मुनीराजको देखीने कहे ।
सोमद्रष्टी निर्विकार सोवे साधु जतियां ॥
शशी जूं सीतल मुख उपसम रस युक्त ।
इम गुण करी जुक्त साधु वा कोइ सतीयां ॥
हीरालाल इम कहे अनुयोग द्वार लहे ।
ताकोही आधार नाम कथनामे कथीया ॥ ९ ॥

अथ पाटावलीनो सवइयाः ३१ ॥

श्री महावीरजीके पाट परंपरा जान ।
सुधर्माजी[१] जंबुस्वामी[२] आदि इम जाणिये ॥
प्रभवाजी[३] संभवस्वामी[४] यसोभद्र[५] संभुत[६] विजे ।
भद्रबाहु[७] स्थूलभद्र[८] अष्टमा बखाणिये ॥
आर्यगीर[९] बलसिंह[१०] सोवनस्वामी[११] वीरस्वामी[१२] ।
छंडिलाजी[१३] जीतधर[१४] आर्यसमंद[१५] आणिये ॥
नीदलने[१६] नागहस्ति[१७] रेवंतजी[१८] सिहगणी[१९] ।
थंडिलाजी[२०] हेमवंत[२१] नागजीत[२२] मानिये ॥ १ ॥
गोविंदस्वामी[२३] भूतदीन[२४] छोहगणी[२५] दुसगणी[२६] ।
देवढगणीक्षमाश्रमण[२७] बीरभद्र[२८] गाइये ॥
संकरभद्र[२९] यसोभद्र[३०] विरसेन[३१] विरसंग्रामसेन[३२] ।

जयसेन[३३] हरीसेन[३४] जयषेण[३५] लाइये ॥
जगमाल[३६] देवरिख[३७] भीमरिख[३८] कर्मरिख[३९] ।
राजरिख[४०] देवसेन[४१] संकरसेन[४२] धाइये ॥
लक्ष्मिलाभ[४३] रामरिख[४४] पद्मसुरी[४५] पेतालीस ।
हरिसेन[४६] कूसलदत्त[४७] उवणिरिख[४८] ठाइये ॥ २ ॥
जयसेण[४९] विजेरिख[५०] देवसेन[५१] सुरसेन[५२] ।
महासुरसेनस्वामी[५३] महासेन[५४] धारी है ॥
जयराज[५५] गजसेन[५६] मीश्रसेन[५७] विजेसिंह[५८] ।
शिवराज[५९] लालजीने[६०] ज्ञानजीरिख[६१] भारी है ॥
भाणोजी[६२] रूपजीरिख[६३] विजेराज[६४] तेजारिख[६५] ।
कुवरजीस्वामीके[६६] पीछे हरिजी[६७] विचारी है ॥

गोधोजीस्वामी[६८] गुणवंत परसरामजी[६९] पुनवंत ।
एतेसबपाठजाकि गांउ बलिहारी हैं ॥ ३ ॥
लोकण्णजी[७०] म्हारामजी[७१] हुवा जग अति नामी ।
दोलतरामजीस्वामी[७२] गणी गुण धरणं ॥
लालचंदजी मोटा[७३] स्वामी हुकमीचंदजी[७४] हुवानामी ।
शिवलालजी[७५] शिवगामी उदेचंदजी[७६] उदयकर्णं ॥
चोथमलजी[७७] गुणवान श्रीलालजी[७८] वर्तमान ।
अठोतर[७९] पाट इम धरो नित चर्णं ॥
कहे हीरालाल गुरु मेरे जवाहरलाल ।
जिन धर्म प्रतिपाल पारके उतरणं ॥ ४ ॥

॥ वारा भावनाका वर्णव ॥ सवैया ३१ ॥

अनित्य[1] असरण[2] संसारने[3] एकंतभाव[4] ।
पंखि पत[5] पंचमिया भावोनित्य भावना ॥
अशुचिने[6] आश्रव[7] संवर[8] निर्जरा[9] जाण ।
धर्म[10] भावना चित धरमको लावना ॥
लोगा[11] लोग एकदश वोध[12] दुहा द्वादश ।
जनम मरण माहीं फेर नही आवना ॥
हीरालाल कहे भव्य भावोरे भावना नित ।
कर्म खपाइ हित मुगतिको पावना ॥ १ ॥
सुनोहो चतुर नर दुवादश चित धर ।
भाखी श्री जिनवर ताकी एह रीत है ॥
प्रथम अनित्य तन धनने जोवन पन ।
कारमो कुटंम्व किम कीजे तहां प्रित है ॥

मंदिर मकान घर द्वारादि अनित्य जान ।
खानपान वसनजो भुषणमें नित हे ॥
कहे हीरालाल याही भावना भरत भाइ ।
महिलोमें केवल पाइ गया ऊंची गत है ॥ २ ॥
असरणको सरनो जिनंद मारग तणो ।
और नंहीं कोइ तणो आगम आधार है ॥
मात पिता मिल्या भाई विवध प्रकार आई ।
आयुष्यके अंत नाही राखे तिण वार है ॥
श्वांसखांसकुष्ट आदि देहीमें अनेक केई ।
सोलस प्रकार राज रोग अधिकार है ॥
संकट हरण भव दुखको मेटण जण ।
हीरालाल इम चींत्यो अनाथि अणगार हे ॥ ३ ॥
जोरे जीव ज्ञान नेन विवध विचार वेण ।
संसार समुद्रफेन भान केसो भलको ॥
लखचोरासि माहीं फंस्यो हे अनंत जाहीं ।

ऊंच नीच भयो जैसो चपलाको चलको ॥
बाप मरि पुत्र भयो पुत्रको पुत्र थयो ।
उलट पुलट जैसो नाटकको खलकौ ॥
हीरालाल कहे लीनो संजमसु शालिभद्र ।
तुरत त्यागन कियो नासिकासो मलको ॥ ४ ॥
एकंतभावना एका एकीहै चेतन मेरो ।
कोइ नहीं तेरो देख ज्ञान चित धरणो ॥
आवताहि एकाएकी जावत हे एकाएकी ।
आगम गमन सो तो करमाको करनो ॥
आपही संचित कर्म भोगत्त है आपो आपी ।
सुख दुःख निजकृत आपको उधरणो ॥
कहे हीरालाल नमिराज भये ऋषिराज ।
एकंत विराजीकाज संजमको सरणो. ॥ ५ ॥
जैसे निश वासकाज पंखि तरूरया राज ।
तैसो परिवार मिल्यो जीवबहु भांत है ॥

कोइ तो नर्क कोइ श्वर्ग आगम गम ।
कोइ तीरीयंच कोइ मनुष्यमे जात है ॥
देहने चैतन्य भेय ताको पण रहे नेह ।
चय उपचय जेय पुदगलके साथ है ॥
हीरालाल कहे एसी मृगापुत्र महाऋषि ।
जातीस्मर्ण ज्ञानवसी फेर नही डिगत है ॥ ६ ॥
असुची या तन सुची मानत मुरख जन ।
करत जतन खिन२ जोय खटको ॥
जबतक देतसाज तबतक करे काज ।
तानमान रंगराग करे नृत लटको ॥
ऊपर चर्म भूंमढक्यो हे अंतर धर्म ।
विनाहि चैतन्य कहे एकंतमे पटको ॥
कहे हीरालाल एसी सनंतकुँवार चक्री ।
तुरत त्यागन करी राज षटखंडकोः ॥ ७ ॥
तन है तलाव जामे आश्रब द्वार पंच ।

आवत करम संच जासे भारी होत है ॥
मिथ्यात्व अव्रत प्रमादने कषाय करी ।
अशुभ अधवसाय करमाको सोत है ॥
हिंसाझूंठ आदि विस बोल कह्या आश्रव ।
ताको जो परहरे कर्म मलधोत है ॥
कहे हीरालाल ऐसी समुद्रपाल महा ऋषि ।
भाइ हे भावना जैसी पाया धर्म जोतहै ॥ ८ ॥
समकित आदि बीस बोलको सुलट किया ।
संवर कोठाम जीयां कर्मकोन्यावहै ॥
रोकदियो आश्रव संमर भावना कर ।
पाप सब परहर संवुडा केवावे है ॥
जैसे नीरनाव मार्हीं रोकदियो आवेताही ।
जैसे वासुदेव दल अरिको नसावे है ॥
हीरालाल कहे केशि मुनि वंद्या सुख लहे ।
चरण सरण गहे ऊंचिगत जावे है ॥ ९ ॥

अकाम सकाम दोइ निर्जराका भेद योही ।
त्रीयंच मनुष्य माहीं सह्या दुःख भारी है ॥
मन बिना सहे दुःख परवसे मरे भुख ।
तोहि मिल जाय सुख सुरपद धारीहै ॥
अनसण आदि द्वादस भेदे तप करे ।
ज्ञान सहित काजसरे जांकी रीति न्यारी है ॥
कहे हीरालाल तप करके निहाल लाल ।
एसी करतुत जाल अर्जुन मारी है ॥ १० ॥
लोक माहि एक जिन धर्म है जहाज जाण ।
तारण तिरण काज भवजीव दासत्ता ॥
चिंतामणी कामधेनु कल्पवृक्ष मातु तेनु ।
वंछित सुखारो देनु राखे शुद्ध आसत्ता ॥
जिनवर दिनकर मिथ्यात तिमर हर ।
केवल ज्ञानधर धर्मका भासत्ता ॥
हीरालाल कहे धर्मरूची जिने धर्म रूच्यो ।

दया पाली तोडिया कर्म पाया सुख सास्वता॥११॥
सात राजू माहीं ऊर्ध लोक अधो सात राजू।
मध्य एक राजद्वीप समुद्र असंख्य है॥
कल्पग्रीवेग पंच अनुत्तर सुरवर।
सिद्ध ठाम सवपर स्वरूप अलख है॥
व्यंतर भुवनपती सुख देख रह्या अती।
सातोंही नरकगती महा दुःख रंक है॥
पट द्रव्य रूप लोक लख्यो शिवराज जोग।
हीरालाल कहे जिन वचन निशंक है॥ १२॥
बोध बीज दुर्लभ सुलभ सुर नर रिद्ध।
कारज सर्व सिद्ध आत्म स्वरूप है॥
शुद्ध ज्ञान समकित चारित्र है यथातथ्य।
मिथ्यात भरम चित तिमर निरूप है॥
किजीये जतन पायो रतन अमोल हाथ।
पर वचनाके साथ पालिये परूप है॥

अठाणूं युत प्रति बोध दियो एक सुत ।
हीरालाल कहे सिद्ध स्वरूप निरूप है ॥ १३ ॥

॥ गुरू महाराज श्री रत्नचंद्रजीके गुणग्राम—सवैया ॥

संवत्त अठारेसौ अठोतर साल माहीं ।
माघ वदि सातमीको वार मंगलवार है ॥
कनजेडो गाम ठाम पिता दयाचंदजी नाम ।
ताके पुत्र अभिराम रत्नचंदजी अवतार है ॥
उगाणिसौ चवदामें जेष्ट सुदि पंचमिको ।
सरवाण्या गाम माहीं लीधो संजम भार है ॥
सालाने बेनोही दोइ संग मिल्या सुखहोई ।
जिन धर्म साचो जोइ कीधो जयजयकार है ॥१॥
समत्त उगणीसो पचासके साल माहीं ।
द्वितिया असाढ वदी बीज सुक्कवार है ॥
रजानिके काल माहीं आयुष्य पूरण करी ।

आलोइ निंदीयकर गया खेवापार है ॥
पैंतीस वर्ष लग पाल्यो है संजम भार ।
बहोतर वर्ष सव आयुष्य विचार है ॥
कहे हिरालाल घणो कियो उपगार जाण ।
शिष्यको भणायो ज्ञान ध्यानका भंडार है ॥ २ ॥

॥ उपदेशी छप्पय छंद ॥

कियो रूप नरसिंहं, द्वारके मुले आयो ।
महितल मारी लात, नादे अंमर गजायो ॥
धरणी भइ धडधडाट, थरहर धूजण लागा ।
गढमढ मंदिर कोट, घडडड पडिया भागा ॥
देख अतुल्य बल खलबल्यो, मन विचार इसडो कियो।
हीरालाल कहे नृपपदमने, सरण सतिकोजायलियो॥१॥
फिरे नंदीको पुर, फिरे सुरो रण चढियो ।
फिरे मेघ पदल, फिरे गजमदको जडियो ॥

फिरे सुर्यको घाम, फिरे चंदाकी छांया।
फिरे ऋतु बिन वृक्ष, फिरे सुख पायां काया ॥
वयवालि वनीता फिरे, फीरे सिंघ अगनी सेडरे।
हीरालालकहेएसोपुरूषकावचनअचलकभीनाफिरे.२

बचन काज श्री हरिश्चंद, राजको छोडि आयो।
बचन काज श्रीरामचंद्र, बनवास सिधायो ॥
बचन काज श्री लंकापति, राज भबीषणको दीनो।
बचन काज श्रीकृष्ण, धावो धात्री खंड कीनो ॥
बचन हार मानव बुरे, निपटनी होवे लाज ।
हीरालाल कहे बचने बंध्या तुरत सुधारे काज ॥३॥

बचने होवे मिलाप, बचने वैर मिटावे।
बचने बधे दोलत, वचने अमृतरस पावे ॥
बचने पामे राज, बचने विद्या बल आवे।
वचने शीतल होय, बचने वैराग उपावे ॥
रोग सोग वचने मिटे, गुरु मावित बचने रीजिये।

हीरालाल कहे रस वचनको, बुद्धिवंत नर पीजिये.४
अधिक मात ओर तात, अधिक सुत नार स्नेही।
अधिक बंधु परिवार, अधिक सज्जन जन केही॥
अधिक राजको ठाट, पाट पितांमवर गहना।
अधिक माल रसाल, अधिक मुख अमृत वयना॥
अधिक पद भूपत भयो, अधिक रुप रमणी गणो।
हीरालाल कहे इस जक्तमें, अधिक धर्म जिनवर तणो.५
अधिक ज्ञान गुण ध्यान, अधिक तप संजम सूरा।
अधिक सील संतोप, अधिक प्राक्रम पूरा॥
अधिक दया उपदेश, अधिक मुख अमृत वाणी।
अधिक किंयो उपगार, अधिक जीव यतना जाणी॥
अधिक धिरज धरणी धरा, अधिक तेज दिवाकर जसो।
हीरालाल कहे मुनीराजको, अधिक शीतल चंदा असो६

॥ इति संपूर्णम्॥

॥ पद—श्राविका गुण ॥

॥ तरकारी लेलो मालनियां
आई बिकानेरकी—यह देशी ॥

जी म्हारी बंदना झेलो मैं छूं
श्राविका सुंदर शहरकी ॥ टेर ॥

बांध मुपती करूं समाइक,
राखूं पूंजनी आछी ।
प्रतिक्रमणो बे बिरियां करती,
तो मैं श्राविका सांची ॥ जी म्हारी ॥ १ ॥

बास वरत मैं करूं तपस्या,
नहीं करणीमें काची ।
पक्खी पर्वका पोषा करती,
तो मैं श्राविका सांची ॥ जी म्हारी ॥ २ ॥

भाणे बैठी भाऊं भावना,
सांची दिलमें राची ।

स्थानक जाऊं वेगी ऊठने,
तो मैं श्राविका सांची ॥ जी म्हारी ॥३॥
देव गुरुकी करी ओलखना,
धारिया जांची जांची ।
हिंसा धर्मके संग न जाऊं,
तो मैं श्राविका सांची ॥ जी म्हारी ॥ ४ ॥
'हीरालाल' कहे एवी श्राविका,
भणी गुणी पुस्तक वांची ।
विनयवंत गुणवंत कहावे,
सोही श्राविका सांची ॥ जी म्हारी ॥ ५ ॥

॥ कान्फंस वर्णन–ठुमरी. ॥

कान्फंस महारानी सुंदर, क्या हुकम फरमावती है रे॥
भला क्या क्या हुकम फरमावती है रे ॥ कान्फंस॥टेर॥
देशदेशके धार्मिक भाया। उनका मेलमिलावती है रे॥

भला; उनका ॥ कान्फ्रंस ॥ १ ॥

प्रातिक प्रांतिक भेज उपदेशक। जयविजय करावती
है रे ॥ भला; जय ॥ कान्फ्रंस ॥२॥

कूकू रिवाज आज तक केइ। उनको दूर हटावती है रे॥
भला; उनको ॥ कान्फ्रंस ॥ ३ ॥

संपतीकरनीविपतीकीहरनीधर्मीकोराजदिलावती है रे
भला, धर्मी ॥ कान्फ्रंस ॥ ४ ॥

जीव दयाका प्रबंध रचावत। सब संघसे भक्ति
बढावती है रे॥ भला सब कान्फ्रंस ॥ ५ ॥

कान्फ्रंस कानून बतावत। लोकिक सुधार करावतीहै रे
भला, लोकिक ॥ कान्फ्रंस ॥ ६ ॥

पुज्य श्री लालजी गुरु जवाहर लालजी, 'हीरालाल
सुमती युगावती हैरे॥भला हीरालाल॥कान्फ्रन्स॥७॥

॥ इति श्री जैन सुबोध रत्नावली समाप्तम् ॥